पराविज्ञान

साधना और सिद्धियाँ



तांत्रिक बहल

पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ

भूत-प्रेत का अस्तित्व, विवाद और व्यापक चर्चा का विषय है। यह न केवल मनोवैज्ञानिक रूप से होते हैं वरन् अनेकों घटनायें इनके अस्तित्व का प्रमाण हैं। इनका एक आकार (स्वरूप) भी होता है जिनसे सम्पर्क का विधान परविज्ञान में प्रचुरता से पाया जाता है। इनके उत्पातों को शान्त कर; इनको वशीभूत करके भरपूर लाभ भी उठाया जा सकता है और ये मानसिक साधना द्वारा होता है जिस की साधना और सिद्धियों के उपाय इस पुस्तक में दिए गए हैं।

□□

परा विज्ञान

की

साधना और सिद्धियाँ

भूत-प्रेत, सर्प, उल्लू, अप्सरा, परी, डाकिनी, शाकिनी, यक्षिणी, भैरव, बैताल, और श्मशान साधना और सिद्धि।

लेखक :
तांत्रिक बहल

मूल्य : २०.००

प्रकाशक :
रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

प्रकाशक :

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)

रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे

हरिद्वार (उ० प्र०)

फोन : ६२६७ निवास : ६१९५

लेखक : तांत्रिक बहल

संस्करण : प्रथम १९९०

मूल्य : बीस रुपये

मुद्रक :

सुरेन्द्र प्रिंटर्स

विश्वास नगर, दिल्ली-३२

मुख्य वितरक :

१. पुस्तक संसार, बड़ा बाजार, हरिद्वार

२. पुस्तक संसार, नुमाइश का मैदान, जम्मू

३. गगनदीप पुस्तक भण्डार, एस. एन. नगर, हरिद्वार

समर्पण

उन अघोरियों, अवधूतों, सिद्ध महात्माओं को जो अपनी-अपनी महासाधनाओं में लीन हैं और जिनका सहयोग मैंने इस पुस्तक की रचना में लिया लिया है। विशेष रूप से उन साधकों को पुनः प्रणाम जिनसे एक बार मिलने के बाद दुबारा लाख कोशिश करने पर भी उन्हें न खोज सका।

तांत्रिक बहल

अनुक्रमणिका

दो शब्द

'भूत-प्रेत' ऐसा शब्द है, जिसे बच्चे बूढ़े, जवान, शिक्षित, अशिक्षित सभी समझते हैं। सारी दुनिया के लोग इस शब्द से भली-भाँति परिचित हैं। विज्ञान इससे सहमत भी है और असहमत भी। इसके बावजूद इनको हवा में उड़ा दिया जाता है। बात ऐसी नहीं है। इनका कहीं न कहीं अस्तित्व अवश्य है, जो केवल कठोर मानसिक साधना के द्वारा ही दृष्टिगोचर हो सकता है। वास्तव में मानसिक साधना का ही दूसरा नाम 'सिद्धि' है।

आज भी यह सिद्धि आस्था और अनास्था के बीच झूल रही है। इसी सिद्धि और साधना का मार्गदर्शन करने हेतु इस को प्रस्तुत किया जा रहा है। भूत-प्रेत न केवल मानसिक रूप में हैं, वरन् एक आकारीय रूप में भी हैं। इसका ज्ञान केवल मानसिक साधना के द्वारा ही हो सकता है और इनके उत्पातों को शान्त कर इनको वशीभूत कर इनसे अनेक प्रकार का लाभ भी उठाया जा सकता है। इसके लिये आपको श्रद्धा, विश्वास एकाग्रता और लगन उत्पन्न करनी होगी। इनके अभाव में इनकी सिद्धि असम्भव है।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र हमारी पवित्र धरोहर के रूप में लाखों वर्षों से चले आ रहे हैं और पाठक व साधक इस विज्ञान सम्मत क्रिया से पर्याप्त लाभ भी उठा रहे हैं। मनुष्य का मस्तिष्क सदा से उर्वर रहा है, वह निरन्तर शोध करता रहा है और बराबर खोज कर रहा है। तंत्र-मंत्र-यंत्र भी इसका अपवाद नहीं है, उसमें भी लगातार खोज हो रही है और वही खोज हमारे विद्वान लेखों, पुस्तकों के रूप में तंत्र-मंत्र प्रेमियों के सामने रख रहे हैं।

मैं जानता हूं आप सबमें श्रद्धा, विश्वास और लगन है, लेकिन इसे अभी और बढ़ाने की आवश्यकता है। आप किसी भी साधना के लिए शीघ्रता न करें। आपकी एक साधारण-सी भूल आपका सारा श्रम चौपट कर सकती है। पुस्तक में दिया गया विवरण अच्छी प्रकार से पढ़ें, भली प्रकार समझ लें, इसके बाद ही सावधानी पूर्वक उनका प्रयोग करें।

इस पुस्तक के लेखन में मैंने शहरों, बस्तियों से दूर एकांत में, जंगलों, बीहड़ों, कन्दराओं में अपनी महासाधनाओं में लीन सिद्ध-महात्माओं, अघोरियों से सहयोग लिया है। उनका एकांत तपोनिष्ठ, घुमक्कड़ जीवन सदा से ही मेरे लिए आदर्श रहा है और आज भी हैं। विधि की यह कैसी विडम्बना है, जिस अघोरी, अवधूत से मैं एक बार मिल लिया वह मुझे लाख खोजने पर भी दुबारा नहीं मिला। कैसे विचित्र होते हैं यह सिद्ध पुरुष ?

अन्त में जैसा कि प्रायः होता है, हर व्यक्ति अपनी प्रेरणा सहयोगिनी का आभार प्रकट करता है। मैं भी अपनी प्रेरणा, सहयोगिनी एवं धर्मपत्नी श्रीमती शीला बहल का आभारी हूं, जिनकी प्रेरणा और सेवा से मैं यह पुस्तक सम्पूर्ण कर सका।

मेरी यह कृति कैसी बन पड़ी है। आपके अनुभव क्या हैं ? कृपया मुझे सूचित करके मेरा उत्साह अवश्य बढ़ायें। आभारी रहूंगा।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है, मेरा यह छोटा-सा विनम्र प्रयास पराविज्ञान के जिज्ञासु पाठकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा, अगर ऐसा हुआ तो मैं अपना प्रयास सार्थक मानूँगा।

तांत्रिक बहल

डी-४ राधापुरी, कृष्णनगर
(जमुनापार) देहली-११००५१

भूत-प्रेत : वैज्ञानिक विश्लेषण

मृत्यु और जीवन का विस्तृत विवेचन करने वाली गीता विश्व का सबसे प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक ग्रन्थ माना गया है। यह महाभारत का ही एक अंश है। कब महाभारत हुई ? कब महाभारत के अंतर्गत गीता का लेखन हुआ, यह सब विवादास्पद है। पर हजारों वर्ष पूर्व की बात अवश्य प्रमाणित होती है। गीता की मूल रचना संस्कृत में हुई। संस्कृत कैसी समृद्ध उन्नत भाषा थी। कब उसका विकास हुआ और कितने समय तक उसका एकछत्र प्रचलन रहा ? इसका इतिहास तो महाभारत से भी पीछे जाता है।

आशय यह है कि हजारों साल पहले ही देश के तपस्वियों ने "आत्मा" का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनके मतानुसार आत्मा अजर, अमर, अदृश्य, अकाट्य है। मृत्यु केवल परिवेश (चोला) परिवर्तन हैं अर्थात मृत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व हजारों साल पहले ही यहाँ के तपस्वीगण स्वीकार कर चुके थे। आज भी इस पर बहस है कि क्या मृत्यु के बाद भी जीवन है ? इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है। कारण कि यह जिज्ञासा हर एक में एकदम स्वाभाविक है कि मरने के बाद आखिर होता क्या है ? मृत्यु अनिवार्य है। प्रत्येक जीव-जन्तु सजीव या निर्जीव (अचल-स्थिर) की मृत्यु अनिवार्य है। कछुआ सैकड़ों साल जीता है। सर्प हजारों साल, पेड़-पौधे अपनी-अपनी किस्म के अनुसार, पहाड़ घाटियाँ, नदियाँ लाखों

वर्ष के बाद समाप्त हो दूसरा रूप धारण करती हैं। कुछ जीवों का जीवन दो-चार क्षणों का ही होता है। सबका अपना एक निश्‍चित समय है। आशय यह है कि मृत्यु सबकी अनिवार्य है। कुछ अपवाद अवश्य हैं। हिमालय करोड़ों वर्षों से खड़ा है और प्रयागराज का अक्षयवट पृथ्वी के उद्‌गम समय से है। इनकी आयु का ही पता नहीं। जो हो मृत्यु तय है, पर उसके बाद क्या होता है ?

आत्मा अजर, अमर, अकाट्य है। शरीर छोड़कर (मृत्यु होने पर) वह कहाँ चली जाती है ? क्या होता है ? काफी गहन छानबीन के बाद भी वैज्ञानिक इन प्रश्‍नों का उत्तर नहीं पा सके हैं। आत्मा क्या है ? कैसी है ? कुछ पता नहीं चल पा रहा है गीता में जिस प्रकार का वर्णन किया गया है, शायद वैसी ही है।

उसके रूप-रंग, आकार-प्रकार, वजन, गति, क्रिया-कलाप आदि का कोई भी प्रमाण न होने के बावजूद इस "आत्मा" का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है। आत्मा का अस्तित्व सभी दृष्टिकोण से प्रमाणित है। आत्माओं के अस्तित्व का सबसे सबल प्रमाण पुनर्जन्म है। पुनर्जन्म के प्रमाण सैकड़ों हैं। यह प्रमाण आत्मा का अस्तित्व प्रामाणित करते हैं। पुनर्जन्म की घटनाओं पर काफी, अनुसंधान किया जा चुका है और जब भी कोई ऐसी रोमांचक घटना होती है, तो विश्‍व के जाने-माने परामनोवैज्ञानिक अनुसंधान पुनर्जन्म को प्रमाणित करते हैं। तिब्बती लामा तो अपने अस्तित्व से ही पुनर्जन्म मानते आये हैं। जब भी उनका गुरु (दलाई लामा) मृत्यु को प्राप्त होता है। वह उसकी खोज प्रारम्भ कर देते हैं कि कहाँ उसने जन्म लिया है। इसका पता लामा गण बड़ी ही विचित्र विधि

से करते हैं। पहले तो वह दलाई लामा के मरने पर दिशा का ज्ञान करते हैं। यह कार्य वह अपने हस्तलिखित धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर करते हैं। दिशा ज्ञान होने पर वह उस दिशा की ओर निकलते हैं। इसके लिये भी वह एक निश्चित दिन और समय चुनते हैं। इसके बाद वह उस समय में जन्मे शिशुओं की तलाश करते हैं, जब लामा गुरु ने प्राण त्यागे होते हैं। इस मुहूर्त में जन्मे शिशुओं का वह सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं। मुखाकृति और हाव-भाव देखते हैं। इस प्रकार केवल कुछ ही शिशु रह जाते हैं, जिनमें से वह अपने गुरु को खोजते हैं। इस प्रकार चुने गये शिशुओं के आगे (एक-एक शिशु करके) वह मृत लामा गुरु की पवित्र वस्तुएँ रख देते हैं और देखते हैं कि शिशु पहले किस वस्तु को उठाता है। माला सबसे पहले उठाने वाला शिशु ही उनके गुरु का पुनर्जन्म होता है। माला को उठाकर श्रद्धा से देखने वाले वालक को ले आते हैं। इस प्रकार लामाओं का अपना सिद्धान्त है और वह प्राचीन काल से ही इस सिद्धान्त पर अमल करते आये हैं।

जब पुनर्जन्म है तो अवश्य ही मृत्यु के बाद जीवन है। जीवन है तभी तो वह आत्मा फिर नया शरीर धारण करती है। बिना जीवन के यह संभव नहीं है। अब प्रश्न यह है कि मृत्यु के बाद और पुनर्जन्म लेने के बीच का जो समय है, जीवन है, वह क्या है ? कैसा है ? इस पर अभी सी रहस्य का पर्दा पड़ा है।

पुनर्जन्म की सुप्रसिद्ध घटना गुप्त संचारक कं. (प्रा. लि.) मथुरा (उ. प्र.) की है। यह औषधि निर्माण करने वाली एक प्रमुख कम्पनी है। इसके संचालक की छुरा मारकर हत्या कर दी गई। चार साल बाद एक वालक ने स्वयं को इस कम्पनी

का मालिक बतलाना शुरू कर दिया। उसने पूर्व जन्म की सारी कथा सुना दी। मथुरा आकर सब कुछ पहचान लिया। उसके शरीर पर जन्मजात छुरे के घाव के चिन्ह थे। ठीक वहीं जहाँ उसको छुरा मारा गया था। पुनर्जन्म का यह अत्यंत प्रामाणिक मामला था। वह बालक यह न बतला सका कि मरने के बाद कहाँ रहा और कैसे आया ? इसी प्रकार कानपुर के एक डाक्टर ने अपनी पत्नी की हत्या कर उसको सन्दूक में बन्द करके रेल से बाहर फेंक दिया। दुर्भाग्य से सन्दूक पुल के रेलिंग पर अटक गया। नदी में जाकर न गिरा। लाश पुलिस के हाथों पड़ गयी। डाक्टर पकड़ा गया। मुकदमा चला। सर्वोच्च न्यायालय तक मुकदमा गया। काफी समय लग गया। इसी मध्य एक लड़की ने जन्म लेकर अपनी राम कहानी सुनानी शुरू कर दी कि किस प्रकार उसे मारकर सन्दूक में बन्द कर फेंका गया। उसने अपने शरीर के चिन्ह भी दिखलाये। इसी आधार पर डाक्टर को सजा हो गयी।

यह घटना पुनर्जन्म का सबसे प्रबल प्रमाण है। आशय यह कि पुनर्जन्म "प्रमाणित" है। सभी प्राणी मरने के बाद जन्म लेते हैं, पर पता करोड़ों, लाखों में एक-दो का लग पाता है। इसका अपना कारण और सिद्धान्त है। इसकी व्याख्या हिन्दु धर्म में भली-भांति की गई है। संसार में कुल ८४ लाख जीव योनियां चींटी से लेकर हाथी तक बतलायी गई हैं। और प्रत्येक जीव अपने-अपने कर्मानुसार और अपने जीवन की अंतिम क्रिया स्वरूप (वासना) पुनर्जन्म ग्रहण करता है। अतएव यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्य योनि में ही उसका जन्म हो। मनुष्य जीवों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस कारण हिन्दू धर्म में कहा गया है कि मनुष्य जन्म बड़े पुण्य और तपस्या से

मिलता है। इस कारण प्रत्येक मरने वाला मनुष्य पुनः मनुष्य योनि में ही जन्म ले, यह नियम बनता नहीं है। लामा गुरु अपने-कर्मों के कारण पुनः मनुष्य रूप लेते हैं। अतएव उनको खोज लिया जाता है। दूसरे किस योनि में पड़ते हैं, क्या पता···? पर यह निश्चित है कि पुनर्जन्म होता है। यही पुनर्जन्म इस बात को प्रमाणित करता है कि मृत्यु के बाद जीवन है। मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच का समय विवादास्पद है, पर कुछ न कुछ जीवन तो है।

मृत्यु और जीवन के मध्य जो अवकाश है वह अन्य कुछ भी हो सकता है, पर अवकाश के वह क्षण भूत-प्रेत योनि में भी व्यतीत होते हैं। यह सत्य है। इस बात के अनेक प्रमाण समय-समय पर प्राप्त हुए हैं, हमारे परावैज्ञानिकों ने इस पर काफी शोध किया है।

पुनर्जन्म के सम्बन्ध में एक तथ्य यह है कि जातक जब तक अबोध रहता है, तब तक उसे अपना पूर्व जन्म का लगभग सारा ज्ञान हो जाता है। पर संसार के सम्पर्क में आते ही चेतना ज्ञान बढ़ते ही वह सब कुछ भूल जाता है। नवजात शिशु की मुद्राएँ भी बड़ी आश्चर्यजनक हैं। किसी भी निद्रामग्न नवजात शिशु (जब तक वह केवल माँ का दूध पीता है, केवल तब तक) का चेहरा देखो। रोता, हंसता, मुस्कुराता दिखलाई पड़ेगा। उसके मासूम चेहरे पर एक के बाद एक नाना प्रकार के भाव आते-जाते स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ेंगे। वह चौंकता, घबराता भी दीखेगा, पर जैसे ही वह सांसारिक अन्न जल ग्रहण करने लगता है, उसके सारे हाव-भाव लुप्त हो जाया करते हैं। लगता है वह अपने पूर्वजन्म के दुख-सुख का स्मरण कर हँसता-रोता है। साँसारिक सम्पर्क (अन्नप्राशन) होते ही

अपने पूर्व जन्म की स्मृतियों से वह मुक्त हो जाता है। करोड़ों, लाखों में से कोई दो-एक याद रख पाते हैं।

आत्मा का अपना अस्तित्व है। वह अपना शरीर (चोला) बदलती रहती है।

शरीर बदलने का यह क्रम भारतीय संस्कृति में कर्मानुसार माना गया है। आश्चर्य की बात यह है कि हजारों-लाखों साल पहले ही भारतीय चिंतकों ने "आत्मा" का अस्तित्व स्वीकार कर लिया था और पुनर्जन्म की रहस्यमयी प्रक्रिया को भी जान लिया था। अवतारवाद भी हो तो पुनर्जन्म का एक रूप धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिये विष्णु के अनेक प्रकार के अवतार एक प्रकार से पुनर्जन्म की ही पुष्टि करते हैं।

प्रत्येक दृष्टिकोण से यह प्रमाणित है कि आत्मा अमर है। प्रत्येक जीव की आत्मा शरीर के जर्जर होने पर उससे निकल कर दूसरे (शरीर) में प्रवेश कर जाती है। इसी प्रक्रिया को पुनर्जन्म कहा गया है। सृष्टि में यह सनातन प्रक्रिया अहर्निश चल रही है। प्रतिक्षण जन्म-मरण शरीर परिवर्तन का चक्र गतिशील है। सबसे रहस्यमय बात यह है कि जब आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाती है, तो दूसरा शरीर धारण करने से पूर्व अर्थात मृत्यु के तत्काल बाद का जीवन या प्रक्रिया क्या है? मरने के बाद और जन्म से पहले की दुनिया कैसी है? कितनी (समय) है? क्या आत्मा शरीर त्याग करते ही दूसरे शरीर में चली जाती है या फिर उसमें कुछ समय लगता है? समय लगता है तो कितना और उस समय उसका दौर दौरा कैसा रहता है? मृत्यु के बाद जीवन के यही रहस्यमय प्रश्न हैं।

भारतीय आध्यात्म के अनुसार प्रत्येक "आत्मा" को एक निश्चित दौर से गुजरना पड़ता है। इसीलिए स्वर्ग और नर्क का वर्णन सर्वत्र भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। भारतीय अध्यात्म के सात प्रकार के नर्क बतलाये गये हैं। "गरुड़ पुराण" में इनका विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। कुछ चित्रों में भी कर्म का फल दिखलाया गया है। मरने के बाद सजा भोगनी ही पड़ती है। लगभग यही कारण संसार के सभी धर्मग्रन्थों में ही कोई भी धर्म या जाति हो उसमें स्वर्ग-नर्क, जन्नत-दोज़ख हेल और हेवन का उल्लेख अवश्य है।

क्या वास्तव में स्वर्ग-नर्क है ? क्या वास्तव में आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगने के बाद कर्मानुसार योनि में जाना पड़ता है ? यह एक रहस्यमय गूढ़ प्रश्न है एक और स्थिति मृत्यु के बाद की है। वह यमराज की है। प्रत्येक व्यक्ति (जीव) को लेने यमराज के दूत आते हैं। यमराज का यह अस्तित्व संसार के सभी धार्मिक ग्रन्थों में किसी न किसी रूप में मिलता है। यमदूत मनुष्य के "प्राण" हरण करते हैं। यह एक ऐसा विश्वास है, जो संसार की सभी जातियों में पाया जाता है।

क्या सचमुच ऐसा कुछ है ? यह ऐसा प्रश्न है, जो आज तक प्रमाणित नहीं हो सका है। इस प्रश्न का उत्तर सोचने से पहले परमावश्यक है कि कुछ बातों का स्पष्टीकरण कर दिया जाये।

आज विज्ञान इतना आगे बढ़ गया है कि मानव शरीर के रोम-रोम का उसे ज्ञान है कि क्या कहाँ है ? इसी आधार पर शल्य चिकित्सा (सर्जरी) के एक से एक चमत्कार सामने आ

रहे हैं। इतना सब ज्ञान प्राप्त कर लेने के बावजूद यह विज्ञान "आत्मा" के अस्तित्व को प्रमाणित रूप से नहीं पकड़ पाया है कि यह कहाँ है ? विज्ञान यह नहीं कह सकता है देखो, यह आत्मा है। उसका रूप, रंग, आकार-प्रकार, वजन, नाप-तौल आदि बतला सके। विज्ञान इतना अवश्य स्वीकार करता है कि मनुष्य में कुछ है और वह "कुछ" उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद निकल जाता है।

यह (कुछ) क्या है ? विज्ञान आज तक नहीं पकड़ पाया है। जबकि यह "कुछ' मानव शरीर के लिए सब कुछ है। शरीर रचना में वर्णन मिलता है कि अमुक अमुक है, पर जीव, आत्मा, प्राण का कोई वर्णन नहीं है। जीव, प्राण आत्मा शरीर में कहाँ हैं ? न उनका आकार है, न प्रकार।

एक उलझन और भी है।

जीव, आत्मा, प्राण। यह तीन शब्द बार-बार संसार के सभी आध्यात्मिक ग्रंथों, धर्मों में मिलते हैं। यह तीनों क्या एक हैं ?

"आत्मा" की परिभाषा धार्मिक ग्रंथों में है। उसके अनुसार वह निर्मल, निष्कलंक, शुद्ध मानी गयी है। आत्मा को ही परमात्मा माना गया है। परमात्मा को पिता स्वरूप माना गया है। अतएव मनुष्य के समस्त कर्मों का फल "आत्मा" भोगती है। यह गलत है। कर्मों का फल आत्मा नहीं भोगती। तब कौन भोगता है ? जीव। इस व्याख्या से स्पष्ट है कि आत्मा अलग है, जीव अलग है। प्राण, जीव को हम एक नहीं समझ सकते हैं। यह तीनों तत्व अलग-अलग हैं। यह तीनों तत्व मनुष्य के शरीर में हैं।

"प्राण" का अर्थ है, मनुष्य की वायु क्रिया और शरीर का संचालन। प्राण शरीर को गतिशील रखता है, इसी कारण प्राण निकल जाते हैं, तो शरीर निश्चेष्ट निश्चल हो जाता है और उसका अंतिम संस्कार कर दिया जाता है। और अगर न किया जाये तो पार्थिव शरीर बदबू मारने लगता है। आम बोलचाल भाषा में कहा भी जाता है—प्राण छूट गये।

"जीव" कुछ अलग ही तत्व है। इसी तत्व को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। इसी के लिए स्वर्ग-नर्क बनाया गया है। प्राण एक क्रिया है, जो शरीर जर्जर होते ही मिट जाता है। जीव प्राणी का अपना है, इसे ही स्वर्ग-नर्क देखना पड़ता है।

"आत्मा" उनके साथ सम्बद्ध है, पर निष्प्रभावित रहती है। जिस प्रकार सूक्ष्म कण में—और+और प्रोट्रोन रहते हैं उसी प्रकार जीव और आत्मा संयुक्त हैं। अब इनमें कौन न्यूट्रान और कौन प्रोट्रान अर्थात कौन-और है, कहना कठिन है। जीवन आत्मा संयुक्त है। जीव फल भोगता है आत्मा निर्विकार अप्रभावित रूप से संयुक्त रहती है। आत्मा को हवा में ठंडक, धूप में गर्मी की तरह केवल अनुभव किया जा सकता है, देख पाना सम्भव नहीं है।

मृत्यु के बाद का जीवन कैसा है ? इसको जानने के लिए वैज्ञानिकों, परामनोवैज्ञानिकों ने कोई कसर बाकी नहीं रखी है। प्रत्येक सम्भव उपाय अपनाये हैं। हमारे परावैज्ञानिक (तांत्रिक) भूत-प्रेत, चुड़ैल राक्षस जैसी वायवी हलचलों के पीछे आत्मा को मानते हैं। वह इसे आत्मा का छोटा-सा करिश्मा कहते हैं।

इस संसार में चमत्कार भी कम नहीं होते हैं। कुछ चमत्कार तो वैज्ञानिकों को भी आश्चर्य में डाल देते हैं। इस संसार में "असंभव" जैसा कुछ नहीं है। अनेक घटनाएँ इस प्रकार की घट जाया करती हैं कि अमुक व्यक्ति मर गया। डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। उसकी अर्थी उठायी गयी। उसे श्मशान ले गये। चिता पर रखते ही उठकर बैठ गया। प्राण वापस आ गये। ऐसे लोगों से गहरी पूछताछ की गयी। सबके अलग-अलग कथन थे। कुछ ने कहा—कुछ पता नहीं। शायद मैं सो गया था। मैं गहरी नींद में था। कुछ नहीं जानता। उठकर बैठ गया। आशय यह है कि निष्कर्ष पूर्णतः प्रामाणिक नहीं है। यमराज, यमदूत, अदालत, स्वर्ग-नर्क भावना या हमारे अन्य संस्कारों का फल हो सकते हैं। मन में संस्कारों के कारण जग गया, इसी भावना के कारण जीव बेहोशी में यह सब देखता है। इस प्रकार की घटनाएँ प्रति हजार का ००.७ है। सबके अनुभव एक से एक विचित्र हैं। कोई समानता नहीं और कोई वैज्ञानिक आधार भी नहीं है।

जो भी हो, पर कुछ न कुछ हलचल, कुछ न कुछ क्रिया-कलाप अवश्य ही हैं। मृत्यु के बाद कुछ न कुछ अवश्य होता है। इसी "हलचल" का नाम जीवन है। अतएव यह सत्य प्रमाणित है कि मृत्यु के बाद जीवन है। यह क्या है ? कैसा है ? कहाँ है ? इस पर विवाद है, पर जीवन का अस्तित्व अवश्य ही है। इस पर सब एकमत हैं।

हमारे प्राचीन शास्त्रों ने भूत-प्रेत जैसी वायवी हलचलों को शाँत करने के लिए उन्हें गति देने के लिए अनेक प्रकार के विधि विधान बतलाये हैं। प्रस्तुत पुस्तक भूत-प्रेत सिद्धि का मूल उद्देश्य है वायवी हलचलों को शान्त करने या उनको

सिद्ध करने की प्रामाणिक विधियाँ बतलाना। हम अपने प्रयास में कितने सफल हैं, इसका निर्णय तो आप करेंगे।

भूत-प्रेत सिद्ध करने के लिए साधक का निडर, साहसी होना तो आवश्यक है ही, साथ ही उसे गुरु भक्त, निष्ठावान एवं श्रद्धायुक्त होना भी परम आवश्यक है।

क्या भूत-प्रेत होते हैं? क्या साधना के द्वारा इनकी सिद्धि संभव है? क्या इनका प्रत्यक्ष दर्शन भी संभव है? यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिस पर आज भी बहस जारी है। इन प्रश्नों के बहुत से धार्मिक एवं तन्त्र विज्ञान के आधार पर उत्तर उपलब्ध हैं, परन्तु दुनियाँ में ऐसे भी वैज्ञानिक हैं जिन्होंने इस विषय को ही अपना शोध का विषय बना लिया है। इनमें से कुछ हैं—बैल्कमौरे, सर कैनेडरिंग, सर रेमंड मूडी एवं सुसांन।

सन् १९७५ में नार्जिया के सर रेमंड मूडी ने अपनी चर्चित पुस्तक "लाइफ आफ्टर डैथ" में आपने काफी अनुभव लिखे हैं। सत्य तो यह है जिस प्रकार हिमालय से गंगा, सुख के साथ दुख, अंधेरे के साथ उजाला है, इसी प्रकार मृत्यु के पश्चात दूसरी दुनिया है। कुछ व्यक्ति दूसरी दुनिया में प्रवेश की बात करते हैं। लौटकर फिर वही प्रश्न आ जाता है—क्या वास्तव में कोई दूसरी दुनिया है? सर बैल्कमोरे का तो विश्वास है कि दूसरी (मृत्यु के बाद) की कल्पना व्यक्ति की पिछली जिंदगी के अनुभव और कल्पना पर आधारित है। यह व्यक्ति की अपनी स्वाभाविक इच्छा होती है कि एक सपनों की दुनिया में जाये।

सूसांन ने सन् १९८२ में अपनी पुस्तक 'बियांड द बॉडी' में इस गूढ़ विद्या के विषय में कटाक्ष करते हुए कहा है कि यह सिद्धान्त व्यक्तियों को बेतरह प्रभावित तो अवश्य कर सकते

हैं, पर इनके अनुभवों को नकारना और इन्हें भ्रम और काल्पनिक बतलाना एकदम उचित नहीं होगा।

मूल प्रश्न तो यह है कि मृत्यु के उपरान्त अनुभवों का आधार क्या है ? इनका वैज्ञानिक विवेचन कैसे किया जाये ? पराविद्या के अनुसार सूक्ष्म शरीर, चेतना का वाहन है जो स्थूल शरीर में निवास करती है। लेकिन अब यह प्रश्न उठता है कि यह सूक्ष्म शरीर किससे बना है ? यह बात तो समय के द्वारा प्रमाणित है कि स्थूल का निर्माण पाँच तत्वों (आकाश, जल, अग्नि, वायु और पृथ्वी) के संतुलित मिश्रण से हुआ है। सूक्ष्म शरीर को एक स्वरूप देना काफी मुश्किल काम है। हमारे यहाँ 'परकाया प्रवेश' की विद्या उपलब्ध अवश्य है, लेकिन सबसे बड़ी मुसीबत यह है, इसके जानकार कितने हैं ?

ब्रिटेन के केनक्टीकट विश्वविद्यालय ने इस दिशा में काफी उल्लेखनीय कार्य किया है। उस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सर केन्नेडरिंग ने लगभग ८०० व्यक्तियों से साक्षातकार करके उनके विचित्र अनुभवों को लिपिबद्ध किया है। उन्होंने मृत्यु को पाँच चरणों में बाँटा है—शांति, शरीर त्याग, अंधेरी लम्बी सुरंग में प्रवेश, दिव्य प्रकाश की अनुभूति, फिर उस प्रकाश में प्रवेश करना, जरा सोचें कहीं यह उस अनन्त यात्रा का अंश या अनुभव ही तो नहीं है ? जिसे हमारे ऋषि मुनि सदियों से बतलाते रहे हैं।

हमारे शास्त्रों, ऋषि मुनियों ने मृत्यु के बाद के संसार को कर्म, वासना और परिस्थितियों से जोड़ दिया है। इन्हीं के अनुसार जीव मृत्यु के उपरान्त का समय व्यतीत करता है। वह पुनर्जन्म, मोक्ष या भूत-प्रेत योनि को प्राप्त करता है। ऐसा

अनुभव होता है कि हमारी खोज सत्य के अधिक निकट है। हमारे पूर्वजों को इस विषय का भरपूर ज्ञान था।

अब स्थिति चाहे जो है—भूत-प्रेत होते अवश्य हैं। यह प्रमाणित तन्त्र-मन्त्र-यंत्र विज्ञान में इस विषय में काफी कुछ पाया गया है, जिसका सारा श्रेय हमारे पूर्वज विद्वानों को ही जाता है।

इस विषय पर जो भी साधनाएें मुझे समय समय पर अपने अनुभवों, घुमक्कड़ साधुओं, अघोरियों से प्राप्त हुईं, प्रस्तुत कर रहा हूं। इस तथ्य पर लगभग सभी एक मत थे कि इस साधना को निडर एवं बड़े दिलवाला ही सफलता पूर्वक सम्पन्न कर सकता है। योग्य गुरू, श्रद्धा-विश्वास, एकाग्रता और लम्बे समय की आवश्यकता भी अवश्य होगी। साधक वग यह बात भी ध्यान रखें।

———

भूत-प्रेत कैसे बनते हैं ? और क्या करते हैं ?

लगभग दो तीन दशक पूर्व तक पश्चिम कट्टर पंथी वैज्ञानिक भूत-प्रेत का अस्तित्व न मानते थे और न ही आत्मा का अस्तित्व स्वीकारते थे, क्योंकि कल्पना और तर्क से वह प्रभावित नहीं हैं और जब तक ठोस प्रमाण न मिलें तब तक स्वीकार करना उनका स्वभाव नहीं है। वैसे भूत-प्रेत का अस्तित्व मानव के जन्म के साथ-साथ चला आ रहा है। संसार का ऐसा कोई धर्म नहीं है, जिसमें भूत-प्रेतों का अस्तित्व न स्वीकारा गया हो और समय-समय पर इनके चमत्कारिक कारनामे सामने आते रहे हैं। विशेष रूप से भारतीय (सनातन) धर्म तो इनका अस्तित्व बड़े व्यापक रूप में स्वीकार करता आ रहा है। मृत्यु के बाद भी जीवन है। यह उद्घोष बार-बार हुआ है। गरुड़ पुराण में तो मृत्यु के बाद की सम्पूर्ण गतियों का विशद् विवेचन है। अत्यन्त प्राचीन ग्रंथ गीता में तो भगवान श्री कृष्ण ने "आत्मा" का रूप रंग और उसका जो विवरण दिया है, वह किसी भी भारतीय से छिपा नहीं है। तब भी कट्टर पंथी पश्चिम के वैज्ञानिक मानते न थे, पर अंतरिक्ष यात्राओं के मध्य हुए अनेक वैज्ञानिक उपकरणों के कारण और व्यापक शोध जाँच पड़ताल के उपरांत आत्मा का अस्तित्व, भूत-प्रेतों का अस्तित्व अब इन कट्टर पंथी वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। इन वैज्ञानिकों को सबसे अधिक पुनर्जन्म की घटनाओं ने बाध्य किया है। वह मान रहे हैं कि

मृत्यु के बाद भी जीवन है। पूर्वजन्म की स्मृतियाँ मनुष्य बटोरे रहता है। अतः इन वैज्ञानिकों ने इस सम्बन्ध की अनुसंधान प्रणाली को 'पराविज्ञान' का रूप दिया है। पश्चिम के अनेक देशों में "पराविज्ञान" की संस्थाएँ भी गठित हैं और वह इसी विषय पर लगातार अनुसंधान कर रही है।

पूर्वजन्म की घटनाएँ प्रत्येक प्राणी के साथ रहती हैं इसका प्रमाण नवजात शिशु स्वयं होता है। वाणी यन्त्र अविकसित होने के कारण वह अपने (अच्छे या बुरे) स्मरणों को कह नहीं पाता है। (शायद मन ही मन कहता हो) केवल उसके चेहरे से यह स्पष्ट होता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आप स्वयं देख सकते हैं। सुप्त शिशु के मुख का अवलोकन करें। कभी मुस्कराना, कभी मौन खिल-खिलाहट, कभी रोने लगना, कभी डर जाना। निद्रामग्न प्रत्येक शिशु इस प्रकार की विचित्र क्रियाएँ करता है। आखिर क्यों? भारतीय स्त्रियाँ बच्चे को बड़ा पवित्र मानती हैं। वह भगवान का रूप है। उनका कथन है कि शिशु का सीधा सम्पर्क भगवान से है। वह ईश्वर से बातें कर रहा है। उनकी यह कल्पना कहाँ तक सत्य है, यह तो ईश्वर ही जाने पर परामनोवैज्ञानिक इसका सीधा अर्थ पूर्वजन्म की स्मृतियों से जोड़ते हैं। प्रत्येक शिशु में अपने पूर्वजन्म की स्मृतियाँ रहती हैं। वाणी के अभाव में वह बोल नहीं पाता और जब तक वह बोलने लायक होता है, तो उस अवस्था तक वह सब मिट गयी होती हैं। उसके मस्तिष्क के टेप पर तब परिवार, माता-पिता द्वारा सिखायी कही बातें अंकित हो जाती हैं। पूर्वजन्म की स्मृतियों वाला 'टेप' तब तक 'वाश' हो जाता है और उस टेप पर नयी (वर्तमान) रिकार्डिंग हो जाती है, उसके तुतलाने बोलने की सारी क्रियाएँ बड़ी धीमी

गति से होती हैं। फिर जब वह "माँ" के दूध को बंद कर भोजन करने लगता है। (अन्न प्राशन के उपरांत) भोजन के सम्पूर्ण तत्व उसकी पूर्वजन्म की स्मृतियों को "वाश" (समाप्त) कर देते हैं। यही कारण है कि पूर्वजन्म के सब हाल ठीक-ठीक बतलाने वाला/वाली कुछ समय उपरांत सब भूल जाता/ जाती है। केवल विरले ही शिशु में पूर्वजन्म की स्मृतियाँ वाणी मुखर होने तक रहती हैं। कारण कि वह अत्यन्त तीव्र उत्तेजनात्मक रहती हैं। मिटाये नहीं मिटतीं तब तक। इस कारण वह सब बतला जाता है, जो अक्षरशः सही होता है। इस निष्कर्ष के कारण पराविज्ञान पूर्वजन्म स्वीकारती है और इसी आधार पर "आत्मा" कुछ है, उसका अस्तित्व है, यह भी स्वीकारती है।

आत्मा का यही अस्तित्व ही भूत-प्रेत के अस्तित्व का प्रमाण है।

गीता में बिल्कुल स्पष्ट कहा गया है कि आत्मा रंगहीन गंधहीन, अदृश्य, निराकार है। जिस प्रकार प्राणपद वायु (आक्सीजन) का अस्तित्व हम मानते हैं और रात दिन हर पल, हर घड़ी श्वास द्वारा ग्रहण करते हैं, जिसके कारण हमारे स्वास्थ्य शरीर अंग बराबर क्रियारत शरीर अंग बराबर क्रिया-रत रहते हैं, उसे हम भला देख पाते हैं। महसूस तक नहीं कर पाते। वायु में उसका मिश्रण इस प्रकार है कि हम उसका स्पर्श तक नहीं अनुभव करते, हालाँकि वह बराबर श्वास द्वारा हमारे शरीर में जा रही है। कुछ ऐसा ही "वायु" रूप आत्मा का है। उसका कोई आधार नहीं है। आकाश में जब सफेद बादल छाये हों तो क्या आपने कभी कुछ समय तक मौन भाव से उनको निहारा है ? निहार कर देखें तो कोई बादल का एक

टुकड़ा देखें। पल पल में रूप बदलता है। कभी हाथी, कभी पेड़, नदी, घाटी, पहाड़ कभी वृक्ष विशाल का रूप। हवा के बहाव के कारण यह रूप परिवर्तन होता रहता है ऐसे ही कुछ आकार आत्मा के हैं। असंख्य आकार। कब क्या रूप धरके आ जाये, क्या ठिकाना। यदा कदा जब वह प्रत्यक्ष हो जाते हैं, कोई व्यक्ति हठात् इनको देख लेता है, तो बेतरह घबरा जाता है, डर जाता है, बस यही भूत-प्रेत के अस्तित्व का वैज्ञानिक प्रमाण है।

अब प्रश्न यह उठता है कि प्रत्येक व्यक्ति को भूत-प्रेत या चुड़ैल क्यों नहीं दिखलायी पड़ते ?

प्रश्न निःसंदेह अच्छा है। इस प्रश्न का पृथक रूप से वैज्ञानिक उत्तर है। विराट रूप से व्याख्यान कर, केवल मृत्यु तर्क प्रस्तुत है।

विज्ञान इस बात को प्रमाणित कर चुकी है, कि (त्रिआयामी) वाली वस्तु ही आँखों को दीख पड़ती है। इसी सिद्धान्त पर जब थ्री डायमैन्शन वाली फिल्म बनी तो तहलका मच गया और उसी का एक रूप है वैनोरमा जिससे आप सारे दृश्य सजीव देख सकते हैं और उनके बीचों-बीच अपने आपको अनुभव कर सकते हैं। यह त्रिआयामी स्थिति का ही परिणाम है। अब यदि कोई जीव या वस्तु एक या दो आयाम में हुई, तो क्या आप देख सकेंगे ? कदापि नहीं। वह विद्यमान रहकर भी आपके लिए अदृश्य रहेगी।

उल्लू नेत्र विहीन नहीं होता। उसकी आँख होती हैं। फिर दिन में क्यों नहीं देख पाता ? कारण उसकी आँखें बनी ही इस प्रकार की हैं। पलक विहीन और बड़ी-बड़ी कि प्रकाश

रश्मियाँ सीधे उसके रेटीना (गोलक) पर पड़ती हैं। प्रतिबिम्ब बन ही नहीं पाते। रात में प्रकाश रश्मियाँ शीतल हो जाती हैं। फलतः देख सकता है। बिल्ली के विषय में आप क्या कहेंगे ? घोर अन्धकार में भी वह अपने शिकार चूहे या वस्तुएँ देख सकती है। आपने बेतरह सफेद व्यक्ति अवश्य देखे होंगे, जिन्हें "सूर्यमुखी" कहा जाता है। सूर्य के प्रकाश में वह पलकें लगातार झपकाते रहते हैं, उन्हें देखने में असुविधा होती है, पर रात आते ही वह सब कुछ सरलता पूर्वक देख पाते हैं। यह सब आँखों (नजर-नजर) का फर्क है। मनुष्य की आँखें केवल प्रकाश में त्रिआयामी वस्तुएँ देख सकती हैं।

शरीर के बारे में अति-प्राचीन काल से हमारे पूर्वज कहते आये हैं कि यह पाँच तत्वों का बना है। (अग्नि, जल, वायु पृथ्वी और आकाश) दाह संस्कार के द्वारा ये पाँचों तत्व अपने-अपने सजातीय से जा मिलते हैं। शरीर तो गया, पर?··· कहां गयी ? रह गयी। उसका आकार त्रिआयामी तो है नहीं। रहते हुए भी कैसे दीखें ? आकाश के बादलों के समान उसका रूप पल पल बदलता रहता है। बिना शरीर वाली आत्मा एकल आयाम की हो गयी। हठात् कोई देखने तो···वही भूत-प्रेत है ? प्रश्न यह है कि हठात् क्यों ? हर समय क्यों नहीं ? इसका सटीक उत्तर है कि एकल आयाम की वस्तु देखने के लिए स्थिति विशेष चाहिए। मान लीजिए यह "स्थिति" जाग्रतावस्था (चेतन रहने पर) में आ गयी तो···निश्चय स्वप्न दीखेगा। मनुष्य का मन जाग्रत या निद्रावस्था में हो, कभी भी एक पल के [सौवें भाग के लिए भी निष्क्रिय नहीं रहता है। इसी कारण शरीर मर जाने पर भी मस्तिष्क जीवित रहता है। डाक्टर मस्तिष्क की "मृत्यु" को ही वास्तविक "मृत्यु" मानते

हैं। शरीर मरने के बहुत देर बाद मस्तिष्क मरता है। तब तक वह बेतरह छटपटाता रहता है। इसी कारण फाँसी लटकाए व्यक्ति की लाश तत्काल नहीं उतारी जाती। इसी कारण सनातन धर्म में "कपाल क्रिया" का विधान है। मोटे बाँस से मृतक का निकट सम्बन्धी उसका कपाल फोड़ता है। यह विज्ञान सम्मत क्रिया है। मस्तिष्क मारने के लिए, वह भी खत्म हो जाये, शायद वहीं रहस्यमयी आत्मा रहती हो। इसी कारण कपाल क्रिया होती है। यहीं पर वह मस्तिष्क है, जहाँ कुछ न कुछ अवश्य चलता रहता है। यही स्वप्न की सृष्टि करता है। एकल आयाम मनुष्य दशा स्वप्नावस्था में हो जाती है। इसी प्रकार की दशा आने पर मनुष्य इन आत्माओं के रूप देख पाता है और यह "समाधि" जैसी दशा अधिक देर नहीं केवल कुछ क्षण ही रहती है। इसी कारण "भूत-प्रेत" दीखा और गायब इसी कारण उस व्यक्ति के अलावा दूसरा देख नहीं पाता है। एक व्यक्ति भूत-भूत चिल्लाता है। "देखो वह आ रहा है···वो रहा··· पर दूसरे एकल आयाम स्थिति में न होने के कारण उसे देख नहीं पाते हैं। तन्त्र की अनेक विद्याएँ, क्रियाएँ मनुष्य की मनः दशा एकल आयाम में ले आने वाली हैं। इस कारण सिद्ध तांत्रिक उनको देख सकते हैं। वार्तालाप कर सकते हैं। दूसरे नहीं। इसी का अनुचित लाभ ओझा, सयाने या नौखिए, व्यावसायिक तांत्रिक ढोंग रचकर लाभ उठाते हैं।

अतः भूत-प्रेतों का अस्तित्व है। इस बात से अब इन्कार नहीं किया जा सकता है। अगला महत्वपूर्ण प्रश्न है, भूत-प्रेत क्या हैं ? कैसे बनते हैं ? इनका उद्भव कैसे होता है ?

इसका अपना तर्क सम्मत सिद्धांत है। संसार के सभी धर्मों

में स्वर्ग और नर्क, हैल और हैवन की कल्पना है। हिन्दुओं में तीन लोक माने गए हैं, मुसलमानों में सात आसमान बतलाये गये हैं। कहा जाता है कि कर्मानुसार आत्माएँ, रूहें इन लोकों से अपने कर्मों का फल भोगकर नाना जीवों में जाती हैं। इसे ही भारतीय आध्यात्म में "आवागमन" कहा गया है। इससे मुक्ति पाने के लिए अनेक प्रकार की उपासनाओं और क्रियाओं कलापों को बतलाया गया है। भारतीय आध्यात्म में चौरासी लाख योनियाँ बतलायी गयी हैं। यह आत्मा एक योनि से दूसरी योनि में भटकती रहती है। मनुष्य रूप छोड़कर किस योनि में मनुष्य जाता है, क्या पता। एक उदाहरण अपने अनुभव का दूं। एक अधेड़ स्त्री थी। बड़ी पतिव्रता। पति भी खूब प्यार करता था। दुर्भाग्यवश पति चला बसा। वह विधवा हो गयी पर नित्य पति का स्मरण करती थी। तस्वीर से बातें करती थी। डेढ़ वर्ष बाद एक कुत्ता उसके पीछे लग गया। जहाँ तक जाती, पीछा करता। घर में जबर्दस्ती घुसता बड़ा मारा पीटा डंडा फटकारा। बाहर निकाल दिये जाने पर दरवाजे के बाहर पड़ा रहता। सदैव पीछा करता था। तंग आ गयी, मुझ से कहा, मैंने सम्पर्क किया। मुस्कराकर बोला, यह तुम्हारे पतिदेव हैं। कुक्कुर योनि में गये हैं, वह रो पड़ी। लौटकर आयी और कुत्ते को प्यार से रखना चाहा पर पता चला कि कारपोरेशन वाले उसे गोली देकर मार गये हैं। उसने उसका अन्तिम संस्कार कराया। तो यह रही आवागमन और आत्माओं की यात्रा। इस प्रकार आत्मा अपना चोला बदलती रहती हैं। केवल रह जाती हैं भटकती, अशांत आत्माएँ। यही भटकती, अशांत आत्माएँ भूत-प्रेत के रूप में यदाकदा दीख पड़ती हैं और नाना प्रकार के उपद्रव करती रहती हैं।

आखिर यह अशांत भटकती आत्माएँ क्या हैं ?

यह अन्य (चोला) क्यों नहीं धारण कर पातीं ?

इसका स्पष्ट उत्तर है। अकाल मृत्यु के कारण शरीर से बिछुड़ गयीं आत्माएँ भटकती रहती हैं। जायें तो कहाँ ? काल चक्र के अनुसार उनका समय ही पूरा नहीं हुआ है। अकाल मृत्यु···एक बीस वर्षीय युवक युवती दुर्घटना का शिकार, घटना स्थल पर मर गया···आत्म हत्या कर···ली, जल मरा, करंट मार गयी, ट्रेन हवाई जहाज, डूब मरा या नाना प्रकार की असामाजिक दुर्घटनाओं में असमय मरण। निश्चित रूप से ऐसी आत्माएँ भटकती रहती हैं और वहीं जब किसी को कुछ क्षण के लिए एक "आयामीय स्थिति" प्राप्त हो जाती है, तो वह भूत-प्रेत चीखने लगता है, उसे ही भूत-प्रेत दीखते हैं और कुछ क्षण बाद एक आयामी स्थिति भंग होते ही गायब।

यह भटकती अशांत आत्माएँ जायें तो किस लोक में ? माया मोह के बंधन में भी कुछ आत्माएँ नाना प्रकार की प्यास के कारण, अतृप्ति के कारण, वासनाओं के कारण भटकती हैं, इसलिए हमारे यहाँ गति, श्राद्ध-तर्पण तक आत्माओं की शांति का विधान है। इसमें अवैज्ञानिक है ही क्या ? यह सब समय और विज्ञान की कसौटी पर एक बार नहीं अनेक बार परखा हुआ है।

भूत-प्रेत जैसी वायवी हलचलों का अस्तित्व इसी कारण है। विज्ञान इसे स्वीकार कर चुका है। धर्म इसे मानता है। शायद दो चार सौ साल बाद विज्ञान इन आत्माओं से चाहे जब सम्पर्क करने की स्थिति में आ जाये, तब और भी रहस्य खुल सकते हैं। परीक्षण बराबर चल रहे हैं। यह शुभ लक्षण हैं। फिलहाल इस विराट् विषय पर केवल इतना ही···

साधना

साधना में सबसे महत्वपूर्ण स्थान जप का है वैसे तो सभी सावधानियाँ महत्वपूर्ण हैं लेकिन मन्त्र का शुद्ध उच्चारण तथा अर्थज्ञान जप अपने आप में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। किसी भी मंत्र की सिद्धि में उस मंत्र का जप निश्चित संख्या में अबाध क्रम से करना पड़ता है। एकाग्र जप से मंत्र में क्रियाशील प्रेरणा, शक्ति द्वारा जाग्रत की जाती है। यह जब जाग्रत होकर क्रियाशील हो जाती है तो साधक सिद्धि की अवस्था को प्राप्त होता है। मंत्र साधना में प्रवृत्त होने वाले साधक को इस स्थिति को समझ लेना चाहिए।

यह मन अन्तर्मुखी स्वरूप है इसका सीधा सम्पर्क ब्रह्मांड से रहता है। इसकी शक्ति असीम है। मंत्र शक्ति से वे सभी कार्य पूरे किये जा सकते हैं जो असम्भव प्रतीत होते हैं।

देवी शक्तियों तथा मंत्र शक्ति के अभ्युदय में साधना सर्वोपरि भूमिका निभाती है। इसका कोई अन्त नहीं है। इसे साधक मन चाहा विस्तार दे सकता है।

तपोमय ईश्वर निष्ठ साधक साधारण व्यक्ति से अधिक जाग्रत तथा क्रियाशील होता है। मंत्रों के निरन्तर जप और इन्द्रिय निग्रह साधना को अधिक जाग्रत तथा क्रियाशील बनाते हैं। साधक का मन्त्र जप पूर्ण हो जाने पर ही मंत्र की शक्ति का अभ्युदय होता है।

साधक का खान-पान, रहन-सहन, मनोवृत्ति स्वभाव, संस्कार और वातावरण भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। साधक का सम्पूर्ण परिवेश उसकी साधना को अधिक सक्रिय करने में सहायक या बाधक हो सकता है।

साधना में साधक को सिद्धि दिलाने वाली सबसे बड़ी शक्ति श्रद्धा विश्वास और एकाग्रता मानी जाती है। "विश्वास फलदायक" यूँ ही नहीं है।

जिस साधक की साधना जितनी अधिक जाग्रत तथा क्रियाशील होगी वह साधक उतना ही श्रेष्ठ, शक्तिशाली और उदात्त आत्मशक्ति वाला माना जायेगा। वास्तव में श्रेष्ठता का माप दण्ड तंत्र में यही साधना है। साधना साधक को नर से नारायण बनने की दशा प्राप्त कराती है। साधना विकारों तथा आसक्तियों से मुक्त है।

इसी कारण वश समस्त योगी, ऋषि, मुनि साधु सन्त जीवन के सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य ब्रह्मत्व की प्राप्ति के लिए इसी साधना को अधिक से अधिक क्रियाशील बनाने के प्रयास में बराबर लगे रहते हैं।

साधना शक्ति से तीनों कालों का ज्ञान प्राप्त करना सभी असम्भव कार्यों को संभव करना संभव है। अब यह साधक के प्रयास के ऊपर निर्भर है कि वह अपनी साधना को कितने उदात्त रूप में जाग्रत कर लेता है। मन्त्र साधना में प्रवृत्त होना हो तो आपको हर हालत में अपनी साधना अधिकाधिक संवेदन शील बनानी पड़ेगी। रोग, शोक, लोभ, मद, अहंकार इन्द्रिय लोलुपता साधना को कुंठित कर देती है। अतएव इन्हें नियंत्रित करके ही साधना को विकसित किया जा सकता है।

यह प्रश्न बड़ा जटिल है कि साधना कैसे विकसित की जाए। वास्तव में समस्त साधनाएँ जप की परिधि में हैं। जप ही साधना और सिद्धि की आधार भूत स्थिति है। ऐसी दशा में इसकी अवहेलना का विचार गलत है। साधना पूर्ण होने पर मंत्रों की शक्ति प्राप्त होती है। यह सत्य है।

अपनी साधना को अधिक सक्रिय बनाने के लिए साधक को सतोगुणी, ईश्वरनिष्ठ होना चाहिए। संयम नियम और योग का पालन करना चाहिए। कोलाहल से दूर शान्त, एकांत वातावरण में बैठकर ध्यानस्थ होना चाहिए। मन को अधिकाधिक अन्तर्मुखी बनाने का प्रयास करते हुए प्राणायाम ध्यान और समाधि का अभ्यास करना चाहिए। समस्त प्रकार की आसक्तियों से मुक्त मन सतोगुणी होकर ध्यान, समाधि प्राणायाम तथा जप शक्ति को जाग्रत करें। शायद इसी कारण से साधना प्रारम्भ करने से लेकर सिद्धि प्राप्त करने तक गुरु कृपा, ईष्टकृपा, साधक का विधिवत प्रयास, साहस, एकाग्रता संकल्प दृढ़ता उसके लिये अनिवार्य बन जाते हैं। इसकी उपेक्षा कर सिद्धि पा जाना असंभव है।

सिद्धि प्राप्त कराने वाली किसी भी साधना को प्रारम्भ करने के पूर्व साधक को अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन कर लेना चाहिए। ऐसी साधनाएँ जिन्हें सिद्धि के स्तर पर प्राप्त करने में साधक योग्य नहीं है तो पहले उसे योग्यता की स्थिति प्राप्त कर लेनी चाहिए।

साधना काल में अनेक प्रकार के अनुभवों से भयभीत न होने वाला, भ्रमित न होने वाला साधक ही सिद्धि का अधिकारी बनता है। मानव मन में क्रिया शीलता है अनुभूति की प्रधानता है। मन की स्थिति सूक्ष्म है वह स्थूल शरीर बुद्धि

इत्यादि को नियमित संचालित करता है फिर भी उसका भौतिक या स्थूल आकार नहीं है। मन को किसी ने आँखों से नहीं देखा फिर भी कोई उससे अपरिचित नहीं है। शरीर स्थूल है मन सूक्ष्म है। लेकिन सूक्ष्म मन स्थूल शरीर से अधिक शक्ति शाली है। हमारा मन ही दैवी संकेतों पूर्वाभासों इत्यादि को ग्रहण करने वाला है। मंत्र साधना में तो मनुष्य का मन ही सर्वेसर्वा होता है। स्थूल शरीर तो केवल सहायता अथवा अनुचर मात्र होता है। मंत्र साधना और सिद्धि के बीच मन ही साधना का आधार बनता हैं और मन ही साधना की सिद्धि से सर्व प्रथम साक्षात्कार प्राप्त करता है। शास्त्रों का कथन है कि—

"जपात्सिद्धि : जपात्सिद्धि : जपात्सिद्धि : न संशय :"

अर्थात् मंत्र का साधक निरंतर जप करता चला जाय उसे अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होगी। इसी के साथ मंत्र के मानसिक जप के लिये कहा गया है। "गुह्याति गुह्य गोप्तृत्व" अर्थात मंत्र का गुप्त रूप से उच्चारण रहित जप किया जाय। श्लोकों और मंत्रों में जप क्रिया सम्बन्धी यह अन्तर है कि श्लोकों का सस्वर पाठ होना चाहिए उनमें जप क्रम में उच्चारण किया जाना चाहिए साथ ही साधक को श्लोक का सम्पूर्ण अर्थ ज्ञान भी हो। अर्थ ज्ञान का बंधन तो मानसिक जप की शर्त है। विद्वानों की मान्यता है कि साधक द्वारा मंत्र का उच्चारण करने से मन्त्र की शक्ति समाप्त हो जाती है। इस मान्यता के प्रति यह तर्क दिया जाता है कि मंत्र जप के क्रम में मंत्र तथा साधक की अव्यय शक्ति का एकाकार होना परम आवश्यक है। अव्यय शक्ति ही मनुष्य मात्र की जीवंतता है।

"शिवसूत्र विमर्षिनी" की तो मान्यता है कि उच्चारण

किये जाने वाले मंत्र, मंत्र पद के अधिकारी ही नहीं हैं।

"उच्चार्यमाणा ये मंत्रा न मंत्राश्चापि तद्विदु"

"महार्थ मंजरी" में भी कहा गया है कि मनन करने योग्य शब्द ही मंत्र रूप है। 'शिव सूत्र विमर्षिनी' ने तो "चित्त मंत्र" कहकर चित्त को ही मन्त्र रूप कह दिया है।

मानसिक जप में साधक अनुभव करता है कि वह है ही नहीं जो कुछ भी है वह मंत्र है और वही उसके रोम-रोम में गूंज रहा है। मंत्र जप साधना के लिए सुषुम्ना स्वर को उपयुक्त माना गया है। इस दशा में मंत्र जप करने से साधक को एकाग्रता प्राप्त होती है। इसलिए मन का एकाग्र होकर जप से जुड़े रहना आवश्यक है अन्यथा मानसिक जप भी प्रभावहीन होकर साधक को वाँछित फल प्राप्ति से वंचित कर देगा।

साधना में जप का महत्व बताते हुए कहा है "यज्ञानां जप यज्ञोस्मि" अर्थात् मंत्र के जप रूप में मैं ही हूं।

साधनाकाल में साधक का मन जब एकाग्रता का बंधन तोड़कर दूसरे विषयों में चला जाता है तब साधक को न तो जप का फल प्राप्त होता है और न जप के फलस्वरूप प्राप्त होने वाली सिद्धि ही प्राप्त होती है।

मंत्र के जप के भी तीन रूप शास्त्रों में निर्धारित किए हैं (१) उपांशु जप (२) वाचिक जप (३) मानसिक जप।

सारांश यह है कि मंत्र और मनके के संबंध में सभी व्याख्याकारों तथा स्वयं तंत्र-मंत्र शास्त्रों ने भी मंत्र की एकात्मक सत्ता को स्वीकार किया है। मंत्र साधना में मंत्र वह धरती है जिस पर मंत्र के देवता का अवतरण होता है। इस प्रकार

साधना के लिए साधक की सर्वोपरि शक्ति मन है, यह बड़ा शक्तिशाली, चमत्कारी और महा ् है।

एकाग्र, स्थिर चंचलता रहित, संयमी, अनुशासित, निर्मल, वासना रहित, देव विश्वासी, दृढ़ संकल्पी, साहसी तथा पूर्ण निर्भय होना चाहिए। ऐसे मन वाला साधक सफल और जप साधना में भी अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है।

तंत्र-मंत्र के ग्रन्थों का पठन कर पाठक सिद्धियों के प्रति आकर्षित होते हैं। पुस्तकों में बताये गये विधि विधानों को अपना कर वे सिद्धि प्राप्त करने का प्रयास करते हैं लेकिन सफलता नहीं मिलती है। आखिर ऐसा क्यों होता है? असफलता के कारण क्या हैं और इनका निदान क्या है? ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका समाधान प्राप्त करने की इच्छा प्रायः सभी साधकों में है। तंत्र-मंत्र के सिद्धि क्षेत्र की मूल समस्या भी यही है। इसके कई कारण हैं और इनमें से कोई न कोई कारण अनजाने ही साधकों के साथ अपने आप जुड़ जाता है उन्हें पता भी नहीं चल पाता है। जब प्रयास का परिणाम शून्य होता है तो साधक विक्षुब्ध होकर मंत्र शास्त्र और तंत्र शास्त्र को असत्य मानकर इसे निरर्थक मानने लगता है।

सिद्धि प्राप्त न होने के अनेकों कारण हैं।

मंत्र और मंत्र साधना की साधनाओं को जब साधक शास्त्रों के निर्देश के अनुसार विधि विधान सहित पूरा करके भी सिद्धि प्राप्त करने में असमर्थ हो जाता है तो वह सम्पूर्ण क्षेत्र को अपने स्थायी अविश्वास से जोड़कर इन्हें निरर्थक और मिथ्या मानता है।

वास्तव में यह स्थिति सभी के लिए अप्रिय है जो साधना

करते हैं उनके लिए भी जो करने के लिए तैयार होने वाले हैं उनके लिए भी। लेकिन स्थिति का सम्पूर्ण स्वरूप इतने तक ही और इस निराशावादी स्थिति तक ही सीमित नहीं है। ऐसे अनेक साधक हैं जिन्हें साधना करने पर सिद्धि प्राप्त हो जाती है। लेकिन वे अपनी सफलता को गुप्त ही रखते हैं। उनका विश्वास चरम सीमा पर होता है। लेकिन यह सब उन तक ही सीमित रहता है। यदि आप किसी साधना को करते हैं और उसमें सफलता प्राप्त हो जाती है तो साधना और सिद्धि को मिथ्या नहीं माना जा सकता है। एक बात स्पष्ट रूप से जानने वाली है कि असत्य का जीवन सीमित होता है। वह सत्य की तरह शाश्वत नहीं हो सकता है यदि तंत्र-मंत्र साधना की विद्या कल्पना ही होती तो यह सहस्रों वर्षों की मान्यता और विश्वास प्राप्त करने में कभी भी समर्थ नहीं होती। यह क्षेत्र कब का लुप्त हो गया होता लेकिन वैज्ञानिक प्रगति की चकाचौंध में इस विषय के जीवित बने रहने का प्रमाण इस विषय की सत्यता और प्रामाणिकता ही है।

तंत्र-मंत्र और साधना काम्य कर्म कहे जाते हैं और ये अपनी स्थिति के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किये गए हैं।

साधना और सिद्धि को असफल बनाने वाली प्रमुख स्थितियों को स्पष्ट कर रहा हूं। इस विषय में साधकों के लिये पहली सावधानी यह है कि वे जिस किसी भी मंत्र को सिद्ध करना चाहते हैं उसके विषय में, यह जानकारी प्राप्त कर लें कि वह मंत्र "कीलित" या "शापित" तो नहीं है? इस बात का ज्ञान होने पर कि मंत्र कीलित अथवा शापित

नहीं है वे उस मंत्र की साधना में प्रवृत्त हो सकते हैं। यदि मंत्र "कीलित" है तो उसका उत्कीलन करने के पश्चात ही सिद्धि प्राप्त होगी। उत्कीलन के बाद ही प्रयत्न करें।

मन्त्र की सिद्धि का प्रयास तभी करना चाहिए जब उसकी सिद्धि किसी उद्देश्य की पूर्ति करती हो केवल कौतुहल वश या सत्यता परखने की दृष्टि से मंत्र सिद्ध करने का प्रयास करना अनुचित है। इसके अतिरिक्त मारण विद्वेषण तथा उच्चाटन इत्यादि के अतिरिक्त इनकी विशेष आवश्यकता प्रतीत होने पर ही करना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो किसी गुरु की देख-रेख में ही साधना कर मन्त्र सिद्धि का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से सिद्धि प्राप्ति की संभावना अधिक हो जाती है। लेकिन इस का तात्पर्य यह नहीं है कि गुरु के अभाव में साधना असंभव है।

मंत्र साधना को असफल बना देने का एक कारण यह भी है कि साधक मन्त्र का अशुद्ध उच्चारण करते हैं। मन्त्र का अशुद्ध उच्चारण करने से भी मंत्र सिद्ध नहीं होता है। केवल उच्चारण दोष ही नहीं बल्कि अन्य कई प्रकार से भी अशुद्धि दोष उत्पन्न होता है। मन्त्रोच्चार दोष, हलन्त उच्चारण दोष, चन्द्र बिन्दु उच्चारण दोष इत्यादि होते हैं।

किसी भी मंत्र को सिद्ध करने का प्रयास करने से पूर्व इस बात से सन्तुष्ट हो जाना चाहिए कि वह मंत्र अपने मनोरथ सिद्धि में पूर्ण सहायक है अथवा नहीं। जिस व्यक्ति को संसारी जीवन में रहकर भौतिक रूप से उन्नति करनी है उसे रजोगुणी मन्त्रों से साधना प्रारम्भ करनी चाहिए। रजोगुणी से ऊपर की स्थिति सतोगुणी है और नीचे की तमोगुणी है। सतोगुणी मन्त्रों का अपना अलग व्यक्तित्व है ये पूर्ण निराश तो किसी

को नहीं करते हैं। साधना का आंशिक लाभ अवश्य ही प्राप्त होता है। सतोगुणी मंत्र ही वास्तव में साधना के लिए श्रेष्ठ हैं। विस्फोटक आतंकवादी आसुरी शक्तियों के स्वामी बनने के लिए तमोगुणी मंत्रों की साधना के प्रति अवश्य आकृष्ट होना चाहिए। मन्त्र को सिद्धि के पूर्व उत्कीलित करना पड़ता है।

यदि शास्त्रों की विधि विधान सहित मंत्र की साधना पूरी की गयी है और फिर भी सिद्धि प्राप्त नहीं हुई तो इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि जप की मात्रा कम रह गयी है। वास्तव में मंत्र जप की संख्या का भी अपना विशेष महत्व है।

कभी-कभी ऐसी गलती भी हो जाया करती है कि साधना करते समय किसी विघ्न प्रेरणावश साधक मंत्र जप की संख्या गलत गिन जाता है। उसे पता नहीं चल पाता है और अपनी जप संख्या की गणना शुद्ध होने का विश्वास बराबर बना रहता है लेकिन सिद्धि प्राप्त न होने पर···उसकी क्या दशा होती है यह पहले ही लिखा जा चुका है।

इन सारी स्थितियों के महत्व को साधक को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। उसे समस्त प्रकार की बाधाओं से मुक्त हो जाना चाहिए।

कुछ साधक मंत्र साधना के लिए पुस्तकों को अनुपयुक्त समझते हैं वे कहते हैं जब गुरु की जरूरत है तो फिर पुस्तक की क्या आवश्यकता है गुरु मंत्र सिखा ही देगा। वास्तव में ऐसा सोचना गलत है। मंत्र तंत्र और यंत्र साधना के लिए आवश्यक है कि वह ग्रन्थों का गम्भीरता और गहराई से अध्ययन करे।

विषय की सम्पूर्ण प्रामाणिक जानकारी प्राप्त कर अपने लिए उपयोगी साधना का चुनाव करे।

इस पर मंत्र साधना के विषय में उपयोगी जानकारी देने वाली, साधना के स्वरूप और सिद्धियों की शक्ति को बतलाने वाली केवल पुस्तकें ही हैं।

इस स्थिति में साधनाओं में असफलता से बचने के लिए इस प्रकार के ज्ञान का अध्ययन और मनन अवश्य कर लेना चाहिए।

साधक अनेकों मंत्रों की व्यवस्था होने के कारण सावधानी पूर्वक अपने लिए मंत्र का चुनाव कर ले।

जिस मंत्र को सिद्ध करके किसी अन्य व्यक्ति पर प्रयोग करना होता है उसमें साधक के साथ-साथ साध्य व्यक्ति की स्थिति का मूल्यांकन भी महत्वपूर्ण है। यदि व्यक्ति धार्मिक तथा आस्तिक है, उसके पास साधना की शक्ति है तो उस पर मारण मोहन और वशीकरण के साधारण प्रयोग तक सफल नहीं होंगे, उसकी शक्ति इन प्रयोगों का काट करेगी। इस प्रकार की स्थितियों में बलाबल विचार करना एक आवश्यकता है।

निष्कर्ष यह मानना चाहिए कि मंत्र साधना जैसे महत्वपूर्ण अलौकिक कृत्य में प्रवृत्त होने से पूर्व साधक को उसके विषय से सम्बन्धित समस्त प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। समस्त औपचारिकताओं का पालन करते हुए प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा कर लेना चाहिए। इन सब बातों पर तो और भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस विषय में किसी पुस्तक पर आश्रित होने पर भी अपेक्षित लाभ संभव नहीं है।

उपरोक्त स्थितियों को समझकर उनका पालन करने पर साधना में असफल होने से बचा जा सकता है।

मंत्र साधना प्रारम्भ करते ही साधक का जीवन एक योगी जैसा हो जाता है। प्रारम्भ में यह अत्यन्त दुष्कर प्रतीत होता है इन्द्रियों का समूह बड़ा वलवान है। शक्तिशाली स्वेच्छाचारी मन पर अंकुश लगाना बड़े संकल्प का विषय है। बड़े-बड़े ऋषि मुनि मन के हाथों हार चुके हैं फिर बेचारे साधारण साधक की विसात ही क्या है?

मंत्र साधना के क्षेत्र में साधक को सिद्धि का अधिकारी बनाने वाले अष्टांग योग का परिचय इस प्रकार है। १. यम नियम, २. संयम, ३. आसन, ४. प्राणायाम, ५. प्रत्याहार, ६. धारणा, ७. ध्यान, ८. समाधि। इनमें १. अहिंसा, २. सत्य, ३. अस्तेय, ४. ब्रह्मचर्य, ५. असंग्रह, ६. उपरिग्रह स्थितियाँ यम मानी गई है।

मंत्र साधना के प्रारम्भ से लेकर समाप्ति तक साधक को पूर्ण एवं कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करना अनिवार्य है।

असंग्रह :—अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को कम-से-कम करते हुए पूर्ण सात्विक तथा सादा जीवन व्यतीत करना और अनुपयुक्त पदार्थों का त्याग करना ही असंग्रह है।

अपरिग्रह अर्थात पूर्ण इन्द्रिय निग्रह :—योगी का समाधिस्थ अवस्था के समानान्तर ही संसार में रहकर भी पूर्ण असंसारी जीवन अपना लेना, इन्द्रिय सुख तथा समस्त प्रकार के सुख भोग वैभव विलास, धर्मसंग्रह, मान-सम्मान कामना इत्यादि का त्याग कर साधना लीन मुक्त एकांत सहज पवित्र साधनास्त जीवन को अपना लेना। इस प्रकार इन यम नियमों के आधीन

व्यतीत होने वाला जीवन स्वयं ही मंत्रमय हो जाता है और सिद्धि का मार्ग स्वयं प्रशस्त हो जाता है।

पातंजलि योग सूत्र में भी साधक की शक्ति उद्दीपित करने के लिए इन यम नियमों के पालन करने का बार-बार आग्रह किया है। महर्षि वेदव्यास ने बारह प्रकार के यम बताये हैं।

१. अहिंसा, २. सत्य, ३. अतस्ये, ४. अपरिग्रह, ५. आस्तिकता, ६. अभय, ७. असंग, ८. ब्रह्मचर्य, ९. क्षमाशीलता, १०. मौन, ११. स्थिरता, १२. लज्जा।

कुछ ऋषियों ने यमों के साथ ही नियमों को जोड़ दिया है। पातंजलि योग सूत्र के अनुसार नियमों की संख्या ५ बताई गई है, लेकिन प्रदीपिका ने दस प्रकार के नियमों का निर्देश दिया है।

महर्षि पातंजलि के अनुसार :—

शुचि, संतोष, तप, दैवशरणागति, आत्मानवेषण।

हठयोग प्रदीपिका में साधक के लिए निर्धारित नियमों की व्याख्या में कुछ यम भी सम्मिलित कर लिए गए हैं कहा गया है—साधक, मनसा, वाचा कर्मणा से ईश्वर की शरणागति हो, वह संतोषी दानी, उदार, यज्ञ, जप, तप इत्यादि कर्मों को अपनाए हुए हो।

मंत्र साधना में प्रवृत्त होकर सिद्धि प्राप्त करने का प्रयास करने वाले साधक को अपना जीवन यम नियमों के आधीन बनाना चाहिए। यह अनिवार्य शर्त है।

आसन :—यम नियमों की तरह ही साधक के लिए आसन का स्थान भी बड़ा महत्वपूर्ण है। साधक के लिए आसन शक्ति के समान है।

यहाँ साधना के लिए आसन से तात्पर्य है कि साधक योग की किस मुद्रा में साधना का प्रयास करता है। दूसरा यह है कि वह किस पर बैठकर साधना करता है ? साधक मंत्र साधना में आसनों की स्थिति तथा महत्व पर भी पूरा-पूरा ध्यान दे क्योंकि यह स्थिति भी उसके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। साधक यदि भूमि पर बैठकर साधना करे तो उसमें उत्पन्न विशिष्ट ऊर्जा पृथ्वी में समा जाती है। इसी प्रकार साधना में वस्त्र काष्ठ इत्यादि के आसन भी दोषपूर्ण माने गए हैं केवल कुशासन, शुद्ध ऊनी आसन, व्याघ्रचर्म तथा मृगचर्म का आसन ही साधना कार्य के लिए उपयोगी माने गये हैं। साधक का साधना स्थल एकांत पवित्र तथा व्यवधान मुक्त होना चाहिए। आसन ऐसा हो कि उस पर सुविधापूर्वक बैठ सके। शरीर का समस्त भाग आसन पर ही रहे।

मंत्र सिद्धि से योगासनों का सम्बन्ध है। योग के ग्रंथों में आसनों की अलग-अलग संख्या तथा मुद्राओं का उल्लेख है। प्राचीन काल में कुछ ऋषियों ने आसनों की संख्या ८४ निर्धारित की, कुछ ने १३३ और कुछ ने १५० किन्तु इसमें कुछ आसनों को थोड़ा-थोड़ा परिवर्तित कर संख्या वृद्धि की गई है। मंत्र साधना में केवल ३२ प्रकार के आसन उपयोगी समझे गए हैं। महत्व की दृष्टि से केवल सिद्धासन, पद्मासन, स्वस्तिकासन, भद्रासन हिंसासन इत्यादि विशेष महत्व के माने गए हैं। इन सभी आसनों में सर्वोपरि महत्व "पद्मासन" को ही दिया गया है। इसके अभ्यास द्वारा साधक समस्त मनोरथों को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है।

"पद्मासन" योग कामनाओं की पूर्ति के साथ-साथ मोक्ष प्रदान करने की सामर्थ्य भी रखता है। क्योंकि इसे योग का

आधार माना गया है। यहाँ मंत्र साधना के लिए उपयोगी "घेरण्ड संहिता" के अनुसार बत्तीस प्रकार के आसनों के साथ-साथ कुछ अन्य महत्वपूर्ण आसनों के विषय में जानकारी दी जा रही है।

१. सिद्धासन, २. पद्मासन, ३. भद्रासन, ४. स्वस्तिकासन, ५. सिंहासन, ६. मुक्तासन, ७. वीरासन, ८. बज्रासन, ९. गोमुखासन, १०. बद्ध पद्मासन, ११. गरूड़ासन, १२. मत्स्यासन, १३. मयूरासन, १४. कूर्मासन, १५. भैरवासन, १६. सूर्यासन, १७. कुक्कुटासन, १८. योगासन, १९. मृतासन, २०. वृक्षासन, २१. पूर्वासन, २२. कच्छपासन, २३. मकरासन, २४. मण्डुकासन, २५. गोपुच्छासन, २६. शांतिप्रियासन, २७. उतानमधुकासन, २८. उष्ट्रासन, २९. वृषासन, ३०. नेति आसन, ३१. उत्तानण, ३२. पादांगुष्ठासन।

प्रत्याहार के विषय में कहा है "विषयभोगाकांक्षा शमनम्ईद्रिय निरोधनम् स्वस्थस्थिति प्रज्ञताहि प्रत्याहारा:"

सांसारिक कामना से, मन विरक्त होकर पूर्ण स्वस्थचित्त और संतुष्टि युक्त मनोवृत्ति अपनाकर भौतिक जीवन केवल कर्त्तव्य भावना के रूप में जीना प्रत्याहार है।

"षड् चक्रस्य भेदनम् हि धारणा स्वरूपम्"

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहृत, विशुद्ध तथा आज्ञचक्र इत्यादि षट् चक्रों में योग साधना द्वारा बेधन दक्षता प्राप्त करने के बाद ही साधक अपने चित्त को किसी एक चक्र में स्थिर करने की निपुणता प्राप्त करता है।

साधक अभ्यास द्वारा इस शक्ति का विस्तार कर चमत्कारी पुरुष बन सकता है।

योग के अनुसार चक्रों की संख्या ६ बताई गई है ऊपर दिए गए षट् चक्रों के बाद सातवां चक्र सहस्यार माना गया है तथा आठवाँ चक्रतालू में ललनाचक्र तथा सबसे अंतिम नवाँ चक्र ब्रह्म रन्ध्र में स्थित माना गया है।

"साधकस्य केन्द्रीभूत एकाग्रता स्वरूपम् हि ध्यानम्"

योग सूत्र का कथन है कि साधक के चित्त की एकाग्रता ही ध्यान है।

साधक द्वारा अपने इष्टदेव का ध्यान, अर्थात आकार प्रकार वेशभूषा आकृति सहित स्थूल ध्यान कहलाता है।

साधक का मन और आत्मा के एक रूप हो जाने की स्थिति को समाधि कहा जाता है। भारत के ऋषि मुनि सहस्रों वर्षों की समाधि लगाया करते थे। समाधि, अष्टांग योग का परम विशिष्ट अंग है। समाधि के भी भेद हैं—सम्प्रज्ञात समाधि असम्प्रज्ञात समाधि इनके भी उपभेद हैं।

यहाँ इन समाधियों के भेद स्पष्ट करने की विशेष आवश्यकता नहीं है। साधक इन्हें किसी गुरु के मार्ग दर्शन में अभ्यास द्वारा सीख सकते हैं।

मंत्र तंत्रादि की साधना कर इनमें पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए साधक में कुछ विशेष गुण होना परम आवश्यक है। साधना में प्रवृत्त होते ही साधक को एक विशेष प्रकार की मनः स्थिति अपना लेनी पड़ती है। उसे स्थिर चित्त दृढ़ प्रतिज्ञ, साहसी तथा निर्भय बनना पड़ता है। साहस और संकल्प ही उसकी साधना शक्ति होते हैं। साधना का तात्पर्य है मन की

एक भावना, एक लक्ष्य तथा किसी एक केन्द्र बिन्दु पर केन्द्रित होना। साधना की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि साधना काल में साधक निर्दिष्ट स्थितियों का सफलता पूर्वक निर्वाह करे। साधना के लिए साधक की स्थिति क्या हो इसका गीता के सोलहवें अध्याय में स्पष्ट रूप से उल्लेख है।

साधक निर्भय हो। ईश्वर भक्ति-भगवत् शरणागति, ज्ञान में पूर्ण आस्था अन्तःकरण की पवित्रता, कर्म, अहिंसा, सत्य, तप, सदाचार, त्याग वृत्ति, क्षमाशीलता, काम, क्रोध, लोभ, मद मोह का त्याग, परदुख कातरता, द्रोह तथा परनिंदा विमुखता, शुद्ध विचार निरभिमानता, आत्म संयम तथा पूर्ण इन्द्रिय निग्रह। इन विशेषताओं से सम्पन्न साधक निश्चित रूप से साधना में सफलता प्राप्त करता है। साधक मूढ़ता, क्षिप्तता, विक्षिप्तता, अस्थिरता तथा निरूद्धता से पूर्ण मुक्त हो। अविद्या, अस्मिता, राग द्वेष तथा अभिनिवेश इत्यादि से मुक्त हो।

इस प्रकार की सावधानी साधना में असफलता को रोकती है।

मंत्र साधना में अनेकों विघ्न हैं साधक इनकी पूर्व जानकारी प्राप्त कर यदि इनका पहले ही विरोध कर ले तो सफलता संशय रहित हो जाती है। मंत्र साधना के विघ्न इस प्रकार हैं—आधि, व्याधि, अशुद्धता, अविवेक, संशय, चंचलता, आलस्य, बुद्धि की चंचलता, नास्तिकता, अविद्या, अहंभाव, दंभ, सिद्धि के दुरुपयोग की प्राप्ति के पूर्व ही निश्चय, कुटिलता, मूढ़ता शारीरिक तथा मानसिक अस्वस्थता, किसी भी प्रकार का दुख दैन्य, साहस और संकल्प का अभाव, देह की अथवा मन की चंचलता, अनियमित श्यास, प्रयास,

उच्छवास, द्रोह, निंदा ईर्ष्या असन्तोष अनियमित आहार विहार, खाद्य अखाद्य सेवन, उत्तेजक तथा तामसी और गरिष्ट भोजन, रसना लोलुपता, इन्द्रिय लोलुपता, ब्रह्मचर्य व्रत का नाश, प्रमाद, अनियमित दिनचर्या, सच्चे गुरु का प्राप्त न होना, नकली गुरु का शिष्यत्व सच्चे गुरु का अज्ञानतावश अपमान एवं उपेक्षा, सच्चे गुरु को पहचानने की अन्तर्दृष्टि का न होना। ईश्वर में अविश्वास तथा अश्रद्धा, अपनी साधना और सिद्धि के प्रति संदेहग्रस्त होना, सिद्धि की देन येन केन प्रकारेण शीघ्र प्रति कामना, अल्प सिद्धि में ही पूर्ण सफलता मानना, अपनी पूजा करवाना, आडम्बर फैलाना, शक्ति या सामर्थ्य के अभाव में गुरु बनना, दम्भ, अहंकार और ईर्ष्या से ग्रस्त होना, विषयानंद में रम जाना। इन विघ्नों से प्रत्येक साधक को अपनी रक्षा करते हुए साधना में प्रवृत्त होना चाहिए।

पूर्ण श्रद्धा, संकल्प भावना तथा सविधि साधना करने पर भी यदि साधक को सफलता प्राप्त न हो तो मन्त्र सिद्धि के साधनों को प्रयोग में लाए।

मन्त्र साधना में प्रवृत्त होने वाले साधक को निर्णय करना चाहिए कि क्या वह हर प्रकार से साधना की कठिन यात्रा सफलतापूर्वक पूरी करने में समर्थ है।

अपनी योग्यताओं तथा क्षमताओं से संतुष्ट होने के बाद ही साधना में प्रवृत्त होना चाहिए। आलस्य, प्रमाद, शंका इत्यादि से साधक को बचना चाहिए। मन्त्र साधना में प्रवृत्त होने वाले साधक को अपने लिए उपयुक्त मन्त्र का पूरी सावधानी तथा सतर्कता से चयन करना चाहिए। मन्त्र साधना काल में वैचारिक तथा शारीरिक शुद्धता भी आवश्यक है।

मंत्र पाँच प्रकार के कहे गए हैं—

एकाक्षर अर्थात एक अक्षर का मंत्र "पिण्ड" कहलाता है।

दो अक्षरों वाले मंत्र "कर्तरी" कहलाते हैं।

तोन अक्षरों से लेकर नौ अक्षरों तक के "बीज" कहे जाते हैं।

दस अक्षरों से लेकर बीस अक्षरों तक के मंत्र को "मंत्र" ही कहा जाता है।

बीस अक्षरों से अधिक संख्या के मंत्र "माला" कहलाते हैं।

मंत्रभेद स्पष्ट करने वाली एक अन्य व्याख्या के अनुसार मंत्र दो प्रकार के हैं—"कूट तथा अकूट" अनेक वर्णों से परस्पर संयुक्त मंत्र "कूट' मंत्र कहलाता है। सामान्य वर्ण योजना द्वारा नियोजित मंत्र अकूट कहलाता है। तंत्र के अनुसार मंत्र के भेद और माने गए हैं। "पल्लव, योजन, रोध, पर, सम्पुट अरु विदर्भ तमानुसारेण षट् भेदो हि मंत्रः।

पल्लव-जिस मंत्र से नामोच्चार विधान जुड़ा हो ऐसे मंत्र पल्लव मंत्र कहलाते हैं।

योजन—मंत्र के अंत में नामोच्चारण कर मंत्र सिद्ध करने का विधान हो तो ऐसा मंत्र योजन कहलाता है।

रोध—नामोच्चारण के पूर्व मध्य तथा अन्त स्थित मंत्र स्थिति-रोध कहलाती है।

पर—नाम के प्रत्येक अक्षर के साथ जुड़ा हुआ मंत्र 'पर' कहलाता है।

सम्पुट—जो मंत्र नाम के पूर्व अनुलोम हो तथा नाम के अंत में विलोम हो सम्पुट कहलाता है।

विदर्भ—मंत्र के दो अक्षर नाम के दो अक्षर, फिर दुबारा नाम के दो अक्षर इस प्रकार क्रम युक्त मंत्राक्षर और नामाक्षर स्थिति 'विदर्भ' कहलाती है।

इस प्रकार के मंत्र के प्रयोग का क्रम इस प्रकार है।

पल्लव मंत्र—यह, मारण, उच्चाटन, विद्वेषंण तथा भूत-प्रेत उपद्रव तथा बाधा निवारण के काम में आता है।

योजन मन्त्र—सम्मोहन तथा समस्त पीड़ाओं तथा कष्टों के निवारणार्थ प्रयोग किया जाता है।

पर मन्त्र—समस्त प्रकार के शान्ति कार्यों के लिए उपयोगी है।

सम्पुट मन्त्र—यह मन्त्र कीलन, स्तंभन तथा उच्चाटन कार्यों में प्रयोग किया जाता है।

विदर्भ मंत्र—इसके द्वारा आकर्षण, वशीकरण तथा विकर्षण सिद्ध किए जाते हैं।

मंत्रों की तीन योनियाँ मानी गयीं हैं—पुल्लिंग मंत्र तथा नपुंसक मंत्र।

पुल्लिंग मंत्र—जिन मंत्रों के अंत में "फट्" अथवा "वषट्" शब्द प्रयुक्त हो ऐसें मंत्र पुल्लिंग मंत्र कहलाते हैं।

स्त्रीलिंग मंत्र–जिन के अंत में वोषट् अथवा 'स्वाहा' शब्द प्रयुक्त हो ऐसे मंत्र स्त्रीलिंग माने जाते हैं।

नपुंसक मंत्र—जिन के अंत में नमः शब्द प्रयुक्त हो ऐसे नपुंसक मंत्र कहलाते हैं।

इस प्रकार "सम्पुट" के आधार पर मंत्र का लिंग निर्णय किया जाता है।

इसी प्रकार मंत्र के अधिष्ठाता के अनुसार भी मंत्र का भेद स्पष्ट होता है जिस मंत्र का अधिष्ठाता कोई देवता या ऋषि हो तो वह 'मंत्र' कहलाता है।

इसी प्रकार जिस मन्त्र की अधिष्ठात्री कोई देवी हो उसे 'विद्या' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मंत्र दोष

मंत्र में कुछ दोष होते हैं। मंत्र साधकों को इन दोषों को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए।

छिन्न—किसी भी प्रकार से मंत्राक्षर पूर्ण न हो—संयुक्ताक्षरों में कोई वर्ण छूट गया हो।

रूद्र—मंत्र की प्रभाव शक्ति अवरूद्ध हो।

शक्तिहीन—किसी शाप वश मंत्र की प्रभाव शक्ति निष्क्रिय कर दी गई हो।

कीलित—मंत्र कीलित हो तब इस स्थिति में साधक को मंत्र को उत्कीलन कर लेने के बाद ही सिद्धि का प्रयास करना चाहिए।

सिद्धिहीन—मंत्र के देवता ने मंत्र को सिद्ध न कर पाने की दशा में कर दिया हो या ऐसा शाप हो कि वह सिद्ध करने के बाद भी अपना फल नहीं देगा।

लुप्त—मंत्र के मूल स्वरूप में से कोई अक्षर, मात्रा या वर्ण कम हो गया हो। मंत्र लुप्त दोष कहलाता है। इसके अतिरिक्त निम्न दोष हैं :—

अक्षर भ्रान्ति ह्रस्व दोष, दीर्घत्व दोष, अभक्ति दोषअलि-

गित, अतिक्रूर, अति क्रुद्ध, मदोन्मत्त दोष, सुषुप्त, मूछित, यहाँ मंत्र दोषों का परिचय दिया जा रहा है।

१७. हृट वीर्य, १८. पराङ्मुख, १९. बधिर, २०, नेत्रहीन, २१. स्तंभित २२. दग्ध, २३. भीत, २४. मलिन २५. भेदित, २६. तिरस्कृत, २७. स्थानभ्रष्ट, २८. कूट. २९. सत्वहीन, ३०. केकर, ३१. पीड़ित, ३२. बीजहीन, ३३. विकल ३४. मंद, ३५. अतिवृद्ध, ३६. सव्रीड़, ३७. निःस्नेह, ३८. अति तृप्त, ३९. हीनांग, ४० कुटिल. ४१. हिंसक।

मंत्रों के दोष तथा निवारण प्रयास के उल्लेख के साथ ही साधक को मंत्र संस्कार का भी ज्ञान होना चाहिए।

जनन संस्कार—मंत्र को सजीव और जाग्रत करने के संस्कारों में जनन संस्कार प्रमुख हैं।

मंत्र-दीपन—इसके लिए मंत्र में (हंस) मंत्र का सम्पुट देकर एक सहस्र मन्त्र दिया जाता है "हंसमन्त्र का सम्पुट" जप करने पर मंत्रोद्‌दीपन होता है।

मंत्र बोधन—मंत्र का बोधन संस्कार करने के लिए "हूं" बीज का संपुट देकर पाँच सहस्र जप करना होगा।

मंत्र ताड़न—मन्त्र का ताड़न संस्कार करने के लिए "फट्" सम्पुट देकर एक सहस्र जप करना चाहिए।

मंत्राभिषेक संस्कार करने के लिए भोजपत्र पर मूलमंत्र को लिखकर—"रों हंसः ओं" मंत्र द्वारा शुद्ध पवित्र जल को अभिमंत्रित किया जाय तत्पश्चात् इस अभिमंत्रित जल से पीपल के पत्ते के द्वारा मंत्र का अभिषेक किया जाय।

मंत्र का वंदना संस्कार—मूल मंत्र को भोजपत्र पर लिखकर उसका पूजन करे। मंत्र को अनार की कलम से लाल

चंदन द्वारा ग्यारह बार लिखकर उसका पूजन करना चाहिए। इसके बाद मंत्र की शरणागति ग्रहण कर उसकी आरती उतारें।

मंत्र जीवन—"स्वधा वषट्"—इस सम्पुट से, सिद्ध किये जा रहे मूल मंत्र को संयुक्त कर एक सहस्र जप करने से मंत्र का जीवन संस्कार होता है।

मन्त्र गोपन—मूल मन्त्र को "ह्रीं "बीज संपुट से संयुक्त करके एक सहस्र जप करने से मन्त्र का गोपन संस्कार होता है।

मन्त्रव्यापन संस्कार—ह्रीं बीज से सम्पुटित करके मन्त्र का सहस्र जप करने से मन्त्र का आव्यापन संस्कार पूरा होता है।

मन्त्र का तर्पण संस्कार—धारोष्ण गो दुग्ध, शहद, जल तथा घृत मिलाकर मूल मन्त्र का एक सौ एक बार तर्पण करने से मन्त्र का तर्पण संस्कार पूरा होता है।

मन्त्र विमलीकरण—मन्त्र का विमलीकरण संस्कार करने के लिए मन्त्र को—ॐ मौं वषट्" सम्पुट से सयुक्त करके मंत्र का एक सहस्र जप किया जाय।

मुहूर्त निर्णय—मन्त्र निर्णय करने के पश्चात साधक को साधना स्थल का चयन करना चाहिए। साधना के मुहूर्त का चयन करना चाहिए। साधना में मुहूर्त चयन की क्रिया "मन्त्र शिखा" के नाम से जानते हैं। मन्त्र साधक को अपनी साधना "विजय मुहूर्त" में प्रारम्भ करनी चाहिए इससे अनिवार्य और त्वरित सिद्धि प्राप्ति होती है।

बीज मंत्र

क्रीं श्रीं हौं हूं ग्लों स्त्री क्षौं वं वं गं क्लीं ऐं हूं ह्रीं।

मुद्रा—इसे तन्त्र की भाषा में "योनिमुद्रा" कहा जाता है। मंत्र साधना में योनि मुद्रा को प्रमुखता प्राप्त है। क्योंकि साधक के लिए सर्वप्रथम अनुकरणीय है। मन्त्र साधना के लिए "योनि मुद्रा" महत्वपूर्ण है।

संकुचित, कम्पित, ध्यान श्रद्धारहित मुद्राएँ दोष युक्त मानी गई हैं। इस प्रकार की मुद्राएँ आकृति के लिये श्रेष्ठ मानी गई हैं। इस प्रकार की मुद्रा में हंसिनी मुद्रा का नाम प्रथम है। इस मुद्रा में अंगूठे के साथ मोड़कर प्रारम्भ की दोनों उंगलियों को अर्ध चन्द्राकार बनाया जाता है कनिष्ठ उंगली को सीधे हंस ग्रीवा की प्रतीक स्थिति में रखा जाता है इस प्रकार की मुद्रा को 'हंसिनी मुद्रा' कहा जाता है।

इसी प्रकार अंगूठे के पास की अंगुली जिसे तर्जनी के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है इसे तथा हाथ की सबसे अन्तिम उंगली जिसे कनिष्ठा कहते हैं। इन दोनों का 'मृगी मुद्रावत' रूप कहा जाता है।

विश्व की आदि मुद्रा प्रणव है यह परम्ब्रह्म परमेश्वर का प्रतीक जिसे कि यौनिक मुद्रा भी कहा जाता है तन्त्र और मन्त्र दोनों ही क्षेत्रों में प्रयोग की जाती है।

योनि मुद्रा में साधक अथवा साधिका अपने उपास्य देवता का पवित्र स्वरूप ध्यान स्थिति में देखते हैं। इसका अभ्यास करें।

इसमें दोनों हाथों के दोनों अंगूठे, दोनों हाथों की प्रारम्भ की

दोनों अंगुलियों को एक दूसरे से इस प्रकार मिलाकर प्रदर्शित किया जाता है कि दोनों हाथों के अंगूठों तथा दोनों हाथों की उंगलियों के मध्य में पीपल के पत्ते के आकार का खाली स्थान योनि मुद्रा के प्रतीक रूप में दृष्टि गोचर होता है। इसे तन्त्र शास्त्र और मन्त्र शास्त्र में दोनों में ही अत्यन्त पवित्र माना है। साधना की यह गोपनीय पवित्र मुद्रा है।

इसी प्रकार मन्त्र साधना में गुप्त मुद्रा 'शिव मुद्रा' है।

इस मुद्रा में साधक शिव स्वरूप का ध्यान करता है। इसमें बांये हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की सभी उंगलियों को गोलाकार मोड़कर उनके भीतर अंगूठे को स्थित किया जाता है इस प्रकार दाहिने हाथ की मुष्टिका आकार में बांये हाथ की हथेली पर स्थित कर यह मुद्रा प्रदर्शित की जाती है।

ब्रह्म का ध्यान करने के लिए पुरुष मुद्रा प्रदर्शित की जाती है इसमें पूरे हाथ की हथेली फैला कर अन्तिम दोनों उंगलियों को मोड़कर सटा लिया जाता है तत्पश्चात् आगे की हाथ की दोनों उंगलियाँ एक-दूसरे से जोड़कर सीधी खड़ी की जाती हैं इनके सामने ही अंगूठे को भी स्थित किया जाता है। इस प्रकार उंगलियों तथा अंगूठे की प्रदर्शित अवस्था के मध्य रिक्त स्थिति जोकि अर्ध चन्द्राकार आकार की होती है। इस मुद्रा को 'पुरुषत्रिक' नाम से सम्बोधित किया जाता है।

अब मैं कुछ शुद्धि मन्त्र दे रहा हूं—

भूमि शुद्धि मन्त्र—

'ॐ अपवित्र पवित्रोवा सर्वास्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स वाह्यांतरः शुचि॥

इस मन्त्र का पाँच बार पाठ कर अपने चारों ओर गंगाजल

को पाँच बार छिड़कने से स्थान पवित्र हो जाता है।

आसन शुद्धि—आसन अनेकों प्रकार के होते हैं। मन्त्र साधना के लिए कुशासन या कम्बल का आसन, मृगचर्म का आसन, व्याघ्र चर्म का आसन इत्यादि सभी प्रकार की साधनाओं के लिये उत्तम है।

आसन पूजा में अक्षत तथा पुष्प लेकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हैं—

आसन पर जल छिड़कें—ॐ मन्त्रदेवों उपासनाय नमः
ॐ इष्टदेबोगआवहनाय नमः।
ॐ गुरु शरणागति नमः।
ॐ श्री योगसनाय नमः।
ॐ श्री वीरासनाय नमः।
ॐ श्री पद्मासनाय नमः।
ॐ श्री शरासनाय नमः।

ऊँ ह्रीं क्लीं आधार शक्ति कमला सनाय नमः ॥

इस प्रकार आसन पूजन करके आसन पर पुष्प दल छिड़क कर साधक अपने साधना आसन को करबद्ध नमस्कार करें। उस साधना स्वरूप के अनुसार ही आसन का प्रयोग करें। साधना में साधक किस आसन का प्रयोग करें। लिख रहा हूं—

कामना सिद्धि के लिये—ऊनी वस्त्र का आसन विशेष कर लाल कम्बल का आसन शुभ माना गया है।

सतोगुणी मन्त्रों की साधना के लिए—कुश का आसन श्रेष्ठ है। रोग नाश तथा आरोग्य प्राप्ति के लिए भी कुशासन उत्तम है। संतान कामना पूर्ति के लिए भी कुशासन सर्वोत्तम

है। मोक्ष प्राप्ति की कामना से की गई समस्त साधनाओं के लिए भी कुशासन शुभ तथा सिद्धिदायी है।

रेशम का आसन समस्त कार्यों में उपयोगी है। धन प्राप्ति के लिये तथा मनोरथ पूर्ति में पूर्ण सहायक है।

अचल सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए तथा किसी भी कार्य में विजयी होने के लिए सिंह चर्म का आसन उपयोगी है।

वैभव सम्पत्ति तथा सांसारिक सुख प्राप्ति के लिए मणि आसन का प्रयोग सिद्धि प्रद है।

दाम्पत्य सुख प्राप्ति अर्थात् पति-पत्नी की परस्पर प्रीति वृद्धि के लिए उष्ट्रासन उपयोगी है।

भाग्योदय के लिए रेशमी वस्त्र का आसन उपयोगी है।

शत्रुनाश के लिए भी व्याघ्रासन उपयोगी है।

समस्त कार्यों की सफलता के लिए मृगचर्म आसन उपयोगी है। यह समस्त प्रकार की साधनाओं के लिए निर्दिष्ट आसन विधान हैं। विधान में अलग-अलग आसन व्यवस्था है।

वशीकरण में—मेषचर्म का आसन उत्तम है।

आर्कषण साधना में—व्याघ्रचर्म का आसन सिद्धिप्रद है।

उच्चाटन कार्यों में—अश्वचर्म का आसन सिद्धिप्रद है।

विद्वेषण में—श्वसनचर्म का आसन उपयोगी है।

मारण कार्यों में—महिष चर्म का आसन।

वामाचारी साधनाओं में तथा पिशाच सिद्धि में—साधना स्थल श्मशान भूमि बताया गया है। साधक के लिए आसन के रूप में मनुष्य के शव के प्रयोग का विधान है।

व्याघ्रचर्म के आसन सिद्धिदायक हैं। मृगचर्म का आसन

मोक्ष प्राप्ति हेतु सिद्धि दायक है। बेंत के आसन पर प्रेम वृद्धि की कामना सफल होती है। इसी प्रकार कम्बल के आसन पर समस्त प्रकार के मंत्रों की जप सिद्धि साधक को प्राप्त होती है। पुष्टिकर्म के मंत्र जाप में कुशासन को विशेष महत्व प्राप्त है। रेशम का आसन तथा कमलासन सर्व कामना सिद्धिदायी कुछ शास्त्रों में उच्चाटन कर्म के लिए विडालचर्म के आसन का भी उल्लेख है इसी प्रकार मारण मोहन उच्चाटन के लिए बकरे की खाल के आसन का प्रयोग है।

आसनों के शास्त्रोक्त रूप में प्रयोग करने पर सफलता प्राप्त होती है।

साधक अपनाये जाने वाले आसन का निर्देश गुरु से भी प्राप्त कर सकता है। वर्जित आसन—जो साधक केवल भूमि को ही अपना आसन बनाकर साधना करता है उसकी साधना कभी सफल नहीं होती है वह दुःख, कष्ट तथा विपत्तियों को प्राप्त करता है। जो साधक पत्थर को आसन के रूप में प्रयोग करता है वह साधना में असफल होने के साथ ही रोगों और मानसिक क्लेशों को प्राप्त करता है। साधना में बांस के बने आसन का प्रयोग करने से वंश नाश होता है। छिद्र युक्त काष्ठ आसन, कील जड़े लकड़ी के पीढ़े का आसन रूप में प्रयोग करने से साधक को दुर्भाग्य, अकाल मृत्यु तथा सामाजिक अवमानना का फल भोगना पड़ता है। घास से बने आसन का प्रयोग साधक के वैभव तेज तथा लक्ष्मी का नाश करता है। तृणासन अथवा पत्तों का आसन प्रयोग करने से साधक में मलिनता तथा चित्त भ्रम उत्पन्न होकर उसके विवेक का नाश होता है। साधक को वस्त्र का भी आसन के रूप में

प्रयोग नहीं करना चाहिए। वस्त्रासन को भी साधना के लिए त्याज्य माना गया है।

तंत्र-मंत्र साधना में दिशा विचार की अपनी अलग व्यवस्था है। साधक को दिशा विचार भी समझ लेना चाहिए।

इसका विवरण निम्न है—

समस्त प्रकार के शाँति कार्यों में—ईशान दिशा।

वशीकरण में—पूर्व दिशा।

विद्वेषण में—नैऋत्य दिशा।

उच्चाटन में—वायव्य दिशा।

मारण में—आग्नेय दिशा की ओर।

सतोगुणी साधनाओं में जप के लिए सूर्योदय से तीन घण्टे पहले का समय अच्छा माना गया है दूसरा अर्ध रात्रि से लेकर प्रातःकाल तक का समय उत्तम माना गया है। रजोगुणी, तमोगुणी मंत्र साधनाओं के लिए तथा पैशाचिक साधना हेतु रात्रि का तीसरा पहर उपयुक्त माना गया है।

प्रातःकाल के बाद तथा दोपहर से पहले वशीकरण।

मध्याह्नःकाल में—विद्वेषण तथा उच्चाटन।

प्रातःकाल में—शाँतिकर्म।

स्तम्भन—दिन के तीसरे पहर में।

मारण में—संध्याकाल में मंत्र जप किया जाता है।

मंत्र साधना में आसन के समान माला का भी महत्वपूर्ण स्थान है। माला साधना का महत्वपूर्ण उपकरण है। पूजा में, उपासना में, तंत्र जप में, मानसिक जप में सभी प्रकार के अनुष्ठान कार्यों, साधना कार्यों में माला का विधान है।

माला साधना और सिद्धि की सीढ़ी है। प्राचीन शास्त्रों में अनेकों प्रकार की मालाओं का वर्णन उपलब्ध है। इनका प्रयोग साधनाओं में सफलता देता है। अरबी और इस्लामी मंत्रों की साधना में, तसबीह का प्रयोग होता है। साधक को माला गुरु से अभिमंत्रित करवा लेनी चाहिए। यह आवश्यक है।

जप करते समय हाथ को हृदय के पास लाकर किसी वस्त्र से ढक कर उंगलियाँ टेढ़ी करके ही जप करना चाहिए। इसकी शुद्ध विधि गुरु से ज्ञात करनी चाहिए। साधक शंख माला कमल गट्टे की माला, तुलसी की माला, रूद्राक्ष की माला, चाँदी सोने तथा कुशमूल की गुट्टियों की माला का प्रयोग किया करें सामर्थ्य अनुसार हीरे, मोती, मणि स्फटिक, मूँगे इत्यादि की मालायें भी प्रयोग कर सकते हैं।

सतोगुणी साधनाओं के लिए तुलसी की माला तथा शैवों के लिए रूद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। माला में एक ही प्रकार के पदार्थ का प्रयोग करना चाहिए। माला के मन के आकार में समान हों इनमें न तो कोई छोटा हो और न कोई बड़ा हो और न कोई मनका कहीं से खण्डित हुआ हो। एक माला में मनकों की संख्या एक सौ आठ होती है तथा सुमेरू अलग से होता है। माला के मनकों को पिरोने के लिए सूत के धागे तथा चाँदी के तारों का प्रयोग किया जाता है। माला पिरोने में माला के दो मनकों के बीच में गाँठ लगाई जा सकती है और न नहीं भी लगाई जा सकती है दोनों स्थितियाँ शुद्ध मानी गई हैं। ग माला के सुमेरु के समीप जो ग्रन्थि लगाई जाय वह या तो ढाई फेरे की हो या तीन फेरे की हो।

माला जप एक आसन पर बैठकर स्थिर तथा एकाग्र मन

से करना चाहिए। जप प्रारम्भ करने से पहले माला को अपने मस्तक से लगा कर माला को श्रद्धापूर्वक नमस्कार करना चाहिए।

जप में न तो अन्य बातें सोचनी चाहिए और न मनके फेरते समय हिलना चाहिए और न माला को ही हिलाना चाहिए। किसी से बात करना भी वर्जित है। माला को वस्त्र से ढककर तथा हाथ उसके भीतर करके ही जप करना चाहिए। माला जपते हुए माला को हाथ से गिरने भी नहीं देना चाहिए। मनके फेरते समय तर्जनी का उनसे स्पर्श नहीं होना चाहिए। माला जप में इन समस्त बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

तंत्र शास्त्र के अनुसार श्मशान स्थित धतूरे को माला शिव की साधना के लिये सर्वोत्तम है। इससे ताँत्रिक साधनायें भी सफल होती हैं। सतोगुणी साधनाओं, के लिए "शंख माला" सिद्धिदायी है।

शत्रु का नाश करने के लिये—कमल गट्टे की माला। समस्त प्रकार के पाप नाश करने के लिये कुश की माला।

पुत्र प्राप्ति के लिए—तुलसी अथवा जीवा पोता को माला। धन सम्पत्ति प्राप्त करने के लिये मूँगे की माला।

धन ऐश्वर्य तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए तीन मनकों की माला।

समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए—सत्ताईस मनकों की माला।

मारण विधान के लिए—सत्तरह अथवा पद्रह मणियों की माला।

समस्त शुभ कार्यों में अंगूठे के अगले भाग से जप करना चाहिए।

मारण तथा आकर्षण कर्म में अंगूठे के अग्रभाग के साथ तर्जनी उंगली तथा कनिष्ठा का प्रयोग होता है। ... गुरु।

तांत्रिक क्रियाओं में माला का प्रयोग इस प्रकार है।

वशीकरण में—हीरे की माला अथवा मोती की माला।

आकर्षण में—गज मुक्ता की माला।

शाँति कर्म में—हाथी दाँत की माला।

विद्वेषण में—बहेड़े की माला प्रयोग करनी चाहिए।

स्तम्भन में—रूद्राक्ष की माला।

मारण में—गर्दभ दंत माला।

माला पिरोने का माध्यम

शाँति कर्म में—माला को कमल के धागे में पिरोया जाता है।

स्तम्भन में—कमल के धागे में।

वशीकरण में—माला घोड़े की पूँछ के बाल में पिरोयी जाती है।

उच्चाटन में—गो पुच्छ के बालों में।

विद्वेषण में—भैंसे की पूछ के बालों में।

मारण कर्म में—मनुष्य की नसों को धागे के रूप में डाला जाता है।

शास्त्रों का कथन है दंभ और अहंकार से ग्रसित धार्मिक कृत्य निष्फल हैं। संकल्प और जल के बिना दान व्यर्थ है और गणना बिना जप नष्ट होता है।

मुद्रा विधान

समस्त पूजा विधानों तथा तंत्र-मंत्र और जप में मुद्राओं का विशेष महत्व है इससे साधक को शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। अतएव मन्त्र साधक विधानों का यथेष्ठ ज्ञान होना चाहिये। तन्त्र-मन्त्र साधना के लिये परिचय नीचे दिया जा रहा है। नित्य पूजन की पाँच मुद्रायें हैं इनका प्रयोग साधक को नित्य स्नानादि कृत्यों को सम्पन्न करते समय करना चाहिए—१. प्रार्थना, २. अंकुश, ३. कुन्त, ४. कुम्भ, ५. तल।

अंगन्यास की मुद्रायें : अंगन्यास की छः मुद्रायें मानी गई हैं—

१. हृदय २. शिर ३. शिखा ४. कवच ५. नेत्र ६. फट।

करन्यास की ६ मुद्राएँ मानी गई हैं—

१. तर्जनी २. मध्यमा ३. अनामिका ४. कनिष्ठा ५. अंगुष्ठा ६. समर्पण अथवा फट्।

जीवन न्यास मुद्रायें ६ भेदों में हैं—

१. जीव २. नाद ३. बिन्दु ४. भिरवंडा ५. लेलिहा ६. सौभाग्य।

भोजन मुद्रा—

१. प्राणाहुति २. अपानाहुति ३. व्यानाहुति
४. उदानाहुति ५. समानाहुति

सन्ध्या मुद्रायें—

१. सम्मुख, २. सम्पुट, ३. वितत, ४ विस्तृत, ५. द्विमुखी, ६. त्रिमुखी, ७. चतुर्मुख, ८. पंचमुख, ९. षट्मुख, १०.

अधोमुख, ११. व्यापक, १२. आँजलिक, १३. शकट्, १४. यम-पाश, १५. ग्रथित, १६. सम्भोन्मुखी, १७. प्रलम्ब १८. मुष्टिक १९. मत्स्य, २०. कूर्म, २१. वाराह, २२. सिंह आक्रांतित, २३. महाआक्रान्तित, २४. मुद्गर, २५. पल्लव, २६. सुरभि, २७. ज्ञान मुद्रा, २८. वैराग्य मुद्रा, २९. शंख मुद्रा, ३० योनि मुद्रा, ३१. अधोमुखी, ३२. उर्ध्वमुखी, ३३. पंकज मुद्रा।

देवीपासना की मुद्राएं ६ मानी गई हैं—१. आवाहन, २. स्थापना, ३. सामीप्य, ४. अवगुंठन मुद्रा, ५. धेनुमुद्रा, ६. सरलीकरण मुद्रा।

५१ मंच देव मुद्रायें—१. शंख, २. चक्र, ३. गदा, ५. पद्म, ६. पाश, ७. अंकुश, ८. कौस्तुभ, ९. श्री वत्स, १०. ज्ञान, ११. वर, १२. परशु, १३. मूसल, १४. वृष्टि, १५. खड्ग, १६. धनुष. १७. बाण, १८. अभय, १९. आनन्द, २०. वंशी, २१. त्रिशूल, २२. डमरू, २३. नंदी, २४. सिंह, २५. मयूर, २६. हस्ति, २७. गरूड़, २८. मूषक, २९. दंत, ३०. मोदक, ३१. कूर्म, ३२. वाराह, ३३. मत्स्य, ३४. बीजपुरम्, ३५. अक्ष, ३६. सर्प, ३७. ग्राह, ३८. योनि, ३९. शिश्न, ४०. विघ्न, ४१. काम, ४२. बिल्व, ४३. नारसिंही, ४४. प्रणव, ४५. प्रणाम, ४६. समर्पण, ४७. प्रणव, ४८. प्रणाम, ४९. आवाह्न, ५०. विसर्जन, ५१. ध्यान।

इनमें सभी प्रमुख देवों तथा देवियों का समष्टि रूप है।

त्रिपुर मुद्राएं अपने निर्धारित स्वरूप में इस प्रकार हैं।

१. सर्वविक्षोभ कारिणी मुद्रा।

२. सर्वकर्षणी मुद्रा।

३. सर्व-उद्वेलिनी मुद्रा।

४. सर्व-विकर्षणी मुद्रा ।
५. सर्व-उन्मादिनी मुद्रा ।
६. सर्व-आकर्षणी मुद्रा ।
७. सर्व-वश्यकरी मुद्रा ।
८. सर्व-अभय मुद्रा ।
९. सर्व-वरदायिनी मुद्रा ।
१०. महाँकुशी मुद्रा ।
११. आनन्द मुद्रा ।
१२. बीज मुद्रा ।
१३. योनि मुद्रा ।

प्रमुख शक्ति मुद्राएं—काली, महाकाली, दुर्गा, महालक्ष्मी, तारा तथा भुवनेश्वरी प्रमुख देवियों की शक्ति उपासना सम्बन्धी मुद्राएँ नीचे दी जा रही हैं।

१. कुलिश, २. अंकुश, ३. वज्र, ४. वर, ५. अभय, ६. खड्ग, ७. पाश, ८. धनुष, ९. बाण, १०. त्रिशूल, ११. मूसल, १२. चर्म, १३. दुर्ग, १४. महायोनि, १५. कपाल, १६. भूतिनी, १७. मुंड, १८. महायोनि, १९. अक्षमाला, २०. बीणा, २१. पुस्तक, २२. व्याख्यान २३. ज्ञान, २४. वैराग्य, २५. भक्ति, २६. धूमित्ति, २७. व्यापक, २८. आंजलिक, २९. सौभाग्य, ३०. खेचरी, ३१. योनि मुद्रा, ३२. निर्वाण, विपरीत कारिणी ।

कुण्डलिनी जागरण में सहायक प्रमुख तीन मुद्राएँ मानी गई हैं।

१. शक्ति चालिनी, २. योनि, ३. खेचरी नाम से विख्यात है।

बन्धु मुद्राएँ

योग में अनेकों मुद्राओं का वर्णन है।

मूलबंध मुद्रा, जलंधरबंध मुद्रा, उड्डीयानबंध मुद्रा महाब मुद्रा।

इससे साधक में अद्भुत रूप शक्ति अष्टसिद्धि प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

दस महामुद्राएँ निम्न हैं—

१. मूलबंध मुद्रा	२. उड्डीयानबंध मुद्रा
३. जालंधरबंध मुद्रा	४. महाबंध मुद्रा
५. महाभेद मुद्रा	६. महामुद्रा
७. विपरीतकरणी मुद्रा	८. बज्रोली मुद्रा
९. खेचरी मुद्रा	१०. शक्ति चालिनी मुद्रा।

मुद्रा विचार

शाँति कर्मों में	पद्म मुद्रा का प्रयोग करें
वशीकरण में	पाश मुद्रा तथा गदा मुद्रा
विद्वेषण में	मूसल मुद्रा
स्तम्भन में	गदा मुद्रा
उच्चाटन में	वज्र मुद्रा
मारण में	खड्ग मुद्रा

पूजा विधान के प्रकार

यहाँ पंचोपचार, दसोपचार, षोडशोपचार तथा पचार पूजा विधान स्पष्ट किये जा रहे हैं।

पंचोपचार

१. गंध	२. पुष्प	३. धूप
४. नैवेद्य	५. दीप	

दसोपचार

१. पाद्य	२. अर्घ्य	३. आचमन
४. मधुपर्क	५. धूप	६. दीप
७. पुष्प	८. नैवेद्य	९. आचमनीय
१०. समर्पण (संकल्प सहित)		

षोडशोपचार

१. स्नान	२. पाद्य	३. अर्घ्य
४. आचमनीय	५. वस्त्र	६. पुष्प
७. आभूषण	८. गंध	९. धूप
१०. दीप	११. नैवेद्य	१२. आचमन
१३. स्तवन	१४. ताम्बूल	१५. तर्पण
१६. प्रणिपात		

अष्ट दसोपचार

१. आवाहन	२. आसन	३. पाद्य
४. अर्घ्य	५. स्नान	६. वस्त्र
७. आचमनीय	८. यज्ञोपवीत	९. गंध
१०. पुष्प	११. धूप	१२. आचमन
१३. नैवेद्य	१४. आभूषण	१५. माल्यार्पण

१६. अनुलेपन १७. ताम्बूल, पुंगीफल १८. प्रणिपात ।

भूमिशोधन

सर्वप्रथम भूमि का प्रक्षालन कर उसे गोबर से लीप लेना चाहिए । फिर इस लिपी हुई भूमि पर गेहूं या जौ के आटे से चौका बनाना चाहिये । इसके चारों कोनों पर कलश या घट स्थापित करना चाहिये ।

पूजा स्थल पर चौका बनाने और कलश स्थापित करने के बाद आटे के बने चौके पर अपने ईष्ट देवता या आराध्य की मूर्ति, प्रतिमा या चित्र स्थापित करना चाहिये ।

संकल्प विधान

जो व्यक्ति पूजा कर रहा हो वह जिस देवता या देवी की पूजा कर रहा हो उसका नामोच्चार करे—अमुक गोत्रोत्पन्ने (साधक का जो गोत्र हो उसका उच्चारण करे) अमुक शर्माहम् (साधक अपने राशि नाम का उच्चारण जातीय सम्बोधन सहित करे) अमुक तिथो (पूजन के दिन जो तिथि हो उसका उच्चारण करे) अमुक वासरे (पूजन के दिन जो दिन हो उसका नाम उच्चारण करे) अमुक नक्षत्रे (पूजन के दिन जिस नक्षत्र हो उसका उच्चारण करे) त्वाम् (जिस देवता या देवी की साधक पूजा कर रहा हो उसके नाम का उच्चारण करे) आवाहनम् करिष्यामि (आपका आवाहन कर रहा हूं (इहागच्छ-तिष्ठ (आइये और विराजमान होइये) ।

इस प्रकार देवी देवता का संकल्प सहित आवाहन कर उनको आसन देना चाहिए ।

आवाहन करते समय साधक अपनी अनामिका उंगली में कुशा की अंगूठी पहन दोनों हाथ अंजलि मुद्रा में दोनों घुटनों के बीच होने चाहिये। इसके साथ ही दाहिने हाथ में जो, तिल या चावल हो, जो आवाहन मन्त्र को पूरा करते ही देवता के ऊपर चढ़ा देना चाहिये।

पूजन उपादान समर्पण विधि

पूजा में देवता की विधि इस प्रकार है—इदम् आसनम् समर्पयामि ग्रहाण मम् सम्मुखो भत्तवा। (मैं आसन समर्पित कर रहा हूं) कृपया ग्रहण कीजिये—

इदम् वस्त्रम् समर्पयामि (आपको वस्त्र समर्पित कर रहा हूं…)।

इदम् पुष्पम् समर्पयामि (आपको पुष्प समर्पित कर रहा हूं…)।

इदम् गंधम् समर्पयामि··आपको गंध समर्पित कर रहा हूं…।

इदम् चन्दनम् समर्पयामि (चंदन)
इदम् धूपम् समर्पयामि (धूप)
इदम् नैवेद्यम् समर्पयामि (भोग)
इदम् दीपम् समर्पयामि (दीप)
इदम् ताम्बूलम् समर्पयामि (पान)
इदम् पुंगीफलम् समर्पयामि (सुपारी)
इस प्रकार पूजा विधि पूरी करनी चाहिये।

मारण प्रयोग—बिना अस्त्र-शस्त्र प्रयोग किए मार देना

मारण प्रयोग कहलाता है। इसका प्रयोग बेतरह संकट उत्पन्न होने पर करना चाहिए।

शास्त्रों का कथन है—

मारणं न वृथा कार्यं यस्य करय बदाचन।
प्राणान्त स कटे जाते कर्त्तव्यं भूतिमिच्छिता ।।

कभी किसी के ऊपर तथा अकारण मारण प्रयोग नहीं करना चाहिए। केवल स्वयं को मृत्यु तुल्य संकट स्थिति में जानकर ही इसका प्रयोग करना चाहिए।

"मूर्खेण तु कृतं तंत्र स्वस्मिनेव समापयेत।
तस्मात् रक्ष्यं सदात्मानं मारण न क्वचित चरेत ।।"

मूर्ख अविवेकी व्यक्ति द्वारा किया गया मारण प्रयोग स्वयं उसी को नष्ट कर देता है।

अत्याचारी पापी और आसुरी प्रवृत्ति के व्यक्ति पर मारण प्रयोग किया जा सकता है।

षटकर्मों में मारण प्रयोग की विधि अत्यन्त कठिन है इसके साथ ही यह प्रयोग भयानक तथा बेतरह खर्चीला भी है। फिर भी तंत्र-मन्त्र विज्ञान में सम्मिलित होने के कारण इसका विवरण प्रस्तुत है। षट्कर्मों की अलग-अलग देवियाँ हैं। साधक को जिस की सिद्धि प्राप्त करनी हो उस देवी की आराधना, करके प्रसन्न करना चाहिए।

शान्ति कर्म की देवी—अधिका मानी जाती है। वास दोनों हाथ पर माना जाता है।

वशीकरण की देवी—सरस्वती मानी जाती है। इनका वास जिव्हा पर माना जाता है।

स्तंभन की देवी—लक्ष्मी मानी जाती है। इनका वास मस्तक पर माना जाता है।

विद्वेषण की देवी—ज्येष्टा मानी जाती है इनका निवास स्थान बद्धि पर माना जाता है।

मारण की देवी—इस कर्म की अधिष्ठाती देवी काली हैं जो कि मारण कर्म में भद्र काली के नाम से भी जानी जाती है।

शान्ति कर्म—असाध्य रोगों का निवारण, दुष्ट ग्रहों की शांति, भूत-प्रेत बाधा निवारण, स्थान शांति देह रक्षा तथा समस्त प्रकार के अशांति और उपद्रव उत्पन्न करने वाले कार्यों का शमन इसके द्वारा संभव है।

मोहन—मोहन कृत्य तथा समस्त प्रकार के संमोहन-वस्तु -स्थान व्यक्ति पशु तथा समूह वशीकरण।

स्तंभन—स्तंभन शक्ति वीर्य, स्तंभन, मनुष्य, मेघ स्तंभन, शत्रु स्तंभन, गति स्तंभन, जल स्तंभन तथा सर्वस्तंभन।

विद्वेषण : शत्रु वर्ग विद्वेषण, स्थान विद्वेषण, मित्रता विद्वेषण, प्रणय विद्वेषण, मति विद्वेषण एकता विद्वेषण इत्यादि।

उच्चाटन—स्थान उच्चाटन, देश उच्चाटन, पद उच्चाटन, रुचि उच्चाटन, तथा ग्राम उच्चाटन इत्यादि।

वशीकरण—राजा, प्रजा, पशु, स्त्री, पक्षी, शत्रु, मित्र तथा ग्राम एवं समाज वशीकरण।

आकर्षण—समस्त प्रकार से तथा समस्त स्थितियों में।

भूत-प्रेत पिशाचादि आकर्षण—इनकी सिद्धि द्वारा षट्कर्मों के अभीष्ट को प्राप्त करना।

भूत ज्वर प्रकोप—एकार्थ रूप तथा बहुरूप प्रयोग।

षट्कर्म का क्षेत्र इतना विशाल और व्यापक है कि इसे मंत्र शास्त्र का हृदय मान लेना चाहिए।

षट्कर्म विधान की किसी भी सिद्धि को ले लीजिए इनका चरम स्तर ईश्वर तक पहुंच जाता है। इनकी शक्ति इतनी है जो कही नहीं जा सकती है लेकिन सबसे कठिन इस स्तर तक पहुँचना ही है। आज मनुष्य द्वारा षट्कर्मों की साधना केवल लौकिक मनोरथों की पूर्ति तक ही सीमित है।

समिधा (सामग्री)

शांति कर्म तथा सौभाग्य, श्री लक्ष्मी इत्यादि की प्राप्ति के लिये बिल्व पत्र बरगद की तथा समस्त दूध वाले वृक्षों के पत्र तथा लकड़ी।

वशीकरण में—पीपल आम या इन्हीं वृक्षों की लकड़ी तथा पत्तों का प्रयोग करना चाहिए।

उच्चाटन—स्तंभन, विद्वेषण तथा मारण कर्म में—नीम, कुचेरू तथा धतूरे की समिधा प्रयोग की जाती है।

प्रिय पाठकों। भूत-प्रेतों का निवास स्थान श्मशान और पीपल होने के कारण भूत-प्रेत साधना में श्मशान साधना से सम्बन्ध जोड़ना आवश्यक है, अस्तु, आपको श्मशान से नाता जोड़ने के लिए नियमित श्मशान आना जाना आवश्यक है। वहाँ बैठकर ईष्ट देव, गुरू देव, का शान्त, एकाग्र मन से चिंतन मनन करें। श्मशान में यह आप कभी न भूलें कि आपके ईष्ट देव, गुरुदेव आपके साथ हैं इसलिए आपका कुछ अनिष्ट होने वाला नहीं है।

अपनी इस साधना या अभ्यास के मध्य ध्यान रखें, मूर्खता पूर्ण, असामाजिक, अशिष्टाचार पूर्ण, दिखावापूर्ण कार्य कदापि न करें। श्मशान का प्रयोग आपने केवल प्रतीकात्मक रूप में और मनोबल ऊँचा उठाने के लिये ही करना है।

इस प्रकार श्मशान अध्ययन करना चाहिए।

तांत्रिक क्रियाओं से पहले

तंत्र कोई अलौकिक शक्ति नहीं है, वरन् एक शुद्ध विज्ञान है।

तन्त्र का कार्य देखकर जनसाधारण हैरान हो जाते हैं और उनका यह भ्रम बढ़ जाता है कि यह कोई अलौकिक शक्ति है, जिसे व्यक्ति केवल कठोर साधना के बल पर ही प्राप्त कर सकता है। इस भ्रम को स्वयं तांत्रिकों द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। इसमें उनका दोष नहीं है। उनको भी गुरू अथवा ग्रंथों द्वारा मिली साधना में छिपे विज्ञान का पता नहीं है। इस कारण वह भी उसे अलौकिक मानने लगते हैं। इस सृष्टि में कोई भी क्रिया अकारण नहीं होती है। प्रत्येक क्रिया के पीछे कोई न कोई कारण है। यही कारण उस क्रिया का विज्ञान प्रकट करता है। गाय को आप कुछ भी न खिलाइये, वह जब भी देगी, दूध ही देगी। सर्प को अमृत पिलाइये वह जब भी उगलेगा, विष ही उगलेगा। दोनों के शरीर की रचना—विधान ही कुछ ऐसा है। गाय कागज खाकर भी दूध देती है। उसके शरीर की प्राकृतिक क्रिया है। इसी प्रकार अगर कोई तांत्रिक हाथ में कागज लेकर उसे मसलकर दूध निकाल देता है तो अलौकिक काम नहीं होगा उसने वही क्रिया की, जो गाय ने

कागज पत्ता खाकर की। हम अलौकिक इसीलिए मानते हैं कि हमें उस क्रिया का ज्ञान नहीं है।

बीते समय की बहुत सी अलौकिक बातें आज साधारण हैं। जब मनुष्य ने जन्म लिया तो वह बादल बिजली, अ[illegible] और पानी से डरता था लेकिन आज इन सबको उसने मु[illegible] में बन्द कर लिया है, नभ में चमकने वाली बिजली को कैदकर उसने मानव जीवन में क्रांति ला दी है। हवा में उड़ना, साधारण बात हो गई और तो और चन्द्रमा पर भी कदम रख दिया। कल तक जो चन्द्रमा अलौकिक माना जाता था, अब वह एकदम साधारण बात हो गयी है। मनुष्य वहाँ पहुंच चुका है। मनुष्य का मस्तिष्क सबसे उर्वर रहा है। वह बराबर खोज करता रहा है प्राचीन काल में जो लोग ऐसा करते थे, वह साधु, महात्मा, योगी ऋषि और तांत्रिक कहलाते थे। वह आविष्कार करते थे और अपनी उपलब्धियाँ जन-कल्याण के लिए प्रस्तुत करते थे। उनमें धार्मिक भावनाएँ और ईश्वर के प्रति आस्था थी। इस कारण अपनी प्रत्येक उपलब्धि को इसमें मिला दिया करते थे। आज हवन, साधना, पूजा, पाठ आरती, उपासना और मंत्र आदि सब धार्मिक अंग बन गए हैं इनका वैज्ञानिक पक्ष धूमिल पड़ गया है।

उस युग के चिन्तक इस बात को जानते थे कि लोग धर्म और ईश्वर के नाम से डरते हैं और उसमें श्रद्धा भी रखते हैं अतएव अपनी खोज को झट उसमें शामिल कर देते थे, ताकि लोग उनको मानने लगें। सीधे-सीधे बतलाने का अर्थ था शायद ही उसे कोई माने। गाय को ही लें। उपयोगी जीव होने के कारण उसे माता बतलाकर उसमें देवताओं की स्थापना कर दी, ताकि लोग हत्या करके उनका वंश ही न समाप्त

कर दें, जिस प्रकार अब तक न जाने कितने वन्य जीव समाप्त हो गए हैं। इस प्रकार गाय जैसे उपयोगी जीव को सुरक्षित कर लिया गया। अगर सीधे-सीधे उसका उपयोग बतलाया जाता तो शायद समाप्त हो गयी होती।

सारांश यह है कि विज्ञान को टोटकों और धार्मिक क्रियाओं में लपेट दिया गया है। इस कारण शिक्षित समुदाय आज इससे दूर भाग रहा है। लेकिन तथ्य इसके विपरीत हैं। इस तरह की तमाम क्रियाएं सर्वथा वैज्ञानिक हैं। अगर एक-एक क्रिया में निहित विज्ञान का विवेचन किया जाये तो फिर हजारों पृष्ठ भी कम होंगे। अतएव केवल क्रियाएँ ही दी गयी हैं। ऐसी क्रियाएँ जो सरल हैं, सम्भव हैं। साथ ही उनके पीछे छिपा विज्ञान देख और परख लिया गया है। यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी जाये कि यह समस्त तांत्रिक क्रियाएँ केवल आपका द्वार खोलती हैं। मार्ग सामने है। उस पर चलना आपका काम है राह में बाधा नहीं आयेगी। यह निश्चित है कर्म तो आपको करना ही होगा। हमारे यहाँ धर्म और विज्ञान का मिश्रण बन गया है। अनेकों प्राचीन ग्रंथों से चुनकर इनको लिया गया है कि आज के व्यस्त मनुष्य के पास इतना समय, श्रम और धन नहीं है कि वह इन पर खुले हाथों लगा सके। अतएव सरल से सरलतम साधनाऐं दी गई हैं। इनके द्वारा आप इच्छित कार्य स्वयं कर सकते हैं। आपका उद्देश्य पूर्ण हो यही मेरी कामना है। कुलार्णव तन्त्र में यह स्पष्ट लिखा गया है कि सतयुग में श्रुति के विधानानुसार, त्रेता में स्मृतिनुसार, द्वापर में पुराणानुसार और कलियुग में तंत्रानुसार ही कर्म करना उचित होगा।

भगवान शिव ने एक समय कहा था—कलियुग में आगम

तन्त्र मार्ग के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं है। इस बात को मैं (भगवान रुद्र) स्मृति, श्रुति एवं पुराणादि में भी कई बार कह चुका हूं। कलियुग में तंत्रोक्त साधना द्वारा पंडित, साधक देवी-देवताओं की आराधना, उपासना करेंगे और इसी (तन्त्र) के द्वारा समस्त जड़ और चेतन की सद्गति होगी।

वास्तव में "तांत्रिक साधना" में किसी भी प्रकार का बंधन या नियम नहीं है और जो नियम है भी वह कठोर हैं। इसी तन्त्र द्वारा साधना सम्पन्न करने की अधिक से अधिक व्यक्ति चेष्टा करते हैं। शायद तन्त्र में झूठ में झूठ मिथ्याचरण का आडम्बर का समावेश हो गया है। आज स्थिति इतनी गंभीर हो गयी है कि तांत्रिक "पंचमकार" से आगे सोचने के लिए तैयार नहीं है और जन साधारण "वाम-मार्ग' को ही तंत्र समझ बैठा है। जबकि वास्तविक स्थिति एकदम इसके विपरीत है।

खेद का विषय है भारत जहाँ नारी के विषय में कहा गया —यंत्र नारि पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता अर्थात जहाँ—नारी को आदर सम्मान दिया जाता है, वहाँ देवता वास करते हैं। देवी पर्याय बन गया है स्त्री का। लेकिन आज का तांत्रिक स्त्री को केवल 'भैरवी' के रूप में ही देखता है और उसे केवल यौनतुष्टि का एक साधन मानता है तन्त्र शास्त्र स्पष्ट कहते हैं—जहाँ भगवान शिव हैं वहीं शक्ति है। शक्ति के बिना शिव शव के समान है। सम्पूर्ण तन्त्र शास्त्र में "शिव शक्ति" जोड़ी पूज्य है।

तन्त्र-शास्त्र का इतिहास बड़ा ही प्राचीन है। तन्त्र का चलन लगभग हर युग में था।

वैदिक युग में, पौराणिक युग में, बौद्धकाल में, नाथ सम्प्रदाय में उल्लेखनीय बात यह कि बाबा गोरखनाथ ने ही शाबर मन्त्रों की रचना की थी। जैन धर्म में, शैव सम्प्रदाय में, कहने का उद्देश्य यह है कि हर युग, हर सम्प्रदाय में तन्त्र को मान्यता प्राप्त थी।

तन्त्र को लेकर अनेक भ्रांतियाँ फैली हैं। कुछ तो कलियुग की देन मानते हैं, तो कुछ तिब्बत, चीन मणिपुर आसाम की देन कहते हैं। वास्तव में तन्त्र भगवान शिव के मुख से निकला है और माँ शक्ति (पार्वती) ने सुना और जगत के पालनहार भगवान विष्णु ने जिसे अनुमोदित किया है वही आगम (तन्त्र) है।

"आगतं शिव वस्त्रेभ्यो,ग तंच गिरिजामुखे।
मतं च वासुदेवस्य, तत आगम उच्यते॥"

तन्त्र के पाँच मुख्य अंग हैं—

१—पटल २—पद्धति ३—कवच
४—सहस्रनाम ५—स्तोत्र

इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

१—**पटल**—पटल में देवता का जप, होम का विधान एवं मंत्र के उत्कीलन का विवरण भी रहता है। हर देवता, देवी का अपना विशेष पटल होता है।

२—**पद्धति**—देवी देवताओं के पूजन आदि के शास्त्र विधान को "पद्धति" कहते हैं इसमें पूजन का पूर्ण विवरण रहता है।

३. **कवच**—जैसा कि नाम से ही विदित है। इसमें हर देवी

देवताओं का कवच होता है जो साधक की रक्षा करता है। कुछ तांत्रिक ओझा इससे झाड़ फूंक का भी काम लेते हैं।

४. **सहस्रनाम**—उपासना, आराधना, साधना के मध्य देवता के लगभग १०००० नामों का वर्णन रहता है, जो देवता के गुणधर्म को प्रकट करते हैं, यह सिद्ध मन्त्र स्वरूप होते हैं।

५. **स्तोत्र**—किसी आराध्य देवी देवता की स्तुति को ही स्तोत्र कहते हैं। इसमें देवी देवता का गुणगान प्रार्थनाएं रहती हैं।

विष्णुर्वरिष्ठो देवानां ह्रदयनामुधिर्यथा।
नदीयां च यथा गंगा पर्वतानां हिमालयः॥
तथा समस्त शास्त्राणां तंत्र शास्त्र मुनत्तमम्।
सर्व काम प्रद पुण्य तयं वे वेद सम्मतम्॥

अर्थात—देवताओं में भगवान विष्णु, समस्त सरोवरों में समुद्र, नदियों में गंगा और पर्वतों में सर्वश्रेष्ठ हिमालय है उसी प्रकार शास्त्र सम्मत शास्त्रों में सर्वश्रेष्ठ 'तंत्रशास्त्र' है। खेद का विषय है कि आज इसमें आडम्बर, छल और काल्पनिक चमत्कार आ जाने से यह दूषित हो गया है। 'कुलार्णव तंत्र' में पंचमकार को स्पष्ट किया गया है।

मद्य पानेन मनुजो यदि सिद्धि लभेत वे।
मद्य पानरता सर्वे सिद्धि गच्छन्तु मानवः॥
माँस भक्षण मात्रेण यदि पुण्या गतिर्भवेत।
लोके माँसः शिनःस्वौ तुण्य भात्नों भवन्वि हि॥

खेद का विषय है, आज का तांत्रिक 'पंचमकार' को ही 'तंत्र' और 'भैरव' को सिद्धि का माध्यम समझ बैठा है। इसी

कारण तंत्र का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है और तांत्रिक, ढोंगी, लुटेरे और पाखंडी करार दिये जा रहे हैं।

मेरे निजी अनुभव में कुछ ऐसा आया है कि जिसको भी तनिक-सा तंत्र ज्ञान हो गया, ताँत्रिक शब्दावली कंठ हो गयी बन बैठा है तांत्रिक। कुछ हड्डियाँ, खोपड़ियाँ, भले ही यह चाहे बन्दर की ही क्यों न हो, वह तथाकथित ताँत्रिक अपना रंग जमा लेता है, अब रह गई भीड़ एकत्रित करने की बात यह विज्ञापन और दलाल बन्धुओं के माध्यम से एकत्रित कर ही लेते हैं। अब अनुष्ठान के नाम पर धन, बलि के नाम पर मुर्गा, धार के नाम पर मदिरा लेनी प्रारम्भ कर देते हैं। मारे जाते हैं भोले भक्तगण जो उनके माया-जाल में फंस जाते हैं। इस प्रकार धूर्त ताँत्रिकों की ठगी का अन्तहीन सिलसिला आज भी जारी है। इन लोगों के कारण ही प्राचीन तंत्र विद्या और सच्चे तांत्रिक बदनाम हो रहे हैं। तंत्र एक विद्या है, एक उपासना आराधना है मूल बात तो यह है कि एक वैज्ञानिक पद्धति है।

तंत्र साधना की दिशा में आगे बढ़ने से पहले हमें तंत्र विद्याओं के विषय में भली-भाँति जान लेना चाहिये। तन्त्र शास्त्र में केवल १८ विद्याओं का वर्णन है। उनमें से केवल १० ही विद्याएँ प्राप्त हैं। इन १० महाविद्याओं को दो भागों में विभक्त किया गया है।

१. काली कुल   २. श्री कुल

काली कुल के अन्तर्गत निम्न साधनाएं आती हैं—

१. काली   २. तारा
३. भुवनेश्वरी   ४. छिन्न मस्ता

श्री कुल के अन्तर्गत—

१. त्रिपुर सुन्दरी २. भैरवी

३. षोडशी साधना ४. कमला

५. धूमावती ६. मातंगी

तंत्रशास्त्र में यह दस महाविद्याएं हैं। तंत्र मार्ग में संस्कार को भी बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

गंध—पूजा, उपासना, यत्र लेखन के लिए गंध का प्रयोग होता है। श्वेत चंदन, अष्ट गंध, गोपी चंदन, सिन्दूर, केशर, कस्तूरी, कुमकुम, गुलाब, काजल आदि का प्रयोग होता है अष्टगंध में चंदन, अगर, हल्दी, कुमकुम, गोरोचन, शिलाजीत, जड़मांसी बालछड़ तथा श्वेत कपूर मिलाया जाता है।

अक्षत—चावलों का प्रयोग लगभग सभी साधनाओं, आराधनाओं में प्रचुरता से होता है।

पुष्प—पत्र पुष्प का प्रयोग भी तंत्र में किया जाता है। फूलों का चयन साधनाओं के प्रकार पर किया जाता है।

धूप—धूप के प्रयोग से भी हमारे साधक भली-भाँति परिचित हैं। यह वातावरण को सुगन्धित और पावन बनाती है।

दीप—वास्तव में दीप अग्नि देवता का प्रतीक है। प्रत्येक पूजा में दीप प्रज्जवलित करने का विधान है।

हवन कुण्ड—तंत्र शास्त्र में हवन कुण्ड का महत्व अब गोपनीय नहीं है मंत्र जाप में दशांश का हवन करना आवश्यक बतलाया गया है। हवन कुण्ड के प्रयोग का विस्तार नीचे दे रहा हूं।

वश्य कर्म के लिए—हवन कुण्ड तिकोना होना चाहिये मारण कर्म में भी हवन कुण्ड तिकोना ही होना चाहिए।

विद्वेषण व उच्चाटन में हवन कुण्ड चौकोर होना चाहिए। अगर आप हवन कुण्ड इस मापदण्ड से नहीं रखते हैं तो सिद्धि की सम्भावना बड़ी ही क्षीण रहती है।

हवन सामग्री—शांति कर्म में तिल,घी, पीपल की लकड़ियों से हवन किया जाता है स्तम्भन कर्म में चमेली के फूल बेलपत्र, काले तिल, चंदन का चूरा, जौ, दही, कमलगट्टा व अन्न से हवन किया जाता है। आकर्षण में चिरौंजी व बेलपत्र से हवन किया जाता है। उच्चाटन में कौए के पंखों का हवन किया जाता है, लेकिन यह निंदनीय कर्म है साधक इसे केवल जानकारी तक ही सीमित रखें।

अब मैं नीचे मंत्र सिद्धि के लिए उपयुक्त समय ज्योतिष के अनुसार दे रहा हूं।

नक्षत्र विचार—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, पूर्वा, फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति आदि-आदि।

दिन—रविवार, सोमवार, गुरुवार एवं शुक्रवार।

तिथि—पूर्णिमा, द्वादशी, एकादशी, दशमी, सप्तमी, पंचमी तृतीया एवं द्वितीया।

लग्न विचार

मेष—धन सम्पत्ति देने वाला समय है।

वृष—साधक का घोर अहित करने वाला समय है।

मिथुन—कुटुम्ब को समाप्त करने वाला समय है।

कर्क—सर्व सिद्धिदायक समय है।

कन्या—यह लगन धन देने वाला है।

तुला—पूर्ण सिद्धि देने वाला समय है ।

वृश्चिक—चाँदी और सोना प्रदान करने वाला समय है ।

धनु—मान यश को हानि देने वाला समय है ।

मकर—अच्छा समय है । पुण्य की वृद्धि होती है ।

कुम्भ—सुख समृद्धि देने वाला समय माना गया है ।

मीन—दुःख देने वाला समय है ।

दिशा ज्ञान—साधक मंत्र जाप के समय निम्न प्रकार से बैठे तो सिद्धि प्राप्त होने की सम्भावना रहती है ।

दिशा चक्र इस प्रकार है—

प्रिय पाठकों ! मैं एक बार फिर स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि तंत्र-शास्त्र किसी की बपौती या निजी धरोहर नहीं है आप प्रयत्न कर इसे प्राप्त कर सकते हैं । आप में से कोई भी इन बातों का निष्ठापूर्वक पालन कर सफल तांत्रिक बन सकता है ।

१. दृढ़ इच्छा शक्ति ।
२. पक्की श्रद्धा ।
३. कम बोलकर ।
४. नित्य साधना कर ।
५. परनिंदा का त्याग कर ।
६. काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह का त्याग कर ।
७. लालच को छोड़कर ।
८. सत्य पथगामी बनकर ।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व आप जितनी सावधानी बरतते हैं उतनी ही सावधानी साधना के मध्य भी बरतें और साधना के पश्चात सबसे अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है ।

मेरे स्वयं के अनुभव में ऐसे अनेक साधक आये हैं तो तंत्र-मंत्र-यंत्र ज्ञान पाने की जिज्ञासा तो रखते हैं, लेकिन गुरु के प्रति जो समर्पण और आत्मीयता का भाव होना चाहिए उस का नितांत अभाव उनमें पाया गया है। आप गुरु के प्रति पूर्णतः समर्पित रहें। गुरु ही आपको सिद्धि तक ले जा सकता है।

मन्त्र जपने की माला कैसी हो ? यह मैं एक बार फिर दुहरा रहा हूं।

अन्त में साधना के लिए माला की आवश्यकता होती है मालायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे—स्फटिक, रुद्राक्ष, तुलसी, कमल गट्टे, मोती, हकीक की माला। हर साधना के लिए अलग-अलग मालाओं की आवश्यकता होती है। मालाओं का प्रयोग निम्न प्रकार करना चाहिए।

१. माला रुद्राक्ष, स्फटिक, मोती, कमलगट्टा, शंख, आदि में से किसी एक की बनी होनी चाहिए।

२. मालाओं में अनुलोम-विलोम का प्रयोग आवश्यक है।

३. स्तम्भन तथा वशीकरण में जाप करते समय अंगूठे के अगले भाग में माला जपनी चाहिए, आकर्षण या वशीकरण कार्य में अंगूठे व अनामिका के सहयोग से माला जपी जाने का नियम है, मारण कार्यों में अंगूठे व कनिष्ठिका के सहयोग से माला जपने का प्रावधान है।

४. शत्रु नाश के लिए कमल गट्टे की माला, सम्पत्ति प्राप्ति के लिए जीव पुत्रिका की माला और सभी प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति हेतु रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए।

५. आपको यह भी भली-भाँति जान लेना चाहिए कि

माला की सभी मणियें एक समान होनी चाहिएँ और एक ही पदार्थ के बने होने चाहिए। उनमें विजातीय पदार्थ न हों, अगर ऐसा हुआ तो आपके जप में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होगी, यह स्मरण रखें।

६. यह भी जानना आपके लिए परमावश्यक है कि अर्थ-सिद्धि के लिए सत्ताईस मणियों की माला और समस्त प्रकार की कार्य सिद्धि के लिए एक सौ आठ मणियों की माला का प्रयोग होना अवश्यक है—

माला के दानों का परिमाण

शांति और पुष्टि कर्म में २७ दाने की, वशीकरण में १५ दाने की, मोहन कर्म में १०८, उच्चाटन में २७ दाने की विद्वेषण में ३१ दाने की, मारण में १०० दाने की और आकर्षण में ५७ दाने की पृथक-पृथक प्रकार के डोरों में माला पिरोई जाती हैं।

उपयोगी समय

स्टेन्डर्ड समय के अनुसार :—

ज्येष्ठ, आषाढ़ मास

रविवार—दिन ३-३६ से ४-२४ मिनट
रात्रि ४-२४ से ६ बजे

सोमवार—रात्रि १ बजकर ४५ मिनट से ३-३६ बजे तक

मंगलवार—रात्रि ५-१२ से ६ बजे

बुधवार—प्रातः ६-४५ से ८-२४ मिनट तक

बृहस्पतिवार—शून्य

शुक्रवार—रात्रि १०-४५ से ११-३६ बजे तक
शनिवार—प्रातः ६ बजे से ६-४५ तक
रात्रि ८-२४ से ६-१२ तक
चैत्र, बैशाख, श्रावण, भाद्र, माघ, फाल्गुन मास
दिन प्रातः ६ से ६-४५ तक रात्रि ७-३६ से ६-१२ तक
रात्रि ६-४५ से ७-३६ तक दिन ३-३६ से ४-२४ तक
रात्रि ३-३६ से ४-२५ तक रात्रि ६-१२ से १०-४८ तक
रात्रि ७-३६ से ६-१२ तक रात्रि १-१२ से ३-३६ तक
आश्विन, कार्तिक मार्गशीर्ष, पौष मास शून्य
प्रातः ६-१२ से १०-४० तक
दिन में ३-३६ से ३ बजे तक
दिन १२-२४ से २-४८ तक
दिन ६-४५ से ५-२४ तक
सायं ५-१२ से ६ बजे
सायं ४-२४ से ६ बजे
रात्रि १-१२ से २ बजे
सायं ५-१२ से ६ बजे

अब हम अपने अगले अध्याय में गुरु का महत्व की ओर बढ़ते हैं। यूं तो गुरु का महत्व हर कार्य, हर क्षेत्र में होता है, पर तंत्र-मंत्र विज्ञान में गुरु का महत्व सर्वोपरि है। आप इस तथ्य को कदापि न भूलें।

तांत्रिक क्रियाएँ कब करें ?

तालिका

ऋतुओं के अनुसार तांत्रिक प्रयोग

ऋतु	ऋतु का काल	ऋतु के तन्त्र प्रयोग
बसन्त	दोपहर से पहले	वशीकरण तथा आकर्षण प्रयोग करें।
ग्रीष्म	मध्याह्न में	विद्वेषण प्रयोग करें।
वर्षा	तीसरे पहर में	स्तम्भन प्रयोग करें।
शिशिर	प्रदोष में	मारण प्रयोग करें।
शरद	अर्द्ध रात्रि में	शान्ति प्रयोग करें।
हेमन्त	उषा काल में	पौष्टिक प्रयोग करें।

दिनों के अनुसार तांत्रिक प्रयोग

तिथि	तन्त्र प्रयोग
१ (पड़वा)	स्तम्भन प्रयोग करें।
२ (दूज/दोयज)	उच्चाटन प्रयोग करें।
३ (तीज)	आकर्षण प्रयोग करें।
४ (चौथ)	स्तम्भन प्रयोग करें।
५ (पंचमी)	मारण प्रयोग करें।
६ (छठ)	उच्चाटन प्रयोग करें।
७ (सप्तमी)	वशीकरण प्रयोग करें।
८ (अष्टमी)	मोहनार्थ प्रयोग करें।
९ (नवमी)	मोहनार्थ प्रयोग करें।

१० (दशमी)	इस दिन गुरुवार हो तथा पुण्य नक्षत्र हो तो कुछ भी करें।
११ (एकादशी)	मारण प्रयोग करें।
१२ (द्वादशी)	मारण प्रयोग करें।
१३ (त्र्योदशी)	आकर्षण प्रयोग करें।
१४ (चौदश)	स्तम्भन प्रयोग करें।
पूर्णमाशी	मारण प्रयोग करें।

वारों के अनुसार तांत्रिक प्रयोग

दिन	तन्त्र प्रयोग
रविवार	मारण प्रयोग करें।
सोमवार	शान्ति प्रयोग करें।
मंगलवार	विद्वेषण कर्म करें।
बुधवार	उच्चाटन प्रयोग करें।
गुरुवार	पौष्टिक प्रयोग करें।
शुक्रवार	लक्ष्मी सिद्धि करें।
शनिवार	वशीकरण प्रयोग करें।

———

गुरु का महत्व

ध्यान मूलं गुर्रोमूर्ति पूजा मूलं गुरोपदम् ।
मंत्र मूल गुरोवाक्यम् मोक्ष मूलं गुरु कृपा ।।

अर्थात—हे गुरुदेव ! आपकी दिव्य मूर्ति ही हमारे ध्यान में बनी रहे, हमारी पूजा का आधार आपके "श्री" चरण हों, आपके शब्द ही हमारे लिए सिद्ध मन्त्र स्वरूप हैं और आपकी कृपा ही हमारे लिए मोक्ष है ।

महात्मा कबीर कहते हैं :—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागूँ पाँय ।
बलिहारी गुरु आपकी जिन गोविन्द दियौ बताय ।।

प्रभु प्राप्ति की प्राथमिक जिज्ञासा से लेकर प्रभु प्राप्ति तक केवल गुरु का ही महत्व नजर आता है । सत्य तो यह है कि प्रभु से पहले गुरु का पूजन होता है । गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरा । गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै: श्री गुरुवै नमः ।

जब हमारे प्राचीन शास्त्र संत, गुरु की महिमा को महान और गुरु को साक्षात भगवान मानते हैं, तब फिर गुरु साधना इतनी गोपनीय क्यों रही ? आज के अर्थ प्रधान युग में हम गुरु बनाते हैं, जबकि पहले समय में शिष्य कभी गुरु नहीं बनाता था, बल्कि गुरु शिष्य बनाता था । यह अधिकार केवल गुरु को प्राप्त था । हर युग में मान्यताएं बदलती रही हैं ।

समय के साथ हमारी गुरु की प्रक्रिया और सम्बन्धों में काफी बड़ा अन्तर आया है। यह गुरु का ही चमत्कार था जो सृष्टि के नियन्ता भगवान राम ने अल्प समय में ही शिक्षा ग्रहण कर ली थी। गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं—गुरु गृह पढ़न गए रघुराई। अल्पकाल विद्या सब पाई ॥

संसार का व्यावहारिक ज्ञान हो या फिर योग की गहन यात्रा, ज्योतिष विज्ञान का अध्ययन हो या तंत्र का गोपनीय ज्ञान, प्रत्येक क्षण गुरु की आवश्यकता होती है।

मेरे एक परिचित हैं श्रीमान "क"। वह मुझे अपना गुरु मानते थे। मेरा हर आदेश उनके लिए ब्रह्म वाक्य था। साधना के द्वारा शरीर को तो तपा दिया पर मन को न मार सके, हृदय से अवसरवादिता को न मिटा सके। लोभ मोह क्रोध, अभिमान उनके मन से न निकल सका। एक बार मैं उनके आग्रह पर उनके निवास स्थान पर न पहुँच सका बस···। आ गया क्रोध और सारे नाते तोड़कर युद्ध के मैदान में आ गए। अब वह कहते हैं—मेरा कोई गुरु नहीं है। अब मैं उनसे कोई सम्बन्ध नहीं रखूंगा मैं पथराया सा सोच रहा हूँ क्या गुरु का, मित्र का, परिजन का घर आना अनिवार्य शर्त है? क्या उस मित्र की, परिजन की, गुरु की कोई मजबूरी नहीं हो सकती है।

मेरे एक दूसरे परिचित हैं श्रीमान (ख)। जिन्होंने मात्र पुस्तक पढ़कर गुरु मान लिया और चित्र सामने रखकर साधना करते गये। आज वह अपने क्षेत्र के सर्वाधिक चर्चित व्यक्ति हैं।

मैं सोचता हूं श्रीमान 'क' ने गुरु को सामने रखकर भी

कुछ नहीं पाया, बल्कि निरादर का भाव लाकर स्वयं को घोर पाप का अधिकारी बना दिया और श्रीमान 'ख' जिन्होंने मूक प्राणहीन चित्र में गुरु को प्रतिष्ठित कर सजीव कर दिया।

स्मरण रखें जिसके हृदय में शिष्यत्व का जन्म हो जाता है वह गुरु के गुण या दोष कदापि नहीं देखता।

हीनू तिब्बती साधिका ने मुझे बतलाया था—कुशोक। (श्रीमान) गुरु शब्द सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण शब्द है। जो व्यक्ति हमारे जीवन के अन्धकार को दूर कर आलोकित कर सके वही अच्छा गुरु है। इस धरती पर केवल तीन गुरु हैं — माता, पिता और गुरु। पिता विष्णु स्वरूप हैं, वह तो केवल पालन कर्ता हैं, माता ब्रह्मा स्वरूपा हैं, वह जन्म देने के साथ-साथ अनेक दायित्वों का एक साथ निर्वाह करती है। शिव क्या नहीं करते ? चिन्तन, पालन, संहार, इसके साथ ही आत्मा का सृजन भी करते हैं। इसलिए गुरु शिव स्वरूप हैं। गुरु पूर्णत्व प्रदान करता है। क्या गुरु के अभाव में संस्कार की कल्पना की जा सकती है ? हीनू आगे बतलाती है—'जन्मना जायते शुद्र संस्कारात् द्विज उच्यते'—अर्थात माता-पिता तो शूद्र (संस्कार विहीन) को ही जन्म देते हैं, परन्तु गुरु असंस्कारित बालक को लेकर उसका निर्माण करता है। वह शिशु को चैतन्य और निर्मल बना देता है। साधक को गुरु आश्रम में आने के बाद निम्न पाँच बातें अपनानी चाहिएँ। सादा रहन-सहन, शाकाहारी भोजन, क्रोध और अहंकार का त्याग, साधना और सदाचारी जीवन।

साधिका हीनू का कथन कितना सत्य है। आप स्वयं अनुभव करें, गुरु के बाद दूसरा महत्व मन्त्र का है। मन्त्र कई

प्रकार के होते हैं—अघोर मन्त्र, कापाली मन्त्र, तांत्रिक मन्त्र, शाबर मन्त्र, सामान्य मन्त्र, आध्यात्मिक मन्त्र। बिना गुरु आदेश के मन्त्र जप और नियम व्यर्थ है। साधना में सिद्धि के पाँच तत्व हैं—गुरु से मन्त्र प्राप्त करना, गुरु के प्रति समर्पित रहना, श्रद्धावान रहना और गुरु के आदेश का यथा सम्भव पालन करना। स्मरण रखें—गुरु से दगा, मित्र से चोरी या हो अंधा या हो कोढ़ी। साधक के लिए गुरु ही जीवन की पूर्णता है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप अपने-अपने गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हुए साधना मार्ग की ओर अग्रसर होंगे। आप स्वामी विवेकानन्द की इस बात को सदैव ध्यान रखें—

यह ज्ञान तो पक्षियों में भी होता है कि जिस हरे-भरे पेड़ की डाल पर वे घौंसला बनाते हैं, पतझड़ आने पर पेड़ सूखकर ठूँठ हो जाने के बावजूद भी वे उस पेड़ को छोड़ते नहीं।

फिर हम तो मनुष्य हैं, जिसे एक बार गुरु कह दिया, बिपरीत परिस्थितियों में भी उसे छोड़ना कैसा? अलग होना कैसा?

गुरु शिष्य का विष्णु के समान पोषण करता है और शिव के समान उसके अंधकार अविवेक और अहं का संहार करता है। गुरु शब्द का अगर हम संन्धि विच्छेद करें—गर-र-ऊ आयेगा। इसमें ग पृथ्वी तत्व का परिचायक है गुरु शब्द में आकाश और जल तत्व बिल्कुल नहीं हैं। आकाश शून्य का और जल चंचलता का प्रतीक है। यह दोनों तत्व गुरु में होते ही नहीं हैं।

हम और अधिक विस्तार में न जाकर अब गुरु बनाने से मन्त्र पाने तक की प्रक्रिया पर एक दृष्टि डालेंगे।

सर्व प्रथम गुरु शांभवी दीक्षा सम्पन्न करता है। यह शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण और गोपनीय है, इसमें गुरु और शिष्य एकाकार हो जाते हैं। शिष्य गुरु के महत्व और शक्ति से भली भाँति परिचित हो जाता है।

इसके पश्चात गुरु शिष्य को पीला वस्त्र धारण करने का आदेश देता है, और उसी दिन गुरु साधना की महत्वपूर्ण एवं रोचक क्रिया "प्रज्ञाभिषेक" और प्रज्ञासंस्कार सम्पन्न करता है इसके पश्चात शिष्य को पूर्ण शिष्यत्व प्राप्त हो जाता है। वह गुरुमय हो जाता है।

आप इस बात का सदैव स्मरण रखें, अस्थि और चर्म से युक्त देह को गुरु नहीं कहते, बल्कि माँस मज्जा से युक्त शरीर में जो अथाह ज्ञान और दिव्य शक्ति का जो सागर लहरा रहा है उसे गुरु कहते हैं। उन्होंने जो जप किया है 'मैं' का दमन किया है हम गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर उसे ही नमन करते हैं।

गुरु विशाल है उनकी व्याख्या करने का साहस कोई मनुष्य कैसे कर सकता है गुरु के आते ही शब्द चूक जाते हैं और चित्त स्वयं समाधि की ओर जाने लगता है। प्रिय मित्रों हम गुरु को नित साक्षात देख सकते हैं इसके लिए मूल आवश्यकता है श्रद्धा और विश्वास की। इस दिव्य द्रष्टा गुरु के माध्यम से हम अपनी विकार युक्त देह को पवित्र कर सकते हैं। हमें यही कामना करनी चाहिए कि गुरु कृपा सदैव हमारी रक्षा करती रहे, उनका जप, तप अथाह ज्ञान हमारा मार्ग दर्शन करता रहे। वह हमें अंधकार से प्रकाश की ओर लेकर जावें। हमारे गुरु अनादि काल तक बने रहें। गुरु के समक्ष हमें सदैव यही कहना चाहिए—

देव देव गुरु देव पूजा प्राप्त करोतिय: त्राहि कृपा सिन्धी पूजा पूर्णतरां कुरू अनया पूर्णया श्री गुरुः प्रीथन्ताम् । ओ३म् ततसद् ब्रह्मार्पण मस्तु ।

गुरु की महिमा अपार है। गुरु कृपा से बढ़कर कुछ भी नहीं है। यह सत्य है सद्भाग्यवश ही सच्चे गुरु पथ प्रदर्शक प्राप्त होते हैं। हमारे लिए यह विचारणीय बात है कि हम गुरु को कितना समझ पाते हैं? गुरु की शक्ति और ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। गुरु तो शक्ति और ज्ञान का सागर है, हमारी ग्रहण शक्ति यदि विस्तृत नहीं है तो हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर पायेंगे। गुरु हमें देना चाहता है और हम लेना भी चाहते हैं लेकिन हमारे मार्ग में हमारी श्रद्धा, विश्वास, अहं और सबसे ऊपर क्षमता आड़े आ जाती है।

आप यह तथ्य सदैव स्मरण रखें तन्त्र-मन्त्र साधना एक अति गूढ़ और रहस्यमय विद्या है। तंत्र साधना सृष्टि के प्रारम्भ से ही गुरु शिष्य परम्परा से बेतरह जुड़ी है। गुरु शिष्य की तुलना जीव और ब्रह्म से की जा सकती है। यह दोनों अभिन्न हैं। मन्त्र साधना में साधक की सबसे बड़ी शक्ति उसका 'गुरु' ही है। गुरु शिष्य की किसी भी प्रकार से परीक्षा ले सकता है, जिसमें शिष्य अपनी गुरु भक्ति, विश्वास और श्रद्धा के बल पर ही सफल हो सकता है।

इस प्रकार तन्त्र-मन्त्र साधना से लेकर आध्यात्मिक साधना तक गुरु का सर्वाधिकार महत्वपूर्ण ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है।

भैरव साधना

अगस्त्य ऋषि द्वारा भैरव जन्म के विषय में पूछने पर कार्तिकेय ने उनसे जो कहा उसका वर्णन इस प्रकार है—

एक समय सुमेरू पर्वत पर बैठे हुए ब्रह्मा को प्रणाम कर ऋषियों ने पूछा—हे प्रभो ! आप में बड़ा कौन है ? ब्रह्माजी ने अहंकार में कहा—ऋषियों ! इस सृष्टि को उत्पन्न करने वाला मैं ही हूं। मैं स्वयंभू हूं। अतः अनादि होने के कारण मैं ही सब देवताओं में बड़ा हूं। मैं ही ईश्वर हूँ।

ब्रह्मा की अहम् भरी बात सुनकर समीप ही बैठे ऋतु को बेतरह क्रोध आ गया उसने कड़ककर कहा—अरे ब्रह्मा ! तुम अज्ञानता के कारण ही यह बात कह रहे हो ! सम्पूर्ण जगत का कर्ता और पालन करने वाला तो एक मैं हूँ। मेरी प्रेरणा से तुम सबको उत्पन्न करने वाले बने हो। अतः तुम स्वयं को बड़ा मत कहो।

इस प्रकार ब्रह्मा और ऋतु दोनों, स्वयं को बड़ा बतलाते हुए विवाद करने लगे। अंत में वेदों की सम्मति ली जाए यह निश्चित हुआ।

तब ब्रह्मा और ऋतु दोनों ने वेदों से जाकर पूछा—हे श्रुतियो ! हम में से बड़ा कौन है ?

तब ऋग्वेद ने कहा—जिससे सबका जन्म हुआ है और जिसमें सब कुछ समाहित होता है, वे रुद्र ही परम पूज्य हैं

यजुर्वेद ने कहा—जिनकी योग द्वारा प्राप्ति करने में लोग लगे रहते हैं; वे शिव ही बड़े हैं।

सामवेद ने कहा—जिसके प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व निरन्तर प्रकाशित रहता है, वह शिव (रुद्र) ही श्रेष्ठ है अथर्ववेद ने कहा—जो अपने भक्तों के सारे कष्टों को दूर करते हैं वह आनन्ददायी रूप भगवान शंकर हैं। ब्रह्मा वेदों का यह फैसला सुनकर अहंकार में कहने लगे—जो शिव जटाधारी, नागों को ही आभूषण समझते हैं, सवारी के लिए जिसे केवल बैल मिला है वह परब्रह्म कैसे हो सकता है ?

उसी समय प्रणव ने प्रकट होकर उन्हें समझाया—भगवान शंकर सनातन ज्योति हैं। उनकी शक्ति असीम है। अतः यह सत्य है कि उनसे बड़ा कोई नहीं है।

इस पर भी ब्रह्मा तथा ऋतु को सन्तोष न हुआ। तभी अचानक उन दोनों के मध्य एक ज्योति उठी। उसने अपनी आभा से सभी को समेट लिया, फिर उस पुंज के मध्य में एक व्यक्ति दीखने लगा। उस ज्योति में एक पुरुष को देखकर ब्रह्मा का पाँचवाँ मस्तक अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहने लगा—हम दोनों के बीच आने वाला तू कौन है ? उसी क्षण वह पुरुष बाल रूप में परिवर्तित होकर रोने लगा। तब ब्रह्मा ने कहा—तुम मेरे मस्तक से प्रकट होकर रुदन कर रहे हो, कैसे निर्बल हो तुम ? जाओ। इसलिए मैं तुम्हारा नाम "रुद्र" रखता हूँ। अब मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। ब्रह्मा की बात सुनकर वह बालक बटुक भैरव आकृति में बदल गया। ब्रह्मा फिर कहने लगे—हे पुत्र तुम्हारा नाम "भैरव" होगा। तुमसे काल भी भयभीत रहेगा अतः तुम "काल भैरव" के नाम से भी प्रसिद्ध होगे। तुम मुक्तिदायियों काशी के अधिपति होकर "कालराज"

का पद प्राप्त करोगे। काशी में रहकर जो भी व्यक्ति पाप करेगा उसे तुम स्वयं दण्ड दोगे। अब से चित्रगुप्त काशी का लेखा-जोखा नहीं रखा करेगा। यह मेरा आदेश है।

पहले तो भैरव ने वरों को ग्रहण किया फिर ब्रह्मा के पाँचवे मस्तक को अपने बाँएं हाथ की उंगली के नख से काट दिया और कहा—हे ब्रह्मा ! तुम्हारे जिस भाग ने निंदा का अपराध किया था अब उसे मैंने दण्ड दे दिया है। तव ब्रह्मा को यह ज्ञात हुआ कि शिवजी ही सबसे बड़े हैं। तब ब्रह्मा भगवान शंकर की स्तुति करने लगे।

ब्रह्मा द्वारा की गई स्तुति से शिवजी ने प्रसन्न होकर अभय दान दिया। इसके पश्चात् उन्होंने भैरव को यह आज्ञा दी—भैरव ! तुम लोक प्रदर्शन के लिए ब्रह्मा के इस कटे मस्तक को अपने हाथ में लेकर भिक्षा याचना करते हुए विश्व का भ्रमण करो और इस ब्रह्म हत्या के पाप का प्रायश्चित करो।

इस प्रकार समस्त लोकों में अपनी लीला का प्रदर्शन करते हुए भैरव तीर्थ काशी में प्रवेश कर गये। काशी में प्रवेश करते ही ब्रह्महत्या ने उनका पीछा छोड़ दिया। भैरव के काशी में प्रवेश करते ही उनके हाथ से ब्रह्मा का कटा मुंड स्वयं ही गिर पड़ा। जिस स्थान पर वह मस्तक गिरा था वह स्थान "कपाल मोचन" के नाम से प्रसिद्ध है। तब से भैरव काशी में उसके कोतवाल पद पर आसीन हुए। और भैरव को "काशी का कोतवाल" कहा गया। मार्ग शीर्ष मास की कृष्ण अष्टमी उनका जन्म दिवस है। इस दिन को कालाष्टमी भी कहा जाता है। जो साधक ६ मास तक इन तिथियों में श्रद्धापूर्वक उपासना करता है उसे बटुक भैरव की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। भैरव

का रंग श्याम है। उनको चार भुजाएं हैं जिनमें वे त्रिशूल, खड्ग, खप्पर तथा नरमुंड लिए रहते हैं। उनका वाहन कुत्ता है। वह शरीर पर भस्म, मस्तक पर त्रिपुण्ड, बाघम्बर धारण किए, गले में मुण्ड माला और सर्पों से अलंकृत रहते हैं। भैरव श्मशान वासी हैं। ये भूत-प्रेतों के अधिपति हैं। दुष्टों का संहार करने में सदैव तत्पर रहते हैं। हर प्रकार के कष्टों को दूर कर बल, बुद्धि, तेज, यश, धन तथा मुक्ति प्रदान करते हैं। भैरव के अन्य रूपों में (महाकाल भैरव) तथा (बटुक भैरव) ही मुख्य हैं। अष्ट भैरव के रूप में जिन आठ नामों की प्रसिद्धि हैं वे इस प्रकार हैं :—

१—अति सांग भैरव
२—चण्ड भैरव
३—भयंकर भैरव
४—क्रोधोन्मत्त भैरव
५—भीषण भैरव
६—संहार भैरव
७—कपाली भैरव
८—रूरू भैरव

शिवजी के निम्न नौ रूप भी भैरव माने जाते हैं—

१—क्षेत्रपाल
२—दण्डपाणि
३—नील कण्ठ
४—मृत्युञ्जय
५—मंजुघोष
६—ईशान
७—चण्डेश्वर
८—दक्षिणामूर्ति
९—अर्द्ध नारीश्वर

साधना

शिवजी और भैरव में कोई विशेष अन्तर नहीं है अतः भैरव की उपासना भी शिवजी की उपासना के समान है। भैरव के विभिन्न नामों की उपासना की पद्धितियाँ अलग-अलग

पाई जाती हैं। विस्तृत जानकारी के लिए सम्बन्धित ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। नाथ सम्प्रदाय में भैरव पूजा का प्रमुख स्थान है। साधना में सिंदूर, लोबान तथा धूप का महत्व है। भैरव मंत्र का जाप रुद्राक्ष की माला पर करना चाहिए।

भैरव को प्रसन्न करने के लिए अधिक परिश्रम या साधना की आवश्यकता होती है।

साधक सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त होकर साफ वस्त्र धारण करके मन, वचन और कर्म की शुद्धि सहित पूर्वाभिमुख बैठें। फिर भैरव की मूर्ति, के नीचे वस्त्र बिछाकर अपने सामने स्थापित कर लें। फिर मन्त्र को गेहूं के आटे, रोली, हल्दी तथा चावल के द्वारा भैरव मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें।

तत्पश्चात भैरव की मूर्ति के समीप शुद्ध घी का दीपक जलाकर धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से वातावरण सुगन्धित करें।

तत्पश्चात भैरवाष्टक का जाप करें। काल भैरवाष्टक इस प्रकार है—

कालभैरवाष्टकम्

'देवराज सेव्यमान पावनांध्रिपंकजं
कालयज्ञ सूत्र मिंदु शेखरं कृपाकरम्।
नारदादि योगी वृन्दवन्दितं दिगम्बरं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥
भानुकोटिभास्करं भवाब्धितारकंपूरं
नीलकंठमीप्सितार्थदायक त्रिलोचनम्॥

यमकालमंनुजाक्ष मक्षशूलअक्षरं
काशिकापुराधिनाम कालभैरवं भजे ।।
शूलटंकपाश दडंपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीम विक्रमं प्रभु विचित्र ताण्डव प्रिय
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्त चारुविग्रहं
भक्तवत्सल स्थितं समस्त लोक विग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञ हेमकिंकिणीलसत्कटि
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाश मोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभितागंमहलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरव भजे ।।
रत्नपादुका प्रभाभिराम पादयुग्मक
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं कराशलदंश मोक्षणं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।
अट्टहास भिन्न पद्म जांडकोश संतति
दृष्टिपात नष्टयायजालमुग्र शासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालि कन्धरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।
भूतसंघ नायकं विशाल कीर्तिदायकं
काशिवास लोकपुण्यपाप शोधकं विभुम् ।

नीतिमार्ग कोविदं परातनं जगतपतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरव भजे ॥
कालभैरवाष्टकं पठंतिये मनोहरं
ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्र पुण्यवर्द्धनम् ।
शोकमोह दैन्यलोभ कोपताय नाशनं
ते प्रयांति कालभैरवांघ्रिसंनिधध्र‍ुवम् ॥

पहला मंत्र इक्कीस अक्षर का तथा दूसरा प्रणव (ॐ) युक्त मंत्र बाईस अक्षर का है। इन्हीं दिनों में से किसी एक मंत्र द्वारा बटुक भैरव की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

भैरव साधना

सर्वप्रथम सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातः कृत्यादि से प्राणायाम पर्यन्त सभी कर्म करके अग्निकोण में"—

ॐ धर्माय नमः ।

इसके बाद क्रम से निम्न क्रियाएँ करें।

ऋष्यादि न्यास—

शिरसि वृहदारण्यक ऋषये नमः ।
मुखे गायत्री छन्दसे नमः ।
हृदि बटुकभैरवाय देवतायै नमः ।

मूर्तिन्यास—

ह्रों वों ईशानाय नमः अंगुष्ठाभ्यां ।
हृं वें तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः ।

ह्रुं वुं अघोराय नमः मध्यमयोः ।
ह्रिं विं वामदेवाय नमः अनामिकयोः ।
ह्रं वं सद्योजाताय नमः कनिष्ठयोः ।

अङ्गन्यास—

ओ३म् ह्रां वां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ओ३म् ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
ओ३म् ह्रूँ वूं मध्यमाभ्यां हुं । वषट् ।
ओ३म् ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां हुं ।
ओ३म् ह्रौं वौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।
ओ३म् ह्रः वः करतल पृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यास—

ओ३म् ह्रां वां हृदयाय नमः ।
ओ३म् ह्रीं वी शिरसे स्वाहा ।
ओ३म् ह्रूँ शिखायै वषट् ।
ओ३म् ह्रैं वैं कवचाय हुं ।
ओ३म् ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ओ३म् ह्रः वः करतलपृष्ठाभ्यां फट् ।

भैरव महामन्त्र—

ओ३म् ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय
कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ।
"ओ३म् नमः शिवाय"

बटुक भैरव साधना

श्री बटुक भैरव साधना की विधि को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

बटुक भैरव मंत्र–

उद्धरेद्बटुकं ङेन्तमापदुद्धरणं तथा।
कुरुदय पुनङेंन्तं वटुकान्तं समुद्धरेत्॥
एक विंशत्यक्षरात्मा शक्तिरुद्धो महामनः॥

(१) ह्रीं बटुकाय आपदुद्धरणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं॥
(२) ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धरणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

साधक को बटुक भैरव के लिए निम्न वस्तुएँ पहले ही एकत्रित कर लेनी चाहिए—

१. सरसों के तेल में पके उड़द के बड़े
२. दही
३. गुड़
४. देसी शराब
५. भुनी हुई मछली

इसके पश्चात यंत्र में जिस स्थान पर "ह्रीं" लिखा है, वहाँ दीपक रखकर सारे विधान सम्पन्न करने चाहिए, उसके बाद श्री भैरव का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए, साधक को चाहिए कि वह बड़े, दही और गुड़ मिलाकर रखें। इसके बाद मंत्र जाप प्रारम्भ करना चाहिए। जप के पश्चात् दशांश का हवन घी और शहद से करना अभीष्ट है।

इस प्रकार यह साधना २१ दिन तक करने पर बटुक भैरव प्रसन्न होकर वांछित फल देते हैं।

इस साधना के मध्य साधक का निडर होना तो आवश्यक है ही, साथ ही श्रद्धा और विश्वास भी बराबर बनाए रखना चाहिए।

मंत्र शब्द का अर्थ असीम है। वैदिक शास्त्रों के आधार पर यज्ञ हवन निश्चित किए गए, शास्त्र के अनुसार मंत्र उसे कहते हैं—जो शब्द पद या पद समूह जिस देवता या शक्ति को प्रकट करता है वह उस देवता या शक्ति का मंत्र कहा जाता है या निश्चित वर्ण समूह द्वारा उच्चारित ध्वनि को मंत्र कहते हैं। मंत्र साधक के लिए मंत्र साधनार्थ निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए। साधना स्थल मंत्र साधना की सफलता में साधना स्थल का अपना विशेष महत्व है। मंत्र साधना के लिए उचित स्थान तीर्थ, गुफा, पर्वत, शिखर, नदी, गुरू ग्रह, तट-वन उपवन, पीपल वृक्ष व तुलसी के पौधे के पास माना गया है।

आहार—मंत्र साधक को सदा ही शुद्ध पवित्र तथा सात्विक आहार ही करना चाहिए। अब मैं कुछ प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। श्रद्धा और विश्वास के साथ करें।

भूत बाधा—कृष्ण कान्ता की जड़ को नीले कपड़े में लपेट कर शनिवार के दिन बाधाग्रस्त के गले में पहना दें तो लाभ होता है। इसके साथ ही अगर नीम के पत्तों की धूनी दी जाये तो आश्चर्य जनक लाभ प्राप्त होता है।

गृह रक्षा हेतु मन्त्र:—इस निम्न मंत्र को १०८ बार पढ़कर मकान के चारों तरफ रेखा खींच देने से घर की दुष्ट

आत्माएं, भूत, प्रेत, का भय नहीं रहता है। किसी शुभ तिथि या चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण में ११ हजार बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

ओ३म् ह्रीं चामुण्ड भृकुटि अट्टहासे भीमदर्शने रक्षः-रक्षः चौरेभ्यः वजुर्वेभ्यः अग्निभ्यः श्वापदेभ्यः दुष्टजनेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः गण्डी ह्री ह्रौं ठः ठः।

भूत बाधा निवारक मन्त्र—इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर अभिमंत्रित किया हुआ तेल भूत प्रेत बाधा ग्रसित व्यक्ति को लगाने से भूत प्रेतादि दुष्ट आत्मा उस प्राणी को छोड़कर चले जाते हैं:—(ओ३म् नमोः काली कपाली देहि देहि स्वाहा।) इसके अतिरिक्त निम्न मन्त्र को अधिकाधिक संख्या में जप करने से भूत प्रेत बाधा सदैव के लिये दूर होती है।

ओ३म् नमो भगवते रूद्रायः नमः। कोशेश्वस्य नमो ज्योति पंगगायनमो रुद्राय नमः सिद्धि स्वाहा।

जादू टोना निवारण मन्त्र :—इस मन्त्र को ग्रहण दशहरा या दीपावली की रात में १००८ बार जपकर सिद्ध करने के बाद आवश्यकता पड़ने पर जादू, टोना व टोटका से ग्रसित व्यक्ति को बैठाकर उसके सामने ही एक कपड़ा अरण्डी के तेल में भिगोकर जलाते हैं। ३१ बार मंत्र का जाप करते हुए पीड़ित व्यक्ति पर फूंक मारते हैं। जिससे भूत-प्रेत का प्रभाव तुरन्त नष्ट होता है।

ओ३म् का कलंक कपाट वज्रपर्वत लंका अलंक पलंका फलक फक्षीक यती की वाचा गुरु का वाक्य सांचा सत्यो।

भूत-प्रेत नाशक

वच को अगर ताबीज की भाँति धारण किया जाय तो

भूत प्रेतादि की परेशानियाँ नहीं होतीं। इसे अंगूठी में जड़ा करके हाथ में पहनें, ऐसा करने से स्वस्थ एवं शुद्ध रक्त का निर्माण होता है। फेफड़े शक्तिशाली हो जाते हैं। उच्च रक्त चाप ठीक हो जाता है। रात को सोते समय इसे तकिये के नीचे रखकर सोएं। ऐसा करने से रात्रि में डर नहीं लगेगा।

नजर उतारने का मन्त्र

**मन्त्र—ॐ नमो गुरु आदेश, तुझया नाचे भूत पले।
प्रेत पले खबीस पले सब पले, अरिष्ट पले।
सुरिष्ट पले न पले तेरे गुरु की गोरखनाथ की वीदमा ही चले। गुरु की संगत मेरी भगत, चलो मंत्र ईश्वरोवाचा।**

प्रयोग से पूर्व इस मन्त्र को दशहरा या दीवाली को १००८ बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये। फिर इस मन्त्र को सात बार पढ़कर अभिमन्त्रित की हुई भस्म को सारे शरीर पर लगाने से नजर नष्ट हो जाती है।

नजर उतारने के अन्य टोटके

नमक, राई, राल, लहसुन, प्याज के सूखे छिलके व सूखी मिर्च अंगारे पर डाल कर उस आग को रोगी के ऊपर सात बार घुमाने से हर प्रकार का नजर का दोष मिटता है।

मंगलवार या शनिवार के दिन हनुमान मन्दिर में जाकर हनुमान जी के कंधे पर से सिंदूर लाएं नजर लगे व्यक्ति के माथे पर लगाने से बुरी नजर का प्रभाव कम होता है।

खाने के समय नजर लग जाये तो इमली की तीन छोटी डालियों को लेकर आग में जलाकर नजर लगे व्यक्ति के माथे

पर से सात बार घुमा कर पानी में बुझा दे और उस पानी को रोगी को पिलाने से नजर दोष दूर होता है ।

भोजन पर नजर लगने पर परोसने से पहले प्रत्येक में से थोड़ा-थोड़ा एक केले के पत्ते पर लेकर उस पर गुलाल छिड़क कर चौराहे में रख दे नजर ठीक हो जाती है ।

नजर लगे व्यक्ति को पान में गुलाब की सात पंखुड़ियाँ भी रखकर खिलाने से बुरी नजर का प्रभाव दूर होता है ।

लाल मिर्च अजवायन और पीली सरसों को मिट्टी के एक छोटे बर्तन में आग लेकर उसमें जलाते हैं । उसके धुएं से नजर लगे बच्चे को तपाते हैं तो नजर का प्रभाव ठीक हो जाता है ।

भूत-प्रेत बाधा या औपरा निवारण

आपने प्रायः सुना होगा कि अमुक व्यक्ति को भूत लग गया है । अमुक को चुड़ैल लग गयी है । तांत्रिक भी औपरे का स्पष्टीकरण करते हुए बतलाता है कि अमुक व्यक्ति को अमुक औपरा था या भूत-प्रेत बाधा थी ।

वास्तव में यह एक गम्भीर विषय है । यहाँ मैं केवल ताँत्रिक प्रयोग प्रस्तुत करूँगा । सर्वप्रथम औपरे को समझने का प्रयास करें कि औपरा क्या होता है ?

भूत-प्रेत या औपरे कई भाँति के होते हैं जिन्हें यक्ष, पितर, भूत, शत्रु, राक्षस, पिशाच, प्रेत, क्षेत्रपाल, शाकिनी, डाकिनी, आदि कहते हैं । यह भिन्न-भिन्न भाँति से लोगों को परेशान करते हैं ।

अब मैं इनकी पहचान प्रस्तुत कर रहा हूँ । इसे पढ़कर

कोई भी कभी भी कहीं भी इनकी पहचान कर सकता है।

जब किसी को यह शिकायत हो तो वह व्यक्ति साधारण लोगों जैसी बातें नहीं करता। यदि वह गुस्से में आए तो कई व्यक्तियों पर भारी पड़ता है।

देह से बेतरह दुर्गन्ध आती है। सदा गंदा रहता है। एकांत चाहता है। वन में भाग जाता है। घूमता-फिरता है कभी-कभी रोने लगता है। इसे बहुत भूख लगती है।

कभी-कभी कुछ लोग अकाल मृत्यु से मरते हैं। वह भूत प्रेतादि बनते हैं। भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति चीखता-चिल्लाता है, रोता है, भागता है। इसकी देह काँपती है। तीव्र आवाज करते हुए साँस लेता है।

यदि किसी व्यक्ति को इस प्रकार की शिकायत हो तो कच्चे कोयले के सात टुकड़े, एक अण्डा, थोड़ा सा चावल, थोड़ा सा हलुवा, तथा पीपल की टहनी ले लें।

एक मिट्टी का सकोरा लें उसमें हलुवा डाल दें। इसके ऊपर कोयला रख दें, कोयले के ऊपर कच्चे चावल डाल दें। इस बर्तन को रोगी के ऊपर से सात बार घुमा कर उतार लें। इसके बाद पीपल की टहनियाँ रख दें। इसे उठा करके किसी चौराहे पर रख दें। वह अंडा उस सकोरे पर मार कर फोड़ दें और बिना पीछे देखे वापस घर आ जाएँ।

भूत-प्रेत बाधा हेतु

१. चुड़ैल भगाने का मन्त्र—

बैर बर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी।
कहुँ तुझे सुनु सर्वनासी मेरी माँसी॥

इस मन्त्र को दीपावली, होली दशहरा या ग्रहण के दिन सिद्ध करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर मन्त्र पढ़कर रोगी पर फूँक मारे। यह क्रम तब तक करें जब तक कि रोगी चुड़ैल बाधा पूरी तरह मुक्त न हो जाय।

भूतादि निवारण मन्त्र—इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर एक मुट्ठी धूल को अभिमन्त्रित कर रोगी को मारने से अथवा दिशाओं में फेंकने से भूत-प्रेत का कोई डर नहीं रहता है। इसे दीपावली, ग्रहण, दशहरा या होली की रात में सिद्ध कर लेना चाहिए।

तह कुष्ठ इलाही का बान, कुडूम की पत्ती चिरावत भाग भाग (अमुक) अंग से, भूत मारूँ धुनवान कृष्णवर पूत आज्ञा कामरू कामाक्षा माई की, हाड़ी दास चण्डी की दुहाई।

भूत-प्रेत का भय

आजकल भूत-प्रेत आदि का लगना एक साधारण सी बात है। इसके कारण सामान्य व्यक्ति ताँत्रिकों के चक्कर में पड़ जाता है। आप निम्न उपाय करें—

रविवार को स्नान करके तुलसी के आठ पत्ते, काली मिर्च के आठ दाने तथा सहदेवी की जड़ को काले कपड़े में भर लें और इसको ताबीज की तरह काले धागे के द्वारा गले में धारण करें तो तुरन्त लाभ होता है।

गृह बाधा निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं चामुण्ड भ्रकुटि अट्टहासे भीमदर्शने रक्षः रक्षः चोरभ्यः वज्रेभ्यः अग्निभ्यः श्वापदेभ्यः दुष्टजनेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्य। चण्डी ह्रीं ह्रीं ठः ठः।

इस मन्त्र को दस हजार बार जाप करने से सिद्ध हो जाता है। आवश्यकता प्रतीत होने पर इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर जिस घर के चारों ओर रेखा-खींच दी जाती है। वह मकान सभी बाधाओं से सुरक्षित हो जायेगा। इसके प्रभाव से भूत, प्रेत प्रवेश ही नहीं कर पाता है।

प्रेत बाधा नाशक यंत्र

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से मंगलवार के दिन लिखकर पूजन करना चाहिए। फिर रोगी के गले में इसे ताबीज में भर कर बाँध देना चाहिए तथा प्रतिदिन नियम से १०८ बार गायत्री मंत्र पढ़कर जल को अभिमंत्रित कर रोगी को पीने को देना चाहिए तथा उसके शरीर पर छिड़कना भी चाहिए। जब तक कि वह पूरी तरह रोग मुक्त न हो जाये।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भूत भय नाशक यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर गूगल धूप

दिखाकर गले में बाँधने से भूत-प्रेत पिशाच आदि का भय नहीं होता है।

स्वप्न में भूत दर्शन

यन्त्र नं० १

१	२	३	४
४	३	२	१
१	२	३	४
४	३	२	१

नाम.........

यन्त्र नं० २

नाम.........

६	१३	२	८
७	३	१०	११
१२	७	८	१
४	६	६	१०

यंत्र एक को कुचले के रस में तथा यंत्र दो को गिलोय के रस में लिखकर रात्रि में सोते समय सिर के नीचे रखकर सोने से रात्रि में भूत दिखाई देते हैं।

टोटके

इन टोटकों में तन्त्र-मन्त्र-जप आदि की कोई विशेष आवश्यकता नहीं होती है।

रविवार या मंगलवार के दिन अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के नाखून को आग में डाल कर उसका धुँआ भूत-प्रेत से ग्रसित रोगी को देने से बाधा से मुक्ति मिलती है।

हाथ में लोहे या तांबे का छल्ला पहनाने, गले में चन्द्रमा या सूरज बनाकर पहनाने से या रीठे के फल को छेद कर पहनाने से नजर, टोटका भूत-प्रेत आदि का प्रभाव बच्चे पर नहीं पड़ता है। स्मरण रखें चाँद सूरज मामा ही लाकर देवें।

लाल मिर्च व अजवायन को आग में डालकर तपाने तथा बच्चे के माथे पर सात बार घुमाकर आग में डाल देने से नजर भूत-प्रेत चुड़ैल का प्रभाव नष्ट होता है।

भूत-प्रेत ज्वर नाशक

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

नाम.........

इस यंत्र को मंगलवार या रविवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर धूप दिखाकर भूत-प्रेत ज्वर के रोगी को बाँधने से ज्वर शीघ्र नष्ट हो जाता है।

बुरी नजर का यंत्र

७२	८१	३३	४९
९१	८२	९	११
२५	३७	४९	५०
४५	२७	९	१

नाम.........

इस यंत्र को या तो छोटे ताँबे के टुकड़े पर लिखवा कर या भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिख करके ताँबे के ताबीज में डालकर गले में बाँधने से भूत-प्रेत और बुरी नजर नहीं लगती।

बहुत से बालक कुदृष्टि के कारण रोने लगते हैं, जिसमें माँ-बाप परेशान हो जाते हैं। उन बच्चों को इस यंत्र को बुधवार के दिन हल्दी से कागज पर लिखकर रोते हुए बालक के गले में बाँधने से बालक रोता नहीं है।

दुष्ट नजर से रक्षा यन्त्र

४	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

यहाँ नाम लिखें........

इस यन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर तथा धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर ताँबे में भर कर बच्चे के गले में बाँधने से भूत-प्रेत बाधा एवं नजर दूर हो जाती है।

हवन

शांति कर्म में—दूध घी, पीपल के पत्ते व लकड़ी तथा गिलोय द्वारा हवन करना चाहिए। पुष्टिकर्म में बिल्व पत्र चमेली के फूल तथा घी द्वारा आहुति दी जाती है। सुन्दर पत्नी प्राप्त करने के लिये कमल को आहुति में सम्मिलित कर लिया जाता है। दरिद्रता दूर करने के लिए दही और घृत को आहुति में मिला लिया जाता है। घी, बेलपत्र, तिल द्वारा आहुतियाँ दीं जायें तो वैभव की प्राप्ति होती है।

स्तंभन में—बेलपत्र, चमेली के फूल, काले तिल, चंदन का चूरा, जौ कमलगठ्ठा, दही, घी तथा अन्न द्वारा हवन करना चाहिए।

विद्वेषण में—नैॠत्य दिशा की ओर मुंह करके हवन करें।

उच्चाटन में—कौए के पंख द्वारा हवन करना चाहिए।

विद्वेषण में—धतूरे के फलों तथा पुष्पों द्वारा हवन करना चाहिए।

मारण में—धतूरे के बीजों तथा रक्त मिश्रित विष द्वारा हवन किया जाता है।

शांति कर्म—"वरदा" नाम से अग्नि का आवाहन किया जाता है। पुष्टि कर्म में बलद नाम से तथा दोनों मुडा नाम से पूर्णाहुति दी जाती है। विद्वेषण में 'क्रोध' नाम से अग्नि आवाहन किया जाता है। वशीकरण में 'कामदा' नाम से आवाहन किया जाता है। स्तंभन में भी 'क्रोध' नाम से, मारण में मृत्यु 'वन्हि' नाम से आवाहन किया जाता है।

हवन कुण्ड

शाँति कर्म में—पूर्व को मुँह करके हवन तथा मंत्र का जप करना चाहिए।

वशीकरण में—उत्तर दिशा की ओर मुँह करके उपदिशा वाचक कोण में हवन करें।

विद्वेषण में—नैऋत्य दिशा की ओर मुँह करके हवन करें।

उच्चाटन में—ईशान दिशा तथा अग्निकोण की ओर मुँह करके हवन करें।

स्तंभन में—लक्ष्य से सम्बंधित दिशा की ओर मुँह करके हवन तथा मंत्र जप करना चाहिए।

मारण में—दक्षिण की ओर मुँह करके हवन करें तथा जप करें। हवनकुंड की दिशा भी दक्षिण ही हो। इन कार्यों में हवन त्रिकोण बनाया जाय। केवल मारण कृत्य में तथा पिशाच बाधा निवारण में षट् कोण आकार का हवन कुण्ड बनाया जाना चाहिये।

नक्षत्र विचार

शाँति संमोहन, वशीकरण तथा स्तंभन कार्यों में—अश्लेषा नक्षत्र में मूल शतभिषा नक्षत्र में उत्तराषाढ़ उत्तरा भाद्रपद।

मारण विद्वेषण तथा उच्चाटन में—भरणी हस्त, चित्रा, स्वाति, उत्तरा, फालगुनी पुष्य, फालगुनी पुनर्वसु, पूर्वा, धनिष्ठा, मघा विशाखा कृतिका, रेवती इत्यादि।

इन नक्षत्र विशेषों में इन साधनाओं को करने से साधना की शीघ्रसिद्धि प्राप्त होती है।

शाँति कर्म के लिए—२, ३, ५, को सोमवार, बुध, बृहस्पति।

लक्ष्मी साधना—शुक्रवार को करनी चाहिए।

वशीकरण में—७ तथा ५ को एवं शनिवार के दिन।

उच्चाटन—२, ६ को बुध के दिन।

स्तंभन—४, १४ को तथा किसी भी अमावस्या को।

विद्वेषण—मंगलवार को ८, १६, ११

मारण—रविवार को ११, १२ को करे।

हवन विचार

हवन कार्य में कुण्ड तथा वेदी दोनों ही बनाने का प्रयोग प्रचलित है। इसमें भी किस कर्म में कौन सी वेदी या किस प्रकार का हवन कुण्ड बनाया जाये इस पर भी विचार कर लेना आवश्यक है। शाँति कर्म हवन कुण्ड गोल आकार का बनाना चाहिए। वशीकरण, सम्मोहन अष्ट कोण आकार का हवन कुण्ड बनाया जाना चाहिए।

स्तंभन में—चतुष्कोण आकार का हवन कुण्ड चाहिए।

विद्वेषण में—त्रिकोण आकार का हवन कुण्ड चाहिए।

उच्चाटन में—षट्कोण आकार का हवन कुण्ड चाहिए।

मारण में—अर्धचंद्राकार हवन कुण्ड निर्मित करना चाहिए।

हवन करके लाल रंग के पुष्प में घी मिलाकर हवन करने पर शत्रु का नाश होता है।

"ॐ ड डा डि डी डु डूं डे डै डो डौं डं डः"

एक लाख जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध कर लेने के बाद मनुष्य के शरीर की चार अंगुल आकार की हड्डी को १०८ बार अभिमंत्रित करके श्मशान भूमि में गाड् देने पर शत्रु मृत्यु तुल्य कष्ट पाता है। भद्र काली की मूर्ति बनाकर उसका पहले पंचोपचार से पूजन कर लेना चाहिए।

डाकिनी का मंत्र

प्रस्तुत मंत्र की साधना विधि बड़ी सरल है इसके द्वारा डाकिनी सिद्ध होकर उससे जो कार्य करने को कहा जाय पूरा करती है।

किसी भी ग्रहण की रात्रि में शुद्ध पवित्र भूमि को गोबर से लीप कर तथा चौका लगाकर घी का दीपक जलाकर एक पैर पर खड़े होकर शुद्ध मन से १०८ बार इस मन्त्र का उच्चारण करने पर डाकिनी दर्शन देती है। उसे देखकर भयभीत नहीं होना चाहिए उसका पूजनकर उसे नैवेद्य अर्पित करे तथा आरती उतारे फिर उसके समक्ष अपनी इच्छा प्रकट करनी चाहिए।

'नमो चढ़ौ चढ़ौ सूखार धरती चढ़ाया कुण कुण वीर हनुमन्त वीर चढ़ैय्या धरती चढ़ पग पात चढ़ो गोंडा चढ़ी जाघ चढ़ी कटि चढ़ी कटि कटि पेट चढ़ी पेट सूं धरणी चढ़ी, धरणी सू पासली चढ़ी पांसली चढ़ी पांसली सू हिया चढ़ी हिया सौ छाती चढ़ी खवा चढ़ी खब सौ कंठ सौ मुख चढी मुख सौ जिह्वा चढ़ी जिह्वा सों कान चढ़ी कान सों आँख चढ़ी आंख सों ललाट चढ़ी

ललाट चढ़ी सों शीश सों शीश चढ़ी शीश सों कपाल चढ़ी कपाल सों चोटी चढ़ी हनुमान नरसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सों सन्तावीर चढ़े"

शमशान जागृत करने का मन्त्र

कपूर, कचरी, इत्र, बालछड़, छबीला, जाती पुरथ तथा लोबान और धूप इन सबको और शराब लेकर अर्ध रात्रि में अकेले शमशान में पहुँचे। वहाँ मुर्दे के समीप पहुँच कर उस पर सबसे पहले शराब की धार डाली जाय फिर धूप देकर, मुर्दे पर फूलों को उसके शरीर पर चढ़ाये इसके बाद उस पर सुगन्धित द्रव्यों को चढ़ाए। इतनी क्रिया करने के बाद शव से दूर हटकर इस मंत्र को ११ बार पाठ करे तथा प्रत्येक पाठ की समाप्ति के बाद शराब की धार चढ़ाता जाय इस विधि से मसान जाग्रत हो जाता है तथा प्रकट होकर मनोकामना पूरी करता है। मसान को देखकर साधक को भयभीत नहीं होना चाहिए उसकी पूजाकर मिठाई चढ़ाकर उसे प्रसन्न करना अधिक आवश्यक है।

ॐ नमो आठ काठ की लाकड़ी मन जबानी वान। मुवा मुरदा बोले, नहीं तो माया महावीर की आन शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

वीर विरहना की सिद्धि

वीर विरहना साधना द्वारा सिद्ध कर लिये जाने पर वह साधक की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करता है और सदैव उसके समीप रहकर उसकी रक्षा करते हुए हर प्रकार के सुख को देता रहता है।

इस मन्त्र को ग्रहण की रात्रि में १०८ बार मन्त्र का जप किया जाये चमेली के फूल चढ़ाए जाये तथा नैवेद्य रूप में सवासेर आटे का शुद्ध घी से बना हलुआ चढ़ाया जाय। इस प्रकार चालीस दिन के जप के बाद यह नैवेद्य अर्पित किया जाता है।

४१ वें दिन में पूजा और सवासेर हलुए का भोग लेकर वीर साधक के सामने प्रकट हो जाता है। उस समय साधक को हाथ जोड़कर प्रणाम करे अपनी इच्छा प्रकट करे तो वीर प्रसन्न होकर मनोकामना पूरी करता है। इसकी साधना में निडर बना रहना चाहिए। श्रद्धा और विश्वास तो हर साधना का आवश्यक अंग है ही।

"वीर विरहना फूल विरहना धुं धु करै सवा सेर का तोसा खाय अस्सी कोस का धावा करे सात के कुतक आगे चले सात सै कुतक आगे चले सात सै कुतक पीछे चले जिसमें गढ़ गजना का पीर चले और ध्वजा टेकता चले सोते को जगावता चले बैठे को उड़ावता चले, हाथों में हथकड़ी गेरे पैरों में बेड़ी गेरे, मांही पाठ करे मुरदार मांही पीठ करे कलाबोन नवी कूं याद करे ॐ ॐ ॐ नमः ठूः ठः ठः स्वाहा"।

यक्षिणी साधना

समस्त यक्षिणियों की साधना विधि लगभग एक ही है लेकिन इनके मंत्र अलग-अलग हैं। साधक इच्छानुसार जिस यक्षिणी की सिद्धि करना चाहे कर सकता है। सिद्धि के लिए निर्धारित मंत्र का निर्दिष्ट संख्या में जप करके जप का दशांश हवन एवं तर्पण करना चाहिए। यक्षिणी को सिद्ध

करके साधक का सांसारिक मनोरथों की पूर्ति कर सकता है। साधक को जीवन सम्पन्नता, यश वैभव मान सम्मान से भर देती है। इनकी सिद्धि के पश्चात साधक को सात्विक वृत्ति में रहना चाहिए अन्यथा उसकी सिद्धि के समाप्त होने का भय बराबर बना रहता है। यक्षिणियों को देवी का स्थान प्राप्त है। इनको कोई भी तांत्रिक भूत प्रेतों पिशाचों की तरह बलपूर्वक वशीभूत नहीं कर सकता है।

यक्षणियाँ दुर्गा की उपासिका तथा सहचरी हैं। इनकी एक यह भी विशेषता है कि जो वस्तु साधक के भाग्य में ही न हो उसे भी ये प्रसन्न होकर प्राप्त करा देती हैं। यक्षिणी साधना काल में प्रति दिन कुंवारी कन्याओं को भोजन कराते हुए वस्त्र तथा दृव्य का दान करते रहना चाहिए।

आम्र यक्षिणी

आम्र यक्षिणी की साधना आम के वृक्ष की शाखा पर बैठकर की जाती है। यह समस्त प्रकार के सुख देकर संतान की मनोकामना पूरी करती है। साधना विधान वही है और मंत्र यह है—ओं हों ही हौं हं रें कुरु कुरु स्वाहा''

जया यक्षिणी

मदार वृक्ष की जड़ पर बैठकर पीले वस्त्र धारण कर जया यक्षिणी के मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करना पड़ता है। जया यक्षिणी की भेंट में खीर अर्पित करनी चाहिए। पूजा में पीले रंग का गुलाब चढ़ाना चाहिए।

मंत्र जप का दशांश हवन, तर्पण भी करना चाहिए। जया यक्षिणी उत्तम वस्त्राभूषणों से अलंकृत सुन्दर रमणी के रूप में प्रकट होती है। साधक को उसे श्रद्धापूर्वक नमस्कार कर वर माँगना चाहिए।

मंत्र है—मंदार वृक्ष वासिणी यक्ष कुलोद्भवा
जया प्रकट्य वरद्य वरदय् स्वाहा ॥"

वट् यक्षिणी

इस यक्षिणी का निवास पहाड़ों वनों, जंगलों में बरगद के वृक्षों पर अदृश्य रूप में होता है।

बरगद के वृक्ष पर इसका निवास मानने के कारण इसकी साधना वट वृक्ष के नीचे बैठकर करनी चाहिए। मंत्र का दस हजार जप तथा दशांश हवन एवं कन्या भोजन का विधान है। ॐ ह्रीं वट यक्षिणी यक्ष कुल प्रभा प्राकट्य प्राकट्य स्वाहा।

चन्द्रिका यक्षिणी

चंद्रिका यक्षिणी की साधना शुक्ल पक्ष की रात्रि में मंत्र जप से प्रारम्भ की जाती है। मन्त्र शुक्ल पक्ष की रात्रि से जपना प्रारम्भ करके पूर्णमासी तक जपना पड़ता है। चन्द्रमा उदय होने से लेकर अस्त होने तक मंत्र की नौ लाख जप संख्या पूरी करनी पड़ती है। जप का दशांश हवन तर्पण भी करना पड़ता है। इसकी सिद्धि करके मनुष्य इसी पंच भौतिक शरीर को अजर अमर कर सकता है।

"ॐ ह्रीं चंद्रिकं हसः की क्लीं स्वाहा।" साधना किसी भी शिवालय में बैठकर की जा सकती है।

रक्त कमला यक्षिणी

मंत्र—"ॐ क्रीं मसाभये क्लीम स्वाहा।"

किसी भी शुभ तिथि पर किसी मन्दिर में बैठकर ऊपर दिये गए मंत्र का प्रतिदिन १०८ बार की संख्या में जप प्रारम्भ कर दिया जाए इस प्रकार तीन मास तक मन्त्र का जप किया जाए। अवधि पूरी हो उस दिन जप का दशांश हवन तर्पण तथा पंचोपचार पूजन कर देवी को प्रसन्न किया जाए।

रत्नाकर यक्षिणी

रत्नाकर यक्षिणी का निवास समुद्र जल की सतह पर माना जाता है। यह लक्ष्मी जी की अनुचरी है। रत्नाकर यक्षिणी की साधना समुद्र किनारे बैठकर की जाती है।

"ॐ भगवान् समुद्र देहि रत्नादि जलवासी ही नमोस्तुते स्वाहा" इस मन्त्र को समुद्र के किनारे बैठ कर एक लाख जप संख्या में पूरा करे फिर जप का दशांश हवन तर्पण करे। यह साधक का जीवन सुखी कर देगी।

अनुराग यक्षिणी

ॐ ह्रीं आगच्छ अनुराग यक्षिणी स्वाहा

अनुराग यक्षिणी के ऊपर लिखे मंत्र को प्रतिपदा विधि को भोजपत्र पर कुंकम से लिखकर इसका विधिवत् पंचोपचार पूजन करे। साधना किसी भी पवित्र स्थान में करें। मंत्र का जप तीनों कालों में एक-एक सहस्र की संख्या में करें। इस प्रकार प्रातः अपरान्ह तथा सांय अथवा रात्रि में प्रति दिन जप करते हुए एक मास की अवधि पूरी करे पूरा करके जप का दशाँश हवन तर्पण करे पूरा करके जप का दशांश हवन तर्पण करे।

विचित्रज्ञ यक्षिणी

ॐ विचित्र विचित्र रूपे सिद्धकुरु स्वाहा

स्नानादि कर वस्त्र धारण कर किसी वट वृक्ष के नीचे बैठकर पवित्र आसन पर एकाग्र मन से "विचित्रा यक्षिणी के ऊपर दिये मंत्र का एक लाख जप किया जाए तथा मंत्र का दशांश एवं पुरश्चरण करे। हवन में शहद, दूध अन्न तथा पुष्प मिलाकर हवन करे।

विशाला यक्षिणी

"आने विशाले क्रों ह्रां श्री क्ली क्री स्वाहा"

किसी भी मुहूर्त में स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण कर चिरमिटी के वृक्ष के नीचे बैठकर ऊपर दिये गए मंत्र का एक लाख की संख्या में जप किया जाए। जप का दशांश हवन तर्पण विधान भी पूरा किया जाए। हवन में सौंफ के फूलों को घी में मिलाकर हवन करे।

हंसा यक्षिणी

ॐ ह्रीं हसि हसि जने ही क्लीं स्वाहा"

स्नानादि कर पवित्र होकर तथा वस्त्र धारण कर किसी देवालय में ऊपर दिये गए यक्षिणी के मन्त्र को एक लाख की संख्या में जपा जाये। जप का दशांश हवन तर्पण भी किया जाये। हवन में कमल के पत्तों को घी में मिलाकर आहुति दी जाए।

चामुण्डा यक्षिणी

ॐ क्रीं आगच्छ आगण्ड चामुण्डे क्रे स्वाहा

स्नान कर पवित्र वस्त्र धारण कर किसी मंदिर में अथवा किसी एकांत स्थान पर गोबर और मिट्टी मिलाकर चौका लगाए इस पर कुशा बिछाकर मन्त्र का रुद्राक्ष की माला पर दस लाख की संख्या में मन्त्र जपे। जप का दशांश हवन तर्पण भी करे तब यक्षिणी दर्शन देती है।

तंका जर्कणिका यक्षिणी

ॐ ह्रीं न्हीं क्लीं तन्काजर्कणिके ठः ठः स्वाहा

स्नान कर पवित्र वस्त्र धारण कर किसी देवी के मन्दिर में अथवा एकान्त स्थान पर दिए मंत्र का एक लाख की संख्या में रुद्राक्ष की माला पर जप करे जप का दशांश हवन तर्पण भी करे। हवन में ढाक की लकड़ी तथा शहद मिलाकर हवन करें।

नटी यक्षिणी

ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं नटी महानटि रूपवात स्वाहा

स्नानकर वस्त्र धारण कर अशोक वृक्ष के नीचे मध्य रात्रि में जाकर चंदन का मंडप बना कर यक्षिणी का विधिवत पूजन करे। एक बार धूप अर्पित करे। दिन में एक बार ही भोजन करे। मन्त्र का दस सहस्त्र जप करे। मन्त्र के पश्चात दशाँश हवन का विधान भी पूरा करे।

पद्मिनी यक्षिणी

ॐ ह्रीं पद्मिनी स्वाहा

स्नान करके वस्त्र धारण कर गोबर का एक चौका बनाकर इसके भीतर हाथ भर आकार का एक चंदन का चौंक लगाकर

यक्षिणी का पूजन करें गूगल की धूप देकर एक सहस्र मंत्राहुति दी जायें। इस प्रकार नियमपूर्वक एक मास तक मंत्र जप तथा मंत्राहुति देकर पूजा की जाय।

मदना यक्षिणी

ॐ ह्रीं मदने विडम्बनि अनन्स गम देहि कलीं श्रीं स्वाहा

शुद्ध पवित्र होकर ऊपर दिये मंत्र का किसी पवित्र स्थान पर एकाग्रचित्त होकर एक लाख की संख्या में जप करे। जप के बाद दुग्ध, चमेली और घी इन तीनों को मिलाकर एक लाख एक हजार एक की संख्या में मंत्राहुति दे।

सुर सुन्दरी यक्षिणी

मन्त्र—ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा

दिन में तीन बार एक लिंग महादेव का पूजन कर इस मंत्र को तीनों कालों में एक-एक सहस्र की संख्या में जपा जाय। इस प्रकार प्रतिदिन नियम से एक माह तक इस मंत्र का जप करके अन्तिम दिन जप का दशांश हवन तर्पण कर अर्घ्य देकर प्रणाम करे। देवी प्रसन्न होकर सम्पत्ति देती है।

चन्द्रद्रवा वट यक्षिणी

ॐ ह्रीं नमश्चंद्राधावा कर्णाकर्ण कारणे स्वाहा

इस यक्षिणी को ये मंत्र स्वयं शंकर जी ने प्रसन्न होकर दिया है अतः मन्त्र स्वयं शंकरवत् हैं। इन मन्त्रों से स्नान कर शिवजी का ध्यान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर वट वृक्ष के समीप जाकर उसे प्रणाम कर उसकी किसी शाखा पर बैठकर मंत्र का

एक लाख जप किया जाय। यह जप तीन माह की अवधि में पूरा किया जाये। जप पूरा करने के बाद सबसे पहले किसी रात्रि में कांजा से मुख शुद्धि करके सात बार इस मंत्र का जप करे इसके बाद मंत्र का दशाँश हवन तर्पण करे। हवन में बिल्व पत्र तथा फल दोनों ही सम्मिलित करे।

यक्षिणी साधना में प्रवृत्त होने वाले साधक को यहाँ कुछ मंत्र दिये जा रहे हैं जिनकी साधना किसी योग्य गुरु एवं श्रद्धा से सफलता पूर्वक की जा सकती है।

कुबेर यक्षिणी

ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धनधान्य समृद्धि से देहि दामप स्वाहा

लक्ष्मी यक्षिणी—ओ३म् ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः

कामेश्वरी यक्षिणी—ओ३म् आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा।

कनकावती यक्षिणी—ओ३म् कनकावती मैथुन प्रिये स्वाहा।

रति प्रिया यक्षिणी—आगच्छ रति सुन्दरी स्वाहा।

घंटा यक्षिणी—ओ३म् ऐं पुरं क्षोभय भगवती गंभीर स्वरे क्लै स्वाहा।

महेन्द्री यक्षिणी—ॐ ऐं क्लीं ऐन्द्री माहेन्द्री कुलु कुलु चुलु चुलु हंस स्वाहा

शंखनी यक्षिणी—ओ३म् शंख धारिणी शंखभरणे ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं श्री स्वाहा।

सुलोचना यक्षिणी—ओ३म् क्लीं सलोचनादि देवी स्वाहा

स्वामीश्वरी यक्षिणी—ओ३म् ह्लीं आगच्छ स्वामीश्वरी स्वाहा

भूत लोचना यक्षिणी—ओ३म् भूते सुलोचनेत्वम

अशुभक्षया धामी यक्षिणी—ॐ ऐं क्लीं नमः

उच्छिष्ट यक्षिणी—ॐजगभय माद्दे मद्यनिभे स्वाहा।

सुशोभना यक्षिणी—ॐ अशोक पल्लवा कारकर तेले शोभने देवी श्री क्षः स्वाहा।

श्मशानी यक्षिणी—ॐ हूं ह्लीं क्लीं क्ले स्फूं श्मशान वासिनी श्मशाने स्वाहा।

कापालिनी यक्षिणी—ॐ ऐं कपालिनी हां ह्लीं क्लीं क्ले क्लौ हस सकल ह्लीं फट् स्वाहा।

दिवाकीर किन्नरी मन्त्र—ॐ दिवाकीर मुखी स्वाहा।

विशाला किन्नरी मन्त्र—ॐ विशाला विशालनेत्रे स्वाहा

सुभगा किन्नरी मन्त्र—ॐ ह्लीं सुभगे स्वाहा

मनोहारी किन्नरी मन्त्र—ओ३म् ह्लीं मनोहार्ये नमः

सुरतिप्रिये किन्नरी मन्त्र— ह्रीं सुरतिप्रिये स्वाहा

मंजुघोषा किन्नरी मन्त्र—ॐ मंजुघोष आगच्छगच्छ स्वाहा।

अश्वमुखी किन्नरी मंत्र—ओ३म् ह्लीं अश्वमुखी स्वाहा।

———

भूत-प्रेतों का संसार

भूत प्रेतों का संसार भी अजीब है। पिछड़े और अनपढ़ लोग तो इस पर विश्वास करते ही हैं, बुद्धिजीवी वर्ग भी इन पर विश्वास करता है। संसार की सबसे छोटी कथा भी इन्हीं पर आधारित है। आपको यह जानकर बेतरह आश्चर्य होगा कि भूतों को भी यह नहीं पता होता है कि वह कब इस दशा में आ गये हैं। वह स्वयं को सामान्य समझते हैं और एक सामान्य व्यक्ति की भाँति ही व्यवहार करते हैं।

सृष्टि के अपने नियम हैं। वह अपने नियमों के प्रति पूर्णत: जागरूक है। सृष्टि अपने नियमों के प्रति अटल है। वह कोई समझौता नहीं करती है। संसार कहिये या सृष्टि उसका यह सनातन नियम है कि जो वस्तु जहाँ से आयी है वहीं जायेगी। प्रक्रिया के मध्य अनेक रूप हो सकते हैं, पर अन्त में उसे अपना आदि रूप ही स्वीकार करना पड़ता है। एक उदाहरण— कुम्हार मिट्टी खोदता है। गूँथता है। चाक पर रखकर नाना प्रकार के आकार बनाता है। उन्हें बेतरह पकाता है। वह आकार अनेक प्रकार के कामों में आते हैं। उनके टूट जाने पर वह वापस मिट्टी बन जाते हैं।

इसी प्रकार हमारा शरीर पाँच तत्वों से बना है। यह पाँच तत्व का पुतला जीवन में अनेक खेल रचता है। अनेक कार्य सम्पन्न करता है। मृत्यु होने पर पाँच तत्व (जल, पृथ्वी, वायु, आकाश, अग्नि) अपने-अपने स्थानों पर चले जाते हैं।

त्रिशंकु की कथा का स्मरण करें। सशरीर स्वर्गारोहण की इच्छा रखता था। मार्ग में केवल एक ही बाधा थी। पाँच तत्वों का ऋण चुकाये बिना स्वर्ग कैसे जाये? इन तत्वों का ऋण चुकाने का स्पष्ट अर्थ था—शरीर का अन्त।

एक और उदाहरण—मनुष्य शिशु रूप में योनि से बाहर आता है। एक निश्चित जीवन जीता है। सांसारिक कार्य, अपने नैतिक दायित्वों को पूर्ण करता है। अन्त में पूर्ण होकर दूसरी योनि में जाता है। देखें योनि से आया और योनि में ही गया। इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने, शास्त्रों ने चौरासी लाख योनियाँ बतलायी हैं।

कहा गया है—

वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपः।
अपसर्पन्तु मे सर्वे वृक्षादस्माच्छिवाज्ञया॥

इस प्रकार भूत-प्रेत, पिशाच, बैताल, वीर, राक्षसों का अस्तित्व प्रमाणित है।

आज से लगभग सौ वर्ष पहले न्यू हैपटाउन शायर में बैंस परिवार ने लगभग नब्बे वर्ष पुराना, जीर्ण शीर्ण स्थिति में एक मकान खरीदा था। मकान काफी खस्ता हालत में था। मरम्मत कराना अनिवार्य था, सो मरम्मत करानी शुरू कर दी। मरम्मत के मध्य बाथरूम से एक लोहे का वायरब हटाया गया। बस उसी दिन से आफत आ गयी। एक वृद्ध भूत मकान में बराबर दिखलायी देने लगा। उस आत्मा की पहली शिकार १४ वर्षीय मैरी हुई। अगले ही दिन छः वर्षीय व्यूलिप ने उस भूत को देखा। इसके बाद तो उस भूत ने कयामत ही ढा दी। बैंस परिवार ने नार्थन गार्लयार से सम्पर्क किया। वह परा-

विज्ञान के जानकार थे। नार्थन ने बतलाया कि वह अशांत आत्मा फिलिब की है, जिसकी अचानक मृत्यु हो गयी थी। मृत्यु के समय वह नहा रहा था। उल्लेखनीय बात यह है कि फिलिब को पता ही नहीं चला कि वह कब मर गया और कब भूत बन गया ? वह अपने मकान में मंडराता रहा। बैंस परिवार ने जब मरम्मत शुरू की तो वह क्रोधित हो उठा। नार्थन गार्लयार ने उस आत्मा फिलिब को समाप्त कर दिया।

१९६९ की घटना है। ब्रिटेन के आक्सफोर्ड शायर के कैल्टन हाल में 'हैंगिगवुड' नामक कहानी पर आधारित नाटक की रिहर्सल चल रही थी। इस नाटक में बलैंडी मैरी ने अपने पिता को विष देकर मार दिया था। रिहर्सल शुरू होते ही एक काँच गिरा और चूर-चूर हो गया हाल की बत्तियाँ स्वयं जलनें बुझने लगीं। दरवाजे भी अपने आप खुलने और बन्द होने लगे। सब परेशान और हैरान थे। अचानक पर्दे के पीछे हल्की सी हरकत हुई देखा फांसी पर चढ़ाई जा चुकी मैरी प्रकट हो गयी। एक अभिनेता ने साहस कर पूछा, 'क्या आप भूत हैं ?' इस पर वह हैरान हो गयी, सबको ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैरी को यह सुनकर बेहद दुःख हुआ है। फिर वह चली गयी और कभी नहीं दिखलायी दी। ऐसे अनगिनत हादसे सुनने को मिलते हैं।

भूत-प्रेतों का संसार अत्यन्त रहस्यमय, चमत्कारिक और जोखिम से भरा है। भूत-प्रेतों के सहयोग से ताँत्रिक भविष्य द्रष्टा भी हो सकता है। भूत-प्रेत विद्या के ज्ञाता के लिए भूत और वर्तमान तो बांये हाथ का खेल है। भूत-प्रेतों की अपनी शक्ति होती है। उनकी अपनी एक सत्ता है। दिव्य दृष्टि प्राप्त करने के लिए तांत्रिक को हर हालत में पहले अन्तःकरण की

शुद्धता प्राप्त करनी पड़ती है। सांसारिक विकारों से मुक्त होना पड़ता है।

भूत-प्रेतों के विषय में अनेक प्रकार की धारणाएें हैं। मानव के साथ भूत-प्रेतों का भी अस्तित्व इस धरती पर माना गया है। आमतौर पर यह केवल अभिशाप माने गये हैं, पर कभी-कभी यह वरदान भी बन जाते हैं। भूत-प्रेतों का अस्तित्व मानव अपने जन्म के साथ जोड़ता रहा है। यह मित्र होने पर अथवा प्रसन्न होने पर मनुष्य का उपकार करते हैं और रुष्ट होने पर विनाश भी कर डालते हैं। लगभग हर देश, प्रान्त, कस्बे में इनकी कथाऐं प्रचलित हैं। बड़े बूढ़े इनका समर्थन करते हैं। मेरे एक मित्र हैं युवा ताँत्रिक नरेन्द्र सिंह साँगवान! वह जीन्द हरियाणा के रहने वाले हैं। अपने चमत्कारिक कार्यों के लिए जीन्द में जाने जाते हैं। उन्होंने मुझे एक घटना बतलायी। वह इस प्रकार है।

अब्दुल गफूर रेलवे स्टेशन से सवारियाँ ढोया करता था। ताँगा चलाकर अपने परिवार का पेट पालता था। रात दस ग्यारह बड़े तक घर वापस आ जाता था। उसका घर बस्ती से बाहर सन्नाटे में पड़ता था। रास्ते में श्मशान भी पड़ता था, पर अब्दुल गफूर इसका आदी था। एक रात उसके ताँगे पर एक सवारी कूदकर बैठ गयी।

'अमां यार तांगे वाले सैर करा दे।' उसने लापरवाही से कहा।

'क्यों?' अब्दुल गफूर बोला—मैं इस वक्त घर जा रहा हूं। इतनी रात गये कहाँ सैर कराऊँ।'

'अमां यार।' मरघट के दो चक्कर मार दे। पैसे ले लेना। अब्दुल गफूर मान गया।

घुमा दिया। सवारी उतार दी। सवारी बोली—तेरा किराया गद्दी पर रखा है। उठा ले।

अब्दुल ने उठाया तो चांदी की अशर्फी थी। तब तक यह सवारी गायब हो गयी थी। आश्चर्य में डूबा अब्दुल गफूर घर आया। अशर्फी चुपचाप रख दी। किसी को न कहा।

अगली रात फिर सवारी मिली। घुमा दिया।

फिर वही एक अशर्फी।

अब्दुल गफूर से न रहा गया। उसने वह अशर्फी अपनी बीवी को देकर सब कुछ उसे कह दिया। पर उस रात में वह सवारी उसे न मिली। महीनों इन्तजार किया, पर सवारी गायब थी। शायद पत्नी से भेद खोल देने का परिणाम था। बेचारा अब्दुल गफूर।

इसी प्रकार मेरे एक मित्र हैं श्री रमेश गुप्ता उनके अनन्य मित्र श्री दरबारी लाल मित्तल ने अपना एक विचित्र सस्मरण सुनाया।

काशीपुरा बनारस की संकरी गली में एक पुराना पीपल का पेड़ है। शाम के समय लखन निकला। बहुत जोर से पेशाब लगा। उसने पीपल के पेड़ की फड़ पर आसपास किसी को न देख पेशाब कर दी। जब घर आया तो अपने में न था। वह पागल हो गया था।

बहुतेरा इलाज कराया, पर बच न सका। झाड़फूँक हुई पर बचा नहीं। बार-बार चीखता था, 'पेशाब क्यों की तूने मुझ पर ? पेशाब क्यों की ?

लखन भरी जवानी में मर गया। शायद इसी कारण हमारे शास्त्र पितृ दोष और प्रेत दोष को स्वीकार करते हैं

और यहाँ वहाँ लघुशंका या महाशंका को मना करते हैं।

सच्ची दुनिया से उद्धृत एक सत्य घटना प्रस्तुत है—

इलाहाबाद जंक्शन (उ० प्र०) की रेल लाइन के पास एक प्राचीन कब्र को बचाकर रेल लाइन गयी है। वहाँ लाइन सीधी जा सकती थी पर उसको मोड़ दिया गया है। इस बात के निश्चित प्रमाण हैं कि जब-जब भी रेलवे लाइन उस जगह पर डालने की कोशिश की गयी तो वह सुबह तक उखाड़ कर फेंक दी जाती थी। पहरा भी लगाया गया तो देखा गया कि सवेरा होने से पहले ही सब उखड़ कर दूर जा पड़ता था। उखाड़ने वाला दिखाई न देता था। लोग यहाँ किसी सिद्ध फकीर की मजार बतलाते हैं। बाद में जब लाइन थोड़ी जगह छोड़ कर डाल दी गयी तो उपद्रव बन्द हो गये। उसी स्थान पर आज कल नयी मजार बना दी गयी है। क्यों, है न विचित्र बात ?

इस प्रकार भूत-प्रेतों पर प्रचुर सत्य संस्मरण उपलब्ध हैं, जो भूत-प्रेतों के अस्तित्व को न केवल स्वीकार करते हैं, वरन् उनके अच्छे बुरे क्रिया कलाओं को भी उजागर करते हैं। इन्हें ही वृहद् अर्थों में पराशक्ति कहते हैं। आइए अब हम अपने अगले अध्याय की ओर बढ़ें।

———

निष्कर्ष

आज से लगभग तीन चार दशक पहले पश्चिम के वैज्ञानिक न तो आत्मा का अस्तित्व मानते थे और न ही भूत-प्रेत का ही अस्तित्व स्वीकार करते थे, क्योंकि उनका थोथे तर्क और कल्पना में कोई विश्वास नहीं था। ठोस प्रमाणों और परिक्षणों के अभाव में कोई बात मानना उनका स्वभाव नहीं था। इसके विपरीत भारतीय सनातन धर्म तो इनका अस्तित्व बड़े व्यापक रूप में स्वीकार करता रहा है। हमारे ऋषि मुनियों ने तो इनके लिए एक अलग शाखा ही बना दी, जिसका नाम 'पराविज्ञान' रख दिया और इसके अन्तर्गत लगातार अनुसंधान करते रहे।

आपको यह जानकर बेतरह आश्चर्य होगा कि इस संसार की सबसे छोटी कथा भी भूत-प्रेतों पर ही है। भूत-प्रेतों के अस्तित्व और कल्पना पर हर व्यक्ति की अपनी निश्चित धारणा है और अपने अनुभव हैं। कई बार भूत का भय आदमी के प्राण हरण कर लेता है पर वह "भूत" नहीं होता है केवल भय होता है। भय का भूत के विषय में बतलायी गई घटना में भी भय के भूत ने प्राण ले लिए थे, एक व्यक्ति श्मशान में कील ठोंकने गया था। घटना कुछ इस प्रकार है—रात के अन्धकार में जल्दी-जल्दी में अपनी धोती पर ही कील ठोंक दी थी जब वह उठा तो उसे लगा कि श्मशान में 'कोई' उसकी धोती खींच रहा है। इस बात का पता तब चला जब उन्होंने

कील में फंसी मृतक की धोती के टुकड़े को प्राप्त किया।

भूत-प्रेत के विषय में न केवल हमारे देश में वरन् पूरे विश्व में तरह-तरह की धारणाएँ फैली हैं। सभी धर्मों में कोई न कोई ऐसा रिवाज प्रचलित है, जो भूत-प्रेतों की मान्यता को सिद्ध करता है। हिन्दू धर्म को ही लें भूत-प्रेतों की एक अलग योनि मानी गई है। उसके अनुसार मनुष्य को कर्मों के अनुसार प्रेतयोनि में भी रहना पड़ता है। इनका निवास खंडहरों, सुनसान इमारतों पीपल, श्मशान आदि में माना गया है। हमारे यहाँ दाह संस्कार के बाद अनेक कर्मकाण्ड किए जाते हैं, ताकि 'आत्मा' को सद्‌गति मिल जाए।

मुसलमान भूत-प्रेतों को बुरी रूह मानते हैं। उनके यहाँ पीर और मुल्ला भूत-प्रेतों को वश में करने के लिए झाड़ फूँक करते हैं, तावीज देते हैं, अंगारे पर लोबान इत्यादि डाल कर भूत भगाने की क्रिया करते हैं। हमारे यहाँ ताँत्रिक यह क्रिया करते हैं।

भूत-प्रेतों के किस्से न केवल गाँव कस्बों में, बल्कि बड़े-बड़े शहरों में भी सुनने को मिलते हैं, जहाँ ओझा, ताँत्रिक इस कार्य को कर रहे हैं। प्रश्न उठता है कि क्या सचमुच भूत-प्रेत होते हैं ?

भूत-प्रेतों से संबंधित एक और घटना इस प्रकार है—सन् १९६९ में उड़ीसा में एक ग्राम में दो मित्रों ने शर्त लगाई कि अमावस्या की अर्ध रात्रि में जो भी श्मशान के एक विशिष्ट स्थान पर कील ठोंक देगा उसे नकद इनाम दिया जायेगा। आकर्षक इनाम का लालच और भूत-प्रेत के अस्तित्व पर विश्वास न होने के कारण एक मित्र श्मशान में जाने के लिए

तैयार हो गया। शर्त के अनुसार घनघोर अन्धेरी रात में कील ठोंक कर ज्योंही वह लौटने लगा कि अचानक उसे अनुभव हुआ कि उस कब्र में से कोई उसकी धोती पकड़ कर खींच रहा है। ऐसा भयानक विचार आते ही, उसने चीख मारी और वहीं बेहोश हो गया। लोगों को उसका शव ही मिला। लोगों ने यही समझा कि उसे किसी प्रेत ने मार दिया था, क्योंकि उसने श्मशान में कील ठोकने का दुस्साहस जो किया था। इससे प्रेतात्माएं रुष्ट हो गयीं और दुस्साहस का परिणाम सामने था। बहुत दिनों तक यह रहस्य ही रहा।

आप स्वयं देखें इसमें भूत-प्रेतों ने कुछ नहीं किया, केवल भय का भूत था जो उस व्यक्ति की मौत का कारण बना। कट्टर पंथी वैज्ञानिकों के अनुसार भूत-प्रेत भी उसी तरह के भ्रम हैं, जिस तरह रेगिस्तान में पानी के लिए भटकते हुए व्यक्ति को परछाईं भी पानी दिखलायी देती है। मगर जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता जाता है, पानी उसे नहीं मिलता और वह खोजते-खोजते अपनी जान ही गंवा देता है। वास्तव में वहाँ परछाई के कारण उसे पानी का भ्रम होता है और वह इस भ्रम में पड़कर मृत्यु को प्राप्त होता है। इसे दृष्टि भ्रम कहा जाता है।

अब मैं 'मनोविज्ञान' के एक तर्क का उल्लेख करूँगा, जिसमें फ्रायड ने इसे मस्तिष्क का भ्रम माना है। यह भ्रम हमारे अवचेतन में सदैव बना रहता है। यह भ्रम निर्मूल भी हो सकता है तथा अंधविश्वास भी हो सकता है।

इसी प्रकार अनेक भ्रम हो सकते हैं जिनमें नशा, परेशानी भय की स्थिति या असामान्य मनोदशा में मनुष्य को अनेक

प्रकार के भ्रम होने लगते हैं। उसे भयानक शक्लें भी दिखलायी देती हैं। मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे कई रोगियों को ठीक किया है, जो स्वयं पर ऊपरी बाधा मानते थे। ऐसे व्यक्ति अन्धेरे से घबराते थे, उनके सामने हर समय अज्ञात परछाई बनी रहती थी और कान डरावनी आवाज सुनते थे। कई बार उन्हें रात में घुँघरूओं की आवाज सुनाई पड़ती थी। डाक्टर इसे मनोरोग मानते हैं और इसकी चिकित्सा भी करते हैं। इसके विपरीत मेरे ताँत्रिक जीवन में अनेक ऐसे रोगी भी आये जो चिकित्सा से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सके। जहाँ तक भय का प्रश्न है, वह बच्चों को हो सकता है, क्योंकि उनके मन में भूत-प्रेतों, राक्षसों परियों की रोचक कहानियाँ पढ़कर एक ग्रंथि बन चुकी होती है, जो बड़े होने पर भी समाप्त नहीं होती है। बहुत से लोगों की यह मान्यता है कि अकाल मृत्यु के बाद व्यक्ति भूत बन जाता है भूत-प्रेतों पर शोध करने वाले वैज्ञानिक भी इस दिशा में अब तक पर्याप्त प्रमाण नहीं जुटा सके हैं। हैरी प्राइस नामक व्यक्ति लगातार ४० वर्ष तक भूत-प्रेतों का अस्तित्व ढूंढ़ने का प्रयास करता रहा। उसने कई प्रमाण देने की कोशिश की, जो बाद में प्रामाणिक सिद्ध नहीं हो सके ?

भूत-प्रेतों का अस्तित्व सिद्ध करने के उद्देश्य से सन् १८८० में 'स्पिरिट फोटोग्राफी' की भी खोज हुई थी, विलियन मम्लर ने अमरीका के दिवंगत राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की पत्नी की तस्वीर खींची तो उसमें लिंकन की तस्वीर भी आ गई, जो कब के मर चुके थे। कुछ साधक श्मशानों में प्रायः रात के समय चमकती हुई कोई वस्तु देखते हैं, जो जुगनू की तरह कभी चमकती है और कभी बुझती है। वैज्ञानिकों का कथन है कि वास्तव में वह हड्डियाँ होती हैं, जिनमें बचा हुआ फास्फोरस

रात्रि में जलता हुआ सा अनुभव होता है। वैज्ञानिकों की यह धारणा किस शोध पर आधारित है क्या कहा जा सकता है? पर विचारणीय प्रश्न यह है कि वह फास्फोरस साधक को साधना काल में ही क्यों दिखलायी देता है? क्या वह साधना की प्रतीक्षा करता है? वास्तव में भूतप्रेतों की गुत्थी इतनी जटिल और उलझी हुई है कि इस पर जितना भी शोध किया जाये कम है।

भूत-प्रेतों जैसी वायवी हलचलों का अस्तित्व विज्ञान स्वीकार भी करता है और अस्वीकार भी, धर्म इनके अस्तित्व को मानता है शायद दो चार वर्ष के बाद विज्ञान इन आत्माओं से चाहे जब संपर्क करने की स्थिति में आ जाए तब और भी ये रहस्य खुल सकते हैं, परीक्षण बराबर चल रहे हैं, यह शुभ लक्षण हैं फिलहाल इस विषय पर केवल इतना ही पर्याप्त है।

प्रिय पाठकों हम अब अपने अगले अध्याय की ओर बढ़ते हैं।

भूत-प्रेतों का आवाहन

मनुष्य की आत्मा अजर अमर है। जिस प्रकार वस्त्र जीर्ण हो जाने पर हम नए वस्त्र धारण करते हैं उसी प्रकार शरीर जीर्ण हो जाने पर आत्मा दूसरा शरीर धारण करती है ऐसे कई अनुभव हैं कि मृत्यु के पश्चात् आत्मा अपने बारे में मनुष्य के साथ अदृश्य रूप से बात करती है।

सन् १९०२ में न्यूयार्क शहर में फॉक्स ने एक मकान खरीदा और सपरिवार रहने लगा। वहाँ उसने पाया कि उस मकान में विचित्र आवाजें सुनाई देती हैं और हर कमरे में चहल पहल हो रही है। धीरे-धीरे फॉक्स ने उससे बातचीत करने की तैयारी करनी शुरू की। अंग्रेजी वर्णमाला के समस्त अक्षर लिखे गये। अंक भी लिखे गये। उसने इस विधि को प्लेनचिट का नाम दिया।

उस दिन से अमेरिका में इस की चर्चा प्रारम्भ हुई।

यहाँ आत्मा को बुलाने के सम्बंध में एक बात है। एक समय पेरिस शहर में किसी एक व्यक्ति के घर में चक्र बैठाया गया। उस घर की मालकिन उस चक्र की माध्यम थी। उसका पौत्र पलंग पर सोया हुआ था। कुछ ही समय में उसकी आत्मा शरीर छोड़कर माध्यम के पास गई। अतः उस लड़के ने उस दिन स्कूल में जो किया था वह लिखने लगा। पर लिखते-लिखते बीच में रुक गया। वहाँ जाकर लोग देखते हैं तो उस लड़के ने करवट बदली थी। इधर वह मध्यस्थ स्त्री पुनः लिखने लगी यह सत्य है मृत व्यक्ति की आत्मा की तरह जिंदा व्यक्ति की आत्मा को स्वतंत्रता नहीं होती।

ऐसा भी देखा गया है कि आत्मा अपनी पहचान देने के लिए अनेक प्रकार के विचित्र उपायों का प्रयोग करती हैं। कई बार ये आत्माएँ झूठ भी बोलती हैं। ऐसा अनुभव में आया है। इनमें से कुछ तो इतनी चतुराई से झूठ बोलती हैं कि पूरा विश्वास बैठ जाता है।

यह सत्य है कि नीच श्रेणी की आत्माऐं बहुत उपद्रव करती हैं। दुष्ट व्यक्ति की आत्मा अपनी दुष्ट वृत्ति कभी नहीं

भूलती। भूत द्वारा पकड़ा जाना, घर में गंदी चीजों का फेंका जाना, लोगों को भय दिखाना यह सब भूतों का काम होता है। स्वयं आत्मा कुछ नहीं कर सकती।

हमारे देश में भूतग्रस्त लोगों के ठीक करने के अनेक उपाय प्रचलित हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि तांत्रिक लोग जो मंत्र बोलते हैं उसे सुनते ही भूत भाग जाता है। बंगाल में एक गंगा नामक ताँत्रिक रहता था। एक बार एक व्यक्ति ने उसके पुत्र से पूछा—'यह तुम्हारा मंत्र तंत्र क्या है ? तो उसने कहा मंत्र तंत्र तो केवल विश्वास निर्माण करने के लिए है। वैसे हम भूत से ग्रस्त रोगी को मेस्मेराइज कर उसका भूत भगाते हैं।

उत्पात्ती भूतों को कष्ट पहुँचाने के अनेक उपाय हैं। पर उसका मैं यहाँ वर्णन नहीं करूँगा। क्योंकि भूतों को तकलीफ देने की इच्छा से लोग इसका प्रयोग करेंगे। तंत्र शास्त्र में सभी प्रकार की विधियाँ दी हैं। शनिवार या मंगलवार, अमावस्या की रात्री में प्रेत पर अथवा श्मशान में मदिरा और सभी प्रकार का माँस लेकर "ओ३म् ह्रीं ह्रीं श्रीं हूँ फट स्वाहा" मंत्र जपने से हर प्रकार के भूत-प्रेत बुलाये जा सकते हैं। वे आते भी हैं।

ऊपरी हवा

ॐ नमो आदेश गुरु का।
काली चिड़ी चिग चिग करे।
धोला आवे वाते आवे हरे।
यती हनुमान हांक मारे।
मथवाई और बाई जाये भगाई।

हवा हरे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो।
मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन साँचा!

निम्न मंत्र को पढ़ते हुए रेखा खींचे। यह क्रिया ३१ बार करें फिर रोगी को बैठा कर पुनः ११ बार इस मंत्र से उसका झाड़ा करें। इस प्रकार वह पूर्ण स्वस्थ हो जायेगा।

बैताल

"ओ३म् नमो अगिया वीर बैताल। पैठि सातवें पाताल। लाँघ अग्नि की जलती झाल। बैठि ब्रह्मा के कपाल। मछली, चील, कागली, गूगल, हरिताल। इन वस्तां को लै चलि। न लै तो माता कालिका की आन।"

किसी भी होली की रात एकांत स्थान पर बैठकर इस मंत्र का जप करें। जप के समय धूप तथा चर्बी का दीपक जलता रहे। जब बेताल आए तो उसे उपरोक्त सामग्री भेंट करें।

सामग्री—मछली, चील, गूगल, हरताल कागली।

डाकिनी

"ॐ स्यार की खबासिनी। समन्दर पार धाई। आव, बैठी हो तो आव ठाड़ी हो तो ठाड़ी आव चलती आ। उछलती आ न आये डाकिनी तो जालंधर पीर की आन। शब्द सांचा। पिण्ड काँचा। फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा॥

किसी चौराहे पर या फिर अपने साधना स्थल पर निर्वस्त्र होकर बैठें। माँस और मदिरा पास ही रख लें। चर्बी का चारमुखा दीपक जलायें और इसका जप करें। जब २१ मालायें हो जायें तो अपने हाथ में पीली सरसों लेकर सभी दिशाओं में

फेंक दें। और पुनः मंत्र का जप प्रारम्भ कर दें तो डाकिनियाँ स्वयं दौड़ती हुई आयेंगी और कहा कार्य तुरन्त सम्पन्न करेंगी।

मसान

सफेदा मसान, गुरु गोरख की आन। यमदण्ड मसान, काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मद पीर की आन।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए २१ बार झाड़ा करने से मसान दोष समाप्त हो जाता है।

डाकिनी

ॐ नमो नारसिंह पार्डहार भस्मना। योगिनी बंध डाकिनी बंध चौरासी दोष बंध अष्टोत्तर शत व्याधि बंध, खेदी खेदी, भेदी भेदी, मारे मारे, सोखे सोखे, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, कुरों नारसिंह वीर की शक्ति।

किसी भी ग्रहण में उपरोक्त मंत्र सिद्ध कर लें फिर इस मंत्र का सस्वर उच्चारण करते हुए बाधा ग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देवें। तुरन्त लाभ होगा।

तांत्रिक क्रिया से मुक्ति

"एक ठो सरसों। सौला राई। मोरो पटवल को रोजाई।

खाय-खाय पड़े भार । जे करै ते मरे । उलट विद्या ताही पे परे । शब्द साँचा । पिण्ड काँचा । हनुमान का मंत्र साँचा । फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा । मेरे गुरु का वचन सांचा ।"

यदि किसी तांत्रिक ने अभिचार कर्म कर दिया है तो थोड़ी राई सरसों और नमक मिलाकर रख लें । इसके बाद इस मंत्र का जप करते हुए ११ बार बाधाग्रस्त का उतारा करें और फिर जलती हुई अंगीठी में यह सामग्री झोंक दें तो अभिचार क्रिया का प्रभाव समाप्त हो जायेगा और बाधा ग्रस्त ठीक हो जायेगा ।

टोना टोटके

"लोना सलोना । योगिनी बाँधे टोना । आवहु सखि मिलि जादू कवनु । कवनु देश कवनु फिर आदि । अफूल फुलवाई ज्यों ज्यों आवै बास, त्यों त्यों (अमुक) आवै हमारे पास । कवरू देवी की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मोहिनी ईश्वरोवाचा मेरे गुरु का वचन सांचा !"

इस मंत्र को जोर जोर से पढ़ते हुए झाड़ा करें या सरसों मारे तो टोना टोटका तुरन्त समाप्त हो जाता है ।

चुड़ैल हेतु

ॐ नमो आदेश गुरु का । कवलाछरी बावन वीर । कलू बैठनो जल के तीर । तीन पान का बीड़ा खवाऊँ । जेठे बैठा जतलाऊँ । वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति । फुरे मंत्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा ।

इस मंत्र से झाड़ा करने से बाधा ग्रस्त सभी चुड़ैल दोषों से मुक्त हो जाता है ।

औपरा हेतु

उलटंतं देह, पलटंतं काया। उतर आव गुरु ने बुलाया। शेष सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र का जाप करते हुए बाधाग्रस्त व्यक्ति का ३१ बार झाड़ा करें तो रोगी स्वस्थ हो जाता है।

डायन

"जल बांका। थल बाँका। (अमुकेर) काया बांका। डाइनेर दृष्टि पढ़न पानी। सुनो गोमाया अधर कहानी। समन काटि के माता दिहली। बर उज्जान छोड़े भाठी। घर धूला बान। धूसर बान। शब्द भेदी महाबान। ऐहि मंत्र पढ़ें से। ॐ हानिः श्री राम हुँकारे।"

इस मंत्र का जाप करते हुए धूल-राख सरसों पीड़ित व्यक्ति को मारने से बाधा ग्रस्त व्यक्ति शीघ्र ठीक हो जाता है।

भूत-प्रेत बाधा नाशक यन्त्र

निम्न यन्त्र को भोजपत्र पर केसर से लिखकर देहरी पर गाढ़ देने से या लटका देने से हर प्रकार की भूत-प्रेत बाधा

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	६
४	६	३३	३६

तथा सर्व भय दूर हो जाता है। इस यन्त्र को रविवार के ही दिन लिखें। ग्रहण पर सिद्ध कर लेने के उपरान्त अत्यधिक प्रभावशाली हो जाता है।

अकाल मृत्यु नाशक यन्त्र

निम्न यन्त्र को कभी भी कृष्ण पक्ष की चौदस के दिन वट-वृक्ष की कलम से भोजपत्र पर लिखें और पहना देवें। इसके पहनने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है। यह यन्त्र सब प्रकार से रक्षा करता है। इस यन्त्र को ढाई घर की चाल से लिखें।

२	९	४
७	५	३
६	१	८

नाम.........

आत्म रक्षा हेतु

निम्न यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में अष्ट गंध से भोजपत्र पर

१	६	२
७	१०	३
८	४	९

नाम.........

लिखें। धूप दीप आदि से विधिवत पूजन कर ताबीज में भरकर पहन लें। इससे सब प्रकार से रक्षा होती है। इसे पहनने वाले जातक को कोई भ्रम नहीं होता है।

भूत ज्वर नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवतेउड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र का सस्वर उच्चारण करते हुए मयूर पंखों से झाड़ा देने पर भूत का ज्वर उतर जाता है। प्रयोग करने से पूर्व इस मन्त्र को ग्रहण होली पर सिद्ध अवश्य कर लें।

उलूक

उल्लू ही एक मात्र ऐसा पक्षी माना गया है, जो दिन में देख नहीं सकता। उसकी आँखों की बनावट ही कुछ इस प्रकार की है कि वह सूर्य की रोशनी या प्रकाश में देख नहीं सकता, आँखें चौधियां जाती हैं। वह केवल अन्धकार में देख सकता है। बिल्ली से ७५ प्रतिशत अधिक उल्लू की दृष्टि रात्रि में कार्य करती है। उल्लू की उड़ान सुनसान, भयानक स्थानों-खंडहरों आदि में ही अधिक होती है। ऐसे ही स्थान उसे प्रिय भी हैं। शकुन शास्त्र के अनुसार जिस भवन पर उल्लू या चील बैठती है वह शीघ्र ही अपशकुनों और आपदाओं की परिधि में आ जाता है। उल्लू एक डरावना पर सुन्दर पक्षी माना गया है। उसकी बोली अशुभ है। कहा जाता है, अगर उल्लू किसी का नाम लेकर पुकारे तो उसकी मृत्यु लगभग निश्चित होती है। उल्लू निर्जनता और विपदा का प्रतीक है।

मुहावरा बन गया है…और वहाँ उल्लू बोलने लगे…उल्लू के सम्बन्ध में यह न केवल भारत में वरन् विश्व के अनेक देशों में भी अपशकुनी के रूप में अनेक बातें प्रचलित हैं। उल्लू को बेवकूफ भी माना गया है। "उल्लू" का प्रयोग मनुष्य के लिए इसी रूप में किया गया है।

कुरूप, डरावनी, विकृत और तमाम अपशकुनों के बावजूद उल्लू लक्ष्मी का वाहन माना गया है। धन की देवी इसी का वाहन रूप में प्रयोग करती है। अपनी आकृति और व्यवहार के कारण उल्लू तन्त्र, मन्त्र में बड़ा महत्वपूर्ण माना गया है। सच तो यह है कि उल्लू की छिपी उपयोगिता को केवल तांत्रिकों ने ही पहचाना है। इसी कारण एक अलग ही शाखा 'उल्लूक तंत्र' के नाम से स्थापित हो गई है।

उल्लू वास्तव में लक्ष्मी का प्रतीक है। लक्ष्मी के साथ घनिष्टता के कारण, "लक्ष्मी साधना" में इसका विशेष महत्व है, और इसी कारण उल्लू को तन्त्र में अजीब-सा रहस्यमय, स्थान दिया गया है। "उलूक साधना" एक अति रहस्यमय, जटिल तान्त्रिक प्रकिया है और शमशान से संबंध रखती है। उल्लू सिद्ध-तांत्रिक का पथ प्रदर्शन भी करता है। आज के युग में इस प्रकार की साधना करना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है।

कई वर्ष पूर्व उत्तराखंड (हिमालय) की यात्रा के अवसर पर एक सिद्ध योगी से परिचय होने पर उसके द्वारा "उलूक" साधना की वास्तविक विधि का पता चला। उल्लू की विशेषता है वह जीवित अवस्था में और मरने के बाद दोनों ही स्थितियों में तन्त्र में उपयोगी सिद्ध होता है इसके अतिरिक्त तांत्रिक लोग उल्लू के हर अंग का तन्त्र में उपयोग करते हैं।

"उलूक साधना" प्रायः दीपावली के अवसर पर ही सम्पन्न की जाती है। श्रद्धा, निष्ठा और एकाग्रता के साथ इसको सम्पन्न कर आप लाभान्वित हो सकते हैं।

दीपावली से पूर्व कभी भी किसी भी समय उल्लू के पंख का एक हिस्सा प्राप्त कर लें। दीपावली के दिन उस पंख को लक्ष्मी की प्रतिमा के तले रख दें। पूजा उपासना के उपरांत हवन कुंड में डालकर भस्म कर दें। जब तक वह पंख भस्म हो आप ओ३म् "उलूकाय नमः" का निरन्तर जप करते रहें। पंख जलने पर दुर्गन्ध तो होगी। आप उस ओर तनिक भी ध्यान न दें। इसके बाद वह भस्म एकत्रित कर लाल रंग के कपड़े में बाँध लें। अब यह तिलिस्मी भस्म तैयार है। इसे घर के किसी कोने में छिपा कर रख दें।

जब तक यह पोटली आपके घर में रहेगी। धनाभाव कदापि न होगा, इसकी किसी से चर्चा न करें। यह अत्यन्त सरल साधारण किन्तु उपयोगी साधना है, प्रत्येक गृहस्थ बिना किसी भय के कर सकता है। आप इस साधना को करें, आपका कोई कार्य धनाभाव से न रुके, यही हमारी कामना है।

उल्लू वास्तव में लक्ष्मी का प्रतीक है। इसका प्रमाण आज भी है। जिन व्यवसाईयों ने इसका प्रयोग व्यापार चिन्ह के रूप में किया है, वह करोड़पति बन गये हैं। विश्व प्रसिद्ध हथियार सौदागर औनासिस और राष्ट्रपति की सुन्दर पत्नि जैक्लीन कैनेडी से विवाह करने वाला अरबपति है। उसका व्यापार चिन्ह "उल्लू" है। यह हंसी-व्यंग्य का प्रतीक है, पर धनदायक है।

प्रिय पाठकों। उल्लू, की अन्य साधनाऐं मैं अपनी दूसरी पुस्तक 'उलूक साधना' में लिखूंगा।

जिन्न परी साधना

कोई भी साधना इतनी सरल नहीं होती जितनी कि वह पढ़ने पर दिखलाई देती है। हर साधक जानता है कि साधना और सिद्धि की कुछ गोपनीय कुंजिया और मर्म होते हैं जिनका समुचित प्रयोग करने पर ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है। तांत्रिक जीवन-प्रारम्भ करने के शुरू से ही मेरी रुचि परी सिद्धि करने की थी। मैं जानता था कि परी सिद्धि के बाद भोग की कमी नहीं रहेगी, पर भोग ही मेरी मंजिल नहीं थी।

३० अक्टूबर १९८६ से मैंने जिन्न परी, साधना प्रारम्भ की और ८ नवम्बर १९८६ शुक्रवार को जिन्न परी मेरे सामने थी। जिन्न परी मेरे समक्ष ऐसे प्रकट हुई जैसे किसी शीतल, सुगंधित झोंके को एक अति सुन्दर नारी का आकार दे दिया हो। उसके पास से आती हिना के इत्र की महक मुझे मदहोश किए दे रही थी। उसका गोरा बदन मुझे बेचैन किए दे रहा था। उसने अपनी चीते सी कमर पर हाथ रखते हुए पूछा "कहो क्या चाहिए ? मैं चकित सा उसे देख रहा था। वह खिल-खिलाकर हंस पड़ी उसकी धवल दंत पंक्ति हीरे की कनियों की तरह चमक उठी। उसकी उठती गिरती गर्म साँषें मुझे विचलित किए डाल रही थी। मैंने संयम की डोर खेंची और स्थिर हो गया।

प्रिय पाठकों यह मेरा अनुभूत प्रयोग है। जिन्न परी साधना में शुद्धता संयम और नियम का विशेष ध्यान रखना होता है। नीचे जिन्न परी साधना सरल रूप में लिख रहा हूं। इसके बाद भी अगर कोई जिज्ञासा है तो आप मुझ को नि:संकोच लिखें।

जिन्न परी साधना—यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है यह साधना केवल मध्य रात्रि में करनी होती है। इस साधना में शरीर और आत्मा का शुद्ध होना आवश्यक है। साधक निडर हो तो और अच्छा है।

किसी भी शुक्रवार रात ११ बजे के आसपास ताजे पानी में दस गुलाब के ताजे फूल डाल दें। लगभग दस मिनट के पश्चात उस पानी से स्नान करें।

केवल उच्चकोटि का सुगन्धित तेल और साबुन प्रयोग करें।

रात के ठीक बारह बजे यह साधना प्रारम्भ करें। प्रारम्भ से ही मालाऐं जपनी हैं। माला मंत्र निम्न प्रकार है—

रब्बे इन्नी मंगलबुने फन्तसीर।

प्रिय साधकों। यह मेरी स्वयं की परिक्षित साधना है। मैंने इससे शत प्रतिशत सफलता प्राप्त की है अगर आप कुछ और जानना चाहते हैं तो निःसंकोच लिखें।

लील परी साधना

सौंन्दर्य और स्त्री-पुरुषों के लिए यह दोनों कोमल बातें हैं। किसी भी पुरुष को अंशमात्र सम्मोहित करने के लिए यह दोनों वस्तुएँ मनुष्य के सामान्य जीवन में अभिमान का स्थान रखती हैं,लेकिन यही दोनों साधना और सिद्धि के समय पतन का कारण बन जाती हैं। उदाहरण के लिए आपने जटिल साधना के पश्चात् दुर्लभ सिद्धि प्राप्त कर ली, कोई भी कर्ण पिशाचिनी, यक्षिणी या परी आपके समक्ष उपस्थित हुई उसने

अपनी चीते सी कमर पर हाथ रखकर मद भरी मुस्कराहट से पूछा—कहो साधक क्या चाहिए ? आपने तत्काल कहा—आप पत्नी के समान मेरे पास निवास कीजिए। इसके पश्चात् आप का पतन निश्चित है यह सोच लें। किसी ने सच ही कहा है —भोग में जो डूबा फिर ना उभरा जिन्दगानी में।

जिन्न परी या लाल परी साधना के मध्य आप 'काम' को अपने पास न फटकने दें अन्यथा परी का लुभावना रूप मीठी बोली अपने सैलाब में आपकी साधना, सिद्धि सब बहा के ले जाएगी और आपकी वही स्थिति होगी जो कारवां गुजर जाने के पश्चात गुबार की होती है। नीचे मैं लीलपरी की साधना का विवरण दे रहा हूँ। यह साधना भी मैंने की थी, लेकिन सिद्धि के समीप आते आते किन्ही अपरिहार्य कारणों से त्यागनी पड़ी।

चतुर्थी मंगलवार को यह साधना शुरू करें। सोमवार को अपनी प्रारम्भिक तैयारी अवश्य ही पूर्ण कर लें। अन्यथा कोई कमी रहने पर व्यवधान आ सकता है। इसमें चारखाने का तहमद (लुंगी) छेदों वाली (जालीदार) मुसलमानी टोपी, छेदों वाली (जालीदार) सफेद बनियान (गंजी) पहिनें। सवा मीटर कपड़ा जिसे आसन के स्थान पर प्रयोग करना है ले लें इस सफेद कपड़े पर नमाज पढ़ने की मुद्रा में दोनों घुटने पीछे की ओर (दोनों हाथ जंघाओं पर) बैठें। सामने तेज सुगन्ध वाला गुलाब का इत्र, (गुलाब जल नहीं) एक मीठा पान, कुछ सफेद फूल एक पानी का सुराहीदार लोटा, सुगन्धित धूप और लोबान सामने रखें। शुद्ध हकीक की माला (केवल ९० दानों वाली हो (१०८ मनकों की माला का प्रयोग पूर्णतः वर्जित है) भी पास रखें। अब साधक को चाहिए कि वह किसी सुगन्धित

ताजे लाये गये पानी से किसी अच्छे सुगन्धित साबुन का प्रयोग करते हुए स्नान करें। स्नान के पश्चात् यह क्रिया आरम्भ करें। समय मध्य रात्रि के आसपास हो। वातावरण दमघोटू न हो। प्रति-दिन जितनी माला संभव हो जपें। एकाग्रता और संयम का पूरा-पूरा ध्यान रखें। लील परी के प्रत्यक्ष होने पर पास रखा मीठा पान उसे खिलावें। ऐसा करने से लीलपरी साधक की दासी बन जायेगी। उसकी सारी आज्ञा मानेगी। मंत्र इस प्रकार है—

बिसमिल्ला हर्रहमान निर रहीम लाय जल्ललितल हाले मकताइल्लाहू।

प्रिय साधकों! लील परी वशीभूत होने पर आपकी हर आज्ञा मानेगी। वह आपको महत्वपूर्ण गुप्त सूचनाएं, द्रव्य के साथ पत्नी मित्र सहयोगी, परिचारिका और बहन के समान रहेगी। लीलपरी किस रूप में आपके पास रहेगी। इसका चयन तो आपको ही करना होगा।

अप्सरा मेनका साधना

जब जब देवराज इन्द्र को यह अनुभव हुआ कि अमुक ऋषि घोर साधना कर उसका आसन हड़पना चाहता है। तब-तब वह अपनी अप्सराओं को उनके तप को भंग करने के लिये भेजता है। अभाग्यवश अगर उसकी अप्सरायें असफल हो जाती हैं। तब वह अपनी परम प्रिय, अनिंद्य सुन्दरी कामिनी सी मेनका को भेजता है, और अप्सरा मेनका प्रायः सफल होकर ही लौटती है। हमारे अनेक तपस्वी इसी रूपसी मेनका के हाथों छले गये थे। यह मेनका कितनी सुन्दर है आप इसी से अनुमान लगा सकते हैं।

मेनका का शरीर मानो आटे को भली भाँति गूँथकर उसमें गुलाब का गुलाबी रंग मिला दिया हो, आटे में पानी के स्थान पर सुगन्धित गुलाब जल का प्रयोग किया हो। मेनका की हंसी ऐसी है जैसे शून्य में सितार के कोमल तारों को छेड़ दिया हो। हँसते समय मेनका की धवल दंत पंक्ति ऐसे चमक उठती है। जैसे अंतहीन आकाश में बिजली। अप्सरा मेनका इतनी चंचल है जैसे आवारा मस्त हवा का शीतल झौंका कभी इधर तो कभी उधर निरूद्देश्य घूमता रहता है। सुन्दरता का आदि और अन्त मेनका में ही है। कल्पना करें इतनी रूपसी मेनका को देखकर "फरिश्ता भी बहक जाये, आदमी क्या है ?"

तन्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के मध्य मैंने विचार किया जब हम परी, यक्षिणी पिशाचिनी सिद्ध कर सकते हैं तो चंचल मादक अप्सरायें क्यों नहीं ? मेरे इसी विश्वास ने लगन को जन्म दिया और इस लगन ने इसकी सिद्धि के विधान तक पहुँचा दिया।

उत्तराखंड ! तपस्वियों और साधकों का स्वर्ग ! यहीं पर भटकते हुए मुझे एक तपस्वी मुनिश्वर गिरी मिले, जिन्होंने मुझे यह अति गोपनीय साधना बतलाई यह एक अत्यन्त जटिल और कष्टप्रद साधना है। मैंने स्वयं इसका प्रयोग किन्हीं अपरिहार्य कारणों से कभी नहीं किया है। करने की इच्छा अवश्य है देखें प्रभु कब इसका अवसर प्रदान करता है। यहाँ मैं यह तथ्य स्पष्ट कर दूं अप्सरा सिद्ध करने के पश्चात आप उसे प्रेमिका के रूप में ग्रहण करके भोग सकते हैं, लेकिन यह सब धोखा होगा, मिथ्या होगा। आप केवल तुष्टि का अनुभव करेंगे, तुष्टि प्राप्त नहीं करेंगे। आप अप्सरा को अपने अनुकूल रखें, उसका प्रयोग अन्य कार्यों में करें। भोग को लेकर उसके मोह में न फंसें अन्यथा आपकी साधना……?

प्रिय साधकों ! यह साधना ३१ दिन की है। इसमें शुद्ध स्फटिक की अभिमंत्रित माला आसन के रूप में पीत वस्त्र, हकीक की माला, गीदड़सिंगी और गुलाब का इत्र के साथ-साथ रक्षा कवच भी रखें।

यह साधना शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से प्रारम्भ करें। साधक को चाहिए कि वह कुएं के सुगंधित ताजे जल से स्नान कर तिलक लगावे, गले में गुलाब के फूलों का हार पहिने, कान में पुष्प लगावें और आस-पास गुलाव का इत्र छिड़कें और ३१ माला निम्न मंत्र की जपें। जाप के समय साधक का एकाग्र-चित्त, हृदय निर्मल और मन में विश्वास होना चाहिए कि—अप्सरा मेनका उसके समक्ष प्रत्यक्ष होकर ही रहेगी।

सिद्धि प्राप्त होने पर स्वयं मेनका पूरे शृंगार के साथ उपस्थित होती है और साधक की सहयोगी बनती है। मेनका के प्रत्यक्ष आने पर अपने गले की माला उसके गले में डाल दें। प्रत्युत्तर में मेनका अपनी कोई भी वस्तु साधक की गोद में फेंक देगी। यही सिद्धि का स्पष्ट संकेत है। मंत्र निम्न प्रकार है—

ॐ सः मेनके आगच्छागच्छ स्वाहा।

अप्सरा उर्वशी साधना

राजा इन्द्र की कुछ महत्वपूर्ण, अप्सराओं में से एक उर्वशी भी है जो अपने अनुपम सौन्दर्य, बुद्धि कौशल और मायाजाल के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसकी कंचन काया से निरन्तर मस्त मादक सुगन्ध विसर्जित होती रहती है।

यह सत्य है कि उर्वशी मेरा उद्देश्य कभी नहीं रही है जिसने ऋषि मुनियों तपस्वियों, मनस्वियों को अपने रूप के

जाल में फंसाकर कहीं का नहीं छोड़ा, भला वह मुझे क्या समझती ? तंत्र जो शक्ति की साधना और आराधना के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध है। मैं उसका एक अनन्य साधक होने के नाते इस चुनौती को क्यों न स्वीकार करता अंततः मेरे साधक मन ने गत वर्ष दीपावली से एक महत्वपूर्ण इस चुनौती को स्वीकार कर साधना का श्रीगणेश कर ही दिया।

वर्ष १९८८ की एक मध्य रात्रि को मैंने इस विचित्र साधना को प्रारम्भ कर दिया। विचार था दीपावली से पूर्व इस साधना को सम्पूर्ण कर लूँगा ताकि दीपावली की रात्रि अपने परिचितों के लिए लक्ष्मी साधना सम्पन्न कर सकूँगा। १५ दिन तक तो मेरी साधना निर्विघ्न सम्पन्न होती रही पर सोलहवाँ दिन आते आते अप्सरा उर्वशी ने अपना मायाजाल फैलाना शुरू कर दिया कभी तेज मादक सुगन्ध मेरे नथुनों में प्रवेश कर जाती तो कभी मेरा आसन ठंडे पानी में भीग जाता तो कभी चित्त बेतरह बेचैन हो उठता। किसी अनजानी आशंका ने मानो घर कर लिया हो।

दीपावली से ठीक ६ दिन पूर्व अप्सरा उर्वशी अपने पूरे दलबल और लावण्य के साथ मेरे समक्ष उपस्थित थी उसका धवल शरीर हवा में लहरा रहा था। घनी काली केश राशि एड़ियों को चूमती हुई इधर-उधर बिखर रही थी, गले हाथों और बालों में गुथे हुए अध खिले पुष्पों की माला थी। वह मेरी कल्पना से भी कहीं अधिक सुन्दर थी उसके होठों पर एक रहस्यमय मुस्कान थिरक रही थी उर्वशी को अपने सामने पा मैं अपनी सुध-बुध खोता जा रहा था। साधना में यही वह स्थिति है जब साधक असफलता को प्राप्त करता है।

मैंने बड़ी कठिनता से स्वयं को संयमित किया और अप्सरा

उर्वशी को देखता हुआ साधना में जुटा रहा उस समय अप्सरा उर्वशी से क्या बात हुई ? यह रहस्य है। वह मैं नहीं बतलाऊँगा। क्योंकि यह मेरी धरोहर है। हाँ मैं आपको अप्सरा उर्वशी की साधना की विधि अवश्य बतला रहा हूँ। आप भी उसे कर अप्सरा उर्वशी को प्राप्त कर सकते हैं।

आप किसी भी शुक्ल पक्ष में पुष्य नक्षत्र देखकर यह चमत्कारी साधना शुरू कर सकते हैं। इसमें स्फटिक की माला से जाप करना जरूरी है। सर्व प्रथम एक श्वेत आसन बिछाकर एक माला निम्न मन्त्र की करे। मंत्र इस प्रकार है—

तत्क्षण्मत्सर्वाप्सिरस आगच्छा गच्छ हूँ यः यः

इस साधना में आप अपने समक्ष स्फटिक के चार दाने, मजमुहा इत्र, फल, पान का बीड़ा और एक सफेद, फूलों की माला रखें। इसके बाद निम्न मंत्र का जाप प्रारम्भ करें। मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ उर्वशी आगच्छा गच्छ स्वाहा

साधक को प्रतिदिन स्नान कर उत्तर दिशा की ओर मुख कर जाप करना चाहिए साधना सम्पूर्ण होने के पश्चात अत्यंत रूपवती उर्वशी अत्यन्त मोहक सुसज्जित वस्त्र धारण कर दोनों हाथ फैलाए साधक के समक्ष उपस्थित होती है।

जरा सोचें बीस वर्षीय अनुपम सुन्दरी उर्वशी के साथ रहना क्या स्वयं में एक वरदान नहीं है ?

स्मरण रखें अगर आप में सच्ची लगन, अटूट एकाग्रता, श्रद्धा और विश्वास के साथ-साथ साधना की पूँजी भी है, तब आप अवश्य ही इन रूपसी अप्सराओं को सिद्ध कर सकते हैं।

यक्षिणी साधना

हमारे प्राचीन तन्त्र शास्त्र में यक्षिणियों को देवी का स्थान प्राप्त है। समस्त यक्षिणियाँ देवी दुर्गा की अनन्य उपासिका तथा सहचरी हैं। स्मरण रहे इसमें कर्ण पिशाचिनी, प्रेतनी, डाकिनी, शाकिनी जैसी आसुरी वृत्तियाँ कदापि नहीं हैं। इनमें अत्यधिक सहनशीलता देखी गई है। इसके अतिरिक्त यह अति शीघ्र सिद्ध भी होती है। हाँ यदि इन्हें जान बूझकर क्रोधित या उत्तेजित कर दिया जाय तो यह कोई भयंकर रूप धारण कर साधक का घोर अहित भी कर देती है। कोई भी साधक इन्हें भूत प्रेतों, परियों की तरह बल पूर्वक वशीभूत नहीं कर सकता है। इस प्रकार का प्रयत्न साधक का अहित ही कर सकता है।

यक्षिणी साधना के मध्य मैंने स्वयं यह अनुभव किया है कि जो वस्तु साधक के भाग्य में नहीं होती है, वह प्रसन्न होकर उसे भी प्राप्त करा देती हैं। उत्तराखण्ड के बर्फीले पहाड़ों में भटकते हुए मैंने स्वयं एक ऐसे तांत्रिक से साक्षात्कार किया जिसे धनदा यक्षिणी सिद्ध थी। उन्होंने मुझे बतलाया कि मैं लगभग सारा भारत घूम चुका हूँ। मुझे कभी भी धन का अभाव अनुभव नहीं हुआ है जब मैंने इसका कारण पूछा तो उन्होंने मुस्कुराते हुए बतलाया मुझे धनदा यक्षिणी सिद्ध है। वही माँ स्वरूपा मुझे प्रतिदिन व्यय हेतु धन देती है।

समस्त यक्षिणियों की साधना लगभग एक प्रकार की ही है, हाँ इसके मन्त्र अवश्य अलग-अलग हैं। साधक इच्छानुसार जिस यक्षिणी की साधना करना चाहे वह कर सकता है। यक्षिणी की साधना में प्रवृत्त होने वाले साधक को निर्भीक

अवश्य होना चाहिए, अन्यथा वह घोर कष्ट का भागी भी हो सकता है। पागल तक हो सकता है।

यक्षिणियों की सिद्धि के लिए निर्धारित मंत्र का निर्दिष्ट संख्या में जप करके दशांश हवन एवं तर्पण करना आवश्यक है। इसकी सिद्धि के उपरान्त साधक को सात्विक वृत्ति में ही रहना चाहिए। ऐसा न करने पर इसकी सिद्धि समाप्त होने का भय बराबर बना रहता है।

यक्षिणी साधना इस प्रकार है—

साधक को चाहिए कि वह सर्व प्रथम सिद्ध गुरु से यक्षिणी का मंत्र प्राप्त करें। योग्य गुरु से ही साधना का प्रारंभिक विधान पूरा करवायें। यक्षिणी साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन कुंवारी कन्याओं को भोजन आदि करावें और उचित द्रव्य का दान भी देवें।

स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण कर पंचोपचार गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य, दीप से पीपल के वृक्ष का पूजन करें फिर उस वृक्ष की किसी भी शाखा पर बैठकर श्रद्धा और विश्वास के साथ धनदा यक्षिणी का देवी रूप में स्मरण करें और निम्न मंत्र का २१००० की संख्या में जप करें। मंत्र इस प्रकार है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु स्वाहा

उपर्युक्त मंत्र का जप केवल मानसिक हो तथा दशांश का हवन एवं तर्पण भी आवश्यक है। मंत्र सिद्धि होने के पश्चात सुना गया है धनदा यक्षिणी स्वयं उपस्थित होकर साधक को धन-धान्य के साथ-साथ सुख और सौभाग्य भी प्रदान करती है।

प्रिय साधकों ! यह प्रयोग मैंने स्वयं किया है और इसके चमत्कारी प्रभाव को प्रत्यक्ष अनुभव किया है। यहाँ यह लिखते

हुए मुझे तनिक भी संकोच नहीं हो रहा है। आज ज्योतिषी, हस्तरेखा विद्, अंकशास्त्री तंत्र के क्षेत्र में केवल पुस्तकों के आधार पर पग रख रहे हैं और तंत्र प्रेमियों को गुमराह कर रहे हैं। तंत्र का मार्ग एक तो वैसे ही जटिल है, उस पर इस प्रकार की चेष्टा 'करेला और नीम चढ़ा' वाली कहावत ही चरितार्थ करता है। यही स्थिति तांत्रिकों के साथ भी है। वह भी ज्योतिष के पावन क्षेत्र में अपना दखल देते हैं अगर हम अपने-अपने क्षेत्र तक ही सीमित रहें, तब न केवल तंत्र, ज्योतिष जैसी विद्याओं के प्रति न्याय करेंगे वरन् स्वयं अपने साथ भी न्याय करेंगे और प्राच्य विद्याओं के प्रेमियों का मार्ग भी सरल करेंगे।

प्रिय पाठकों! अगर आप किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव करते हैं, तब आप निःसंकोच मुझे पत्र लिखकर निराकरण प्राप्त कर सकते हैं। आपकी संतुष्टि मेरा प्रथम लक्ष्य है।

कर्ण मातंगी साधना

ल्हासा में ऊँचे पर्वत के असंख्य शिखरों के बीच बसा अति प्राचीन सा लगने वाला नगर है। अधिकाँश मकान केवल पत्थरों और लकड़ी के बने हैं। दलाई लामा के राज निवास को छोड़कर शेष सभी छोटे बड़े मकान बड़े ही अनगढ़ ढंग से बने प्रतीत होते हैं। पालपा से ल्हासा कोई तीन साढ़े तीन किलोमीटर है। बीच में सियांग नदी पड़ती है। डौलमा मुझे यहीं मिल गया, उसने मुझे बतलाया—हमारे गुरु पानी पर चलकर सियांग नदी पार करते थे। उन्हें इस विधि का अच्छा

ज्ञान था। उसने यह भी बतलाया उन्होंने समाधि ले ली है, पर सूक्ष्म शरीर से अब भी हमारे साथ हैं। कठिन समय में अब भी श्रेष्ठि नोमग्याल का मार्ग दर्शन करते हैं। मैं श्रेष्ठि नोमग्याल के निमंत्रण पर ल्हासा आया था। ल्हासा में मुझे अतिथि गृह में ठहरा दिया था।

यहीं मेरी भेंट लम्बा चौंगा पंजों तक लटकाये-पहिने बर्फ सी धवल नवल हाथ में काष्ठ का थाल लिये वहाँ की परम्परागत साधिका 'जिसी' से हुई थी। वह बीस बरस से अधिक की न थी। चेहरा चपटा होने पर भी आकर्षक गोलाई लिए था। अधरों पर मादक मुस्कान थिरक रही थी और कपोल छोटे-छोटे पर एकदम गुलाबी थे। लम्बा चौंगा डालने के बावजूद वक्ष छिपाए न छिप रहे थे। पर्वत शिखर के समान वह उन्नत थे, डोलमा ने बतलाया जिसी तंत्र साधना में सभी प्रकार का सहयोग देती है। उसकी माँ भी यहाँ साधिका थी। जिसी का रूप यौवन और देह यष्टि मोहक थी।

रात उतर आयी थी। घर से हजारों मील दूर, तंत्र-मंत्र के रहस्यमय प्रदेश में बैठा था। शायद भाग्य का खेल था। नहीं, तंत्र-मंत्र के प्रति मेरी जिज्ञासा लगन मुझे यहाँ तक खींच लायी थी। रात और सरक गयी। उजली रात थी। वातावरण अपरिचित···अनजान···नींद न थी। पलकें बंद थीं पर नींद न थी। हवा मीठी-मीठी भीनी-भीनी थी। कोई दबे पाँव चलता दीखा। उठकर बैठ गया। फिर धीमा स्वर आया—मैं···जिसी ···नींद नहीं आयी···तब पास आ गयी। मद्धिम प्रकाश में उसका चेहरा चमक रहा था। पथरा सा गया मैं। गोम्फा में गहरा सन्नाटा था। हम दोनों सर्वथा एकाँत में थे। उसने कहा, 'कुछ तंत्र साधना करने को है। मैं संग दूंगी। वह और

समीप आ गयी। पर तभी तंत्र के क्षेत्र में जब पहला कदम रखा था, तब की गयी प्रतिज्ञा का स्मरण हो आया—मैली साधना नहीं। मैला काम नहीं। मैंने अपनी बात का विषय बदल दिया और तंत्र-मंत्र साधना सिद्धि के विषय में बात करने लगा। जिस तंत्र की अनन्य, परम्परागत साधकों ने मुझे पहली बार 'कर्ण मातंगी' साधना के विषय में बतलाया। इस अनूठी साधना की विशेषता यह है कि कर्ण मातंगी साधना करने के उपराँत साधक किसी भी व्यक्ति को देखते ही सब कुछ ठीक ठीक बतला देता है। इस कारण सब चकित रह जाते हैं। तिब्बती साधिका जिसी निरन्तर बतला रही थी, 'आज मैं सरल गोपनीय पर अद्‌भुत 'कर्ण मातंगी' साधना के विषय में बतलाऊँगी। जो साधक एक बार कर्ण मातंगी साधना पूर्ण कर लेता है वह न केवल मनुष्य वरन् पृथ्वी के भी अनजाने, अनछूए रहस्यों को भी जान लेता है। 'कर्ण मातंगी मंत्र इस प्रकार है' वह बतलाती है—

ऐं नमः श्री कर्ण मातंगी अमोघे सत्य वादिनी मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय-कथय एहगई श्रीं मातंग्यै नमः।

इस साधना को रात्रि में स्नान कर लाल धोती पहन लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुख करके बैठें। यह साधना शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से प्रारम्भ करें। इस मंत्र की ४१ माला जपें। माला हरे रंग के हकीक की होनी आवश्यक है। साधना के तीसरे दिन राई और तेल की १००१ आहुतियाँ देवें। होम करने के उपरान्त स्नान कर फिर १२ माला जपें। तीसरे दिन अखण्ड जलता दीपक बुझादें और दीपक के तेल को अपने हाथों और तलुवे में भली प्रकार मलें। जिसी बतलाती है—इस साधना के सम्पूर्ण होने पर कर्ण मातंगी भयंकर रूप में प्रकट

होती है। यह केवल भयंकर ही नहीं वरन् हिंसक भी होती है।

'कर्ण मातंगी' साधना में साधक का निडर और उत्साही होना अति आवश्यक है। 'कर्ण मातंगी' साधना के इच्छुक साधक में अपूर्व धैर्य, अटूट निष्ठा, भरपूर श्रद्धा और एकाग्रता होना अनिवार्य शर्त है। इनके अभाव में साधक का घोर अहित तो होता ही है, साथ ही बेतरह असफलता भी हाथ लगती है। अब मैं आपके समक्ष अप्सरा मेनका साधना प्रस्तुत कर रहा हूं।

अप्सरा मेनका साधना

संसार का यदि सबसे क्लिष्ट, गूढ़ और विचित्र शास्त्र कोई है, तो वह तंत्र शास्त्र है। इस शास्त्र में अनेक प्रकार की सिद्धि और साधनाएँ हैं। कुछ चमत्कारी शक्तियों की आराधना, उपासना के विधान भी हैं। इन मायावी शक्तियों में अनेक का नारी रूप है। नारी भी कैसी ? भगवान शिव की त्रिगुणमयी शक्ति जैसी मायावी की माया जैसी। महामाया पराविज्ञान नाद बिन्दु रूप, चन्द्रमा की कलाओं के समान पल-पल बदलने वाली। हूं की फटकारमयी और मंत्रात्मिका स्वरूप तंत्र में भूत, वर्तमान कथन के लिए कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी मम कर्णये···का नाद करने वाली विराट् स्वरूपा की साधना का विधान है। कुछ लौकिक पारलौकिक सुख प्राप्त करने के लिए परियों, अप्सराओं, किन्नरियों को सिद्ध करने की बात कही गयी है। अप्सराओं का स्थान मंदाकिनी का तट या स्वर्गलोक माना गया है। यह सब वहीं पर स्वच्छंद रूप से विचरण करती है, अठखेलियाँ करती है, वीणा

के मादक स्वरों पर बिजली की तरह लहराती है और अपने स्वामी इन्द्र की आज्ञा का पालन करती है, अनेक अप्सराएँ तो धार्मिक घटनाओं का बहुत बड़ा आधार बन गयी हैं। इस विशाल देश का नामकरण भारत या भरतखंड एक अति लोकप्रिय रूपसी अप्सरा के पुत्र के कारण ही पड़ा। वह अप्सरा थी सौम्य सुसंस्कृत मेनका। मेनका की पुत्री हुई शकुन्तला और शकुन्तला का वीर पुत्र था भरत या भारत··· मेनका का सबसे अलग इतिहास है।

विश्वामित्र ! अद्वितीय व्यक्तित्व सम्पन्न योगी। चौड़ा विशाल वक्ष स्थल, बड़ी-बड़ी तेजस्वी आँखें, उन्नत ललाट साधना से तपा शरीर ऐसे हैं तपस्वी विश्वामित्र।

मेनका, उर्वशी, रंभा, तिलोत्तमा आदि अत्यन्त रूपवती अप्सराएं मानी गयी हैं। विश्वामित्र का तप इसी रूपसी ने भंग किया था। इन अप्सराओं में अपनी शक्ति, अपनी विशेषता होती है। इसी कारण वह असंभव कार्य कर पाती हैं। अतएव तंत्र शास्त्र में इनको भी सिद्ध करने का विधान है। इनको साधक अपनी इच्छानुसार चाहे जिस रूप में सिद्ध कर सकता है।

अप्सरा सिद्धि में सबसे बड़ा कठिन कार्य संयम का है। अगर आपको अप्सरा साधना में अप्सरा सिद्ध हो गयी तो साधक का स्वयं को संभाल पाना अत्यन्त कठिन है। नटखट अप्सरा का रूप लावण्य, उफनता यौवन साधक को विचलित कर सकता है कि सामने आते ही वह अपना संतुलन खो बैठता है। उसके मादक रूप की जगमगाहट विशाल झील सी उसकी कजरारी आंखें देख संतुलन खो बैठता है। उसके मादक रूप की जगमगाहट, विशाल मृगी सी कजरारी आँखें गुलाब

पाँखुरी से पतले रसीले अधर, बदन ऐसा गुलाबी कि मानो महावर दूध में फेंट दिया गया हो, उन्नत किसी मन्दिर के शिवाले के कलश समान कठोर उरोज, विशाल नितम्ब, अत्यन्त क्षीण कटि कि जरा सा बल पड़ते ही साधक का सारा संयम बेतरह चकना चूर···मेनका का एक ही कटाक्ष, हल्की सी मुस्कान, तिरछी नजर चट्टानों तक को डांवाडोल कर डालती है और साधक डोला नहीं कि खेल खत्म। जरा सोचें विश्वामित्र जैसे तपस्वी भी रूपसी मेनका के हाथों छले गये तब साधारण साधक की क्या बिसात ?

मेनका की साधना अत्यन्त जटिल है। बेहद मायावी है, एक तो यह अत्यन्त श्रम करने के उपरान्त प्रकट होती है और यह प्रथम झलक ही साधक को हतप्रभ कर देती है। उसके पास मुक्ति का जो विधान है वह बिसर जाता है। साधक चूका नहीं कि गयी मेनका। यह अन्य सभी अप्सराओं में सबसे अधिक उत्तेजक, रूपवती है, सबसे अधिक यौवनमयी है··· सबसे अधिक सुलक्षणा है। इसने ही विश्वामित्र का तप भंग किया। शकुन्तला को जन्म देने के उपरान्त उसने विश्वामित्र को अपना परिचय देकर अवाक् कर दिया था। अब मैं आपको मेनका साधना का विधान बतला रहा हूं।

यह साधना अधिक से अधिक २१ दिन की है। इसमें शुद्ध स्फटिक की अभिमंत्रित माला आसन के रूप में पीला वस्त्र, हकीक की माला, गीदड़ सिगीं, दो गुलाब की माला, गुलाब जल के साथ-साथ अपना विशेष रक्षा कवच भी रखें। यह साधना शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से प्रारम्भ करें। साधक को चाहिए कि सर्वप्रथम वह ताजे कुएं के जल से स्नान करे तिलक लगावे, गले में गुलाब के फूलों का हार पहिने, कान में और

आस-पास गुलाब जल छिड़के, तत्पश्चात एक माला निम्न आवाहन मंत्र की जपे :—**तत्क्षष्मत्सर्वाप्सरस आगच्छ गच्छ हूँ यः यः ।** जाप के समय साधक का निर्भीक, एकाग्रचित्त और शाँत होना आवश्यक है। मेनका साधना का मंत्र इस प्रकार है। मन्त्र : ॐ **सौंन्दर्यमयी मेनके प्रिये हूं फट ।**

सिद्धि प्राप्त होने पर १८ वर्ष की पूर्ण यौवनमयी सुन्दर श्रृंगार किये मेनका साधक के समक्ष उपस्थित होती है और साधक की सहयोगी, सहचरी बनती है, मेनका के प्रत्यक्ष आने पर साधक को चाहिए वह उसके मायाजाल में न फंसे, वरन् अपने गले की माला उतार कर उसके गले में डाल दे। प्रत्युत्तर में अप्सरा मेनका अपनी कोई भी वस्तु साधक की गोद में फेंक देगी। यही मेनका सिद्धि का संकेत होगा।

मेनका साधना का विधान वर्णित कर दिया गया है। फिर भी मैं शपथ पूर्वक कहता हूं इस साधना को करने वाला विरला ही होता है। यह संयम की सबसे बड़ी सिद्धि है। केवल भाग्यशाली ही इसे अपना सकते हैं। अब यह आप पर है कि इसे आप सिद्ध कर सकते हैं या नहीं। इसका न्यायपूर्ण आकलन तो आपको ही करना होगा।

औघड़ साधना

यह औघड़ साधना मुझे तिब्बत यात्रा के मध्य वहाँ की एक पुजारिन से प्राप्त हुई थी।

हीनू तिब्बती साधिका ने मुझे बतलाया था—कुशोक ! गुरु शब्द सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण शब्द है। जो व्यक्ति हमारे जीवन के अन्धकार को दूर कर आलोकित कर सके वही गुरु है। इस धरती पर केवल तीन गुरु हैं—माता, पिता और गुरु।

पिता विष्णु स्वरूप हैं, वह तो केवल पालन कर्ता हैं, माता ब्रह्मा स्वरूपा हैं, वह जन्म देने के साथ-साथ अनेक दायित्वों का एक साथ निर्वाह करती है। शिव क्या नहीं करते? चिंतन, पालन, संहार इसके साथ ही आत्मा का सृजन भी करते हैं। इसलिये गुरु शिव स्वरूप है। गुरु पूर्णत्व प्रदान करता है। क्या गुरु के अभाव में संस्कार की कल्पना की जा सकती है? हीनू आगे बतलाती है—जन्मना जायते शुद्र संस्कारात् द्विज उच्यते—अर्थात माता पिता तो शूद्र (संस्कार विहीन) को ही जन्म देते हैं, परन्तु गुरु असंस्कारित बालक को लेकर उसका निर्माण करता है। वह शिशु को चैतन्य और निर्मल बना देता है। साधक को गुरु आश्रम में आने के बाद निम्न पाँच बातें अपनानी चाहिएँ—सादा रहन सहन, शाका-हारी भोजन, क्रोध और अहंकार का त्याग, साधना और सदाचारी जीवन।

साधिका हीनू का कथन कितना सत्य है। आप स्वयं अनु-भव करें, गुरु के बाद दूसरा महत्व मंत्र का है। मंत्र कई प्रकार के होते हैं—अघोर मन्त्र, कपाली मन्त्र, ताँत्रिक मन्त्र, शाबर मन्त्र, सामान्य मंत्र, आध्यात्मिक मंत्र। बिना गुरु आदेश के मंत्र जप और नियम व्यर्थ है। साधना में सिद्धि के पाँच तत्व हैं—गुरु से मंत्र प्राप्त करना, गुरु के प्रति समर्पित रहना, श्रद्धावान रहना और गुरु के आदेश का यथा संभव पालन करना। स्मरण रखें—'गुरु से दगा, मित्र से चोरी या हो अन्धा या हो कोढ़ी। साधक के लिए गुरु ही जीवन की पूर्णता है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप अपने-अपने गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हुए साधना मार्ग की ओर अग्रसर होंगे। आप स्वामी विवेकानन्द की इस बात को सदैव ध्यान रखें—

यह ज्ञान तो पक्षियों में भी होता है कि जिस हरे भरे पेड़ की डाल पर वे घौंसला बनाते हैं, पतझड़ आने पर पेड़ सूखकर ठूँठ हो जाने के बावजूद भी वे उस पेड़ को छोड़ते नहीं।

फिर हम तो मनुष्य हैं, जिसे एक बार गुरु कह दिया, विपरीत परिस्थितियों में भी उसे छोड़ना कैसा ? अलग होना कैसा ?

अब मैं आपके समक्ष एक विलक्षण साधना प्रस्तुत कर रहा हूं, वह है—'औघड़ साधना और सिद्धि' यह साधना न केवल चमत्कारी, वरन् अत्यन्त गोपनीय भी है। इस साधना को केवल जीवट वाले साधक ही सम्पन्न कर सकते हैं। मेरा यह कथन सदैव स्मरण रखें इस साधना को केवल योग्य मार्ग निर्देशक के मार्ग निर्देशन में ही करें, अगर आप मेरा यह निर्देश नहीं मानते तब हानि और लाभ दोनों के ही जिम्मेदार आप स्वयं होंगे।

यह साधना शनिवार की अमावस्या को प्रारम्भ करें। किसी मुर्दे की राख लाकर उससे शिवलिंग का निर्माण करें। साधना काल में उसे अपने सामने रखें फिर पश्चिम की ओर मुख करके शिव के तांडव रूप का स्मरण करें। आप ध्यान में देखें भगवान रूद्र का तीसरा नेत्र खुला है। वह चारों तरफ अग्नि वर्षा करते हुए भीषण तांडव कर रहे हैं। उनकी आँखें क्रोध में लाल हैं। हर वस्तु चेतन निर्जीव जो भी हो वह अपने तीसरे नेत्र से भस्म करते जा रहे हैं। वह डमरू के द्वारा सावधान करते हैं और फिर त्रिशूल से संहार करते हैं। यह रूप आपके ध्यान में रहे। काला आसन बिछा कर, रुद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का लगन पूर्वक जाप करें। जाप केवल श्मशान में ही करना है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ वीर भूतनाथाय औघड़ महेश्वराय रक्ष रक्ष हुं हुं फट् ।

इस साधना को ग्यारह रात्रि करें। इस साधना से छोटी मोटी पैशाचिक सिद्धियाँ स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं।

उपरोक्त साधना में संयम, हौंसला और गुरु का ही महत्व है। इनमें से एक भी काम होने पर साधना को स्थगित करदें।

तंत्र और हिजड़े

हिजड़ों का अस्तित्व संसार में कोई नया नहीं है। महाभारत में शिखण्डी और धनुर्धारी अर्जुन वृहन्नला के रूप में इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। पौराणिक काल में उनका अस्तित्व था। मानव जीवन को प्रभावित करने वाले नवग्रह में भी एक नपुंसक ग्रह है। वह ग्रह सौम्य है। ओजस्वी बुध है। अतएव जिस किसी जातक को बुध कष्ट दे रहा हो अगर वह हिजड़े का आशीर्वाद सुने, हिजड़ा उसे दुआएँ दे तो बुध कम हानिकारक होगा। यह प्रमाणित है।

इसी प्रकार शिशु को नजर लग गई हो, या ऐसा बुखार जो घट न रहा हो, हिजड़ा उसे आकर गोद में लेकर, प्यार दुलार करे तो शिशु शीघ्र स्वस्थ हो जायेगा, ऐसा कहा गया है।

पेशाब रुक गया हो तो हिजड़ा उसके पेट पर हाथ फेरेगा तो पेशाब अवश्य होगा।

सूखा, कुत्ता खाँसी से बच्चा ग्रस्त हो तो हिजड़ा अगर उसकी केवल दस मिनट परिचर्या (सेवादि दवाई देना इत्यादि) करे तो बालक अवश्य रोगमुक्त हो जायेगा। ऐसा विश्वास किया जाता है।

प्रत्येक बुध को अगर हिजड़ा (नियम पूर्वक) शिशु को आर्शीवाद देता रहे और अन्नप्राशन तक क्रिया की जाये तो शिशु बड़ा होनहार और भाग्यवान होगा।

जिनके कमर का दर्द (शूल) न जाता हो या अधकुपानी (आधा शीशी) आधा मस्तक का दर्द हो तो हिजड़ा कमर पर धीरे से लात मारे, माथे पर ११ बार हाथ फेरे और भरपूर आर्शीवचन करे तो दर्द मिट जाता है।

इस प्रकार की और भी अनेक सरल क्रियाएँ हैं लेकिन हमने उनमें से कुछ ही दी हैं। यहाँ हमारा उद्देश्य केवल यह बताना है कि हिजड़े भी तंत्र और टोटकों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

तन्त्र में सर्प का प्रयोग

सर्प इस संसार का सबसे रहस्यमय जन्तु माना गया है। विज्ञान और सभ्यता का इतना विकास हो जाने के बाद भी अभी तक यह निश्चित नहीं हो सका है कि सर्प की कितनी किस्में और प्रजातियाँ हैं तथा उसकी आयु क्या है? साथ ही आज भी इस जन्तु के विषय में अनेक भ्रान्तियाँ फैली हैं। सपेरों की बीन पर आकर्षित होकर सर्प का नाचना या बीन बजाने पर निकल आना इस बात का सूचक था कि सर्प संगीत प्रेमी है और बीन की धुन पर मगन होता है, पर वैज्ञानिकों ने खोज की है कि सर्प के तो कान ही नहीं होते। वह अपने पेट के नीचे की त्वचा के जमीन पर स्पर्श के कारण आहटों से काम लेता है। उसकी भूमिका एक अंधे के समान होती है। बीन का आकार प्रकार तथा सपेरे का हाथ नचाना देखकर वह

समझता है कि उसका ही कोई साथी ऐसा कर रहा है, अतः वह भी उसी प्रकार करने लगता है।

सर्प का भारतीय धर्म में और तन्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है। धार्मिक आस्था के अनुसार इस पृथ्वी का सम्पूर्ण भार शेषनाग ने अपने सिर पर उठा रखा है। भगवान विष्णु की शैया ही शेषनाग है। शंकर के गले में सदा विषधर पड़े रहते हैं। और इसी कारण वर्ष में एक बार 'नागपंचमी' का त्योहार बड़ी धूमधाम और श्रद्धा से मनाया जाता है जिसमें नागों की पूजा की जाती है।

सर्प के चार शत्रु माने गए हैं बंदर, नेवला, गरुड़ और मोर। इन पर सर्प के विष का कोई प्रभाव नहीं होता है। सर्प अंडज जाति का माना गया है। इसका सबसे बड़ा रूप अजगर माना गया है यह बहुत विशालकाय होता है। यह एक दिन में केवल ३-४ इंच ही खिसक पाता है। सर्प की यह जाति दक्षिण अफ्रीका में बहुतायत से मिलती है।

सर्प का विष अत्यन्त घातक होता है। इसका विष शरीर में प्रवेश कर रक्त में मिलते ही थक्के बना देता है। फलतः हृदय को जाने वाला रक्त रुक जाता है और दिल की धड़कन बंद होते ही प्राणी का जीवन समाप्त हो जाता है। इस तथ्य का हमारे पूर्वजों को ज्ञान था। इसी कारण सर्प दंश से मृत व्यक्ति का दाह संस्कार या समाधि का नियम धर्म में नहीं है। उसे केले के पत्ते से बाँधकर नदी में प्रवाह का विधान है। नदी का शीतल जल और केले के पत्ते का मिलन यदाकदा रक्त संचार को फिर चालू कर देता है बहते-बहते आदमी जी भी सकता है। इस प्रकार की कुछ घटनाएँ इसका प्रमाण हैं। अतः

भविष्य में जीवन की आशा के कारण सर्पदंश से मृत व्यक्ति का दाह संस्कार या दफनाना वर्जित है।

विषैले साँप शाँत और सहनशील होते हैं, पर विषहीन बड़े ही उपद्रवी और आतंकवादी होते हैं। सर्प का नाम आकार प्रकार ही इस प्रकार भयभीत कर देने वाला है कि विषहीन साँप के काटने पर भयवश-भ्रमवश मनुष्य मर जाता है साँप काटना ही मौत है, यह विश्वास इतना जम गया है कि विषहीन साँप के भी काटे जाने पर मौत हो जाती है।

सर्प का महत्व भारत में ही नहीं, विदेशों में भी है। मिस्र की तो राजपराम्परा में उनके सिंहासनों और मुकुटों में सर्प का चिन्ह राजचिन्ह माना गया है। सर्प पूजा पश्चिम के अनेक देशों में है। सर्प का तन्त्र में भी महत्वपूर्ण स्थान है। सर्प का विष दूर करने, सर्प को भगाने के मंत्र दिये गये हैं। साथ ही सर्प कामना का वोध संकेत भी माना गया है। फ्रायड जैसे यौन वेत्ता भी सर्प को कामवासना का प्रतीक सिद्ध कर चुके हैं।

सर्प विष का इलाज भी संभव हो गया है। तत्काल सहायता मिलने पर व्यक्ति की प्राण रक्षा संभव है।

मंत्र में दिये गये मंत्रों द्वारा सर्पोचार भी संभव है, पर ऐसे लोग अब कहाँ ? जबलपुर (मध्य प्रदेश) में सन् १९५० के आस-पास जग्गू नामक एक मोची था। वह सर्प-विष शर्तिया ठीक करता था। उसके पास कौड़ी थी, जिसे वह आसमान में फेंक देता था। वाद में वही कौड़ियां सर्प के शरीर पर चिपकी होती थीं। इन कौड़ियों के प्रभाव से सर्प आ जाया करता था। वह अपना फन बेतरह पटकता था और विष खींचकर चुपचाप

चला जाता था। जबलपुर के वयोवृद्ध लोगों को आज भी उसकी याद होगी। उल्लेखनीय बात यह है कि जग्गू की मृत्यु के बाद वह कौड़ियाँ लाख ढूँढ़ने पर भी उसके पास से नहीं मिलीं। शायद वह कौड़ियाँ मंत्र सिद्ध थीं, जो उसके साथ ही चली गईं।

सर्प के सम्बन्ध में सैकड़ों कथाएँ हैं। सर्प के "मणि" भी होने की बात कही गई है और सर्प का एक रूप इच्छाधारी भी माना गया है कि चाहे जब वह स्त्री-पुरुष का या अन्य रूप रख सकता है तक्षक राजा परीक्षित को दंश मारना चाहता था। मानव रूप धर कर महामन्त्र विशेषज्ञ तांत्रिक पंडित को उसने द्रव्य देकर वापस कर दिया था। यह वृतांत पौराणिक ग्रंथों में है।

सर्प की आँख की बनावट के आधार पर ही वैज्ञानिक कैमरा बना सके हैं। सर्प को मार डालने पर मारने वाले का चित्र उसकी आँखों में बन जाता है। दूसरा सर्प उसका स्पर्श कर फोटो पा जाता है और उस व्यक्ति को खोजकर प्रतिशोध लेता है। इस प्रकार की भी अनेक घटनाएँ हैं जब साँप प्रतिशोध लेने आया और ताँत्रिक ओझा, गुनिया या सपेरे ने उसे मंत्र सिद्ध करके समाप्त कर दिया।

भारतीय धर्म में नाग प्रमुख माना गया है। विशेषतः इसी की पूजा होती है। हमारे धर्म में कालिया, शेषनाग, कद्रू (सापों की माता) पिलीवा आदि बहुत प्रसिद्ध हैं।

सर्प जमीन में बिना खाये पीये बरसों दबा पड़ा रह सकता है। उसकी विचित्र लीला है। आयु का कुछ पता नहीं चलता, क्योंकि केंचुल छोड़कर वह हर बार नया जीवन प्राप्त कर

लेता है। यह उसका कायाकल्प होता है उम्र के साथ-साथ उसका रंग बदल जाता है। एकदम सफेद रंग का नाग हजारों साल पुराना कहा गया है। यदा-कदा इस प्रकार के नाग प्राचीन खजानों या परिवारों की रक्षा करते हुए देखे गये हैं। सर्प अपना बिल कभी नहीं बनाता है। चूहों द्वारा बनाये गए बिलों पर वह बलपूर्वक अपना अधिकार कर लेता है।

सर्प कितना भी हिंसक, उपद्रवी या विषयुक्त क्यों न हो, वह शिशु को या अबोध बालक को अपना शिकार नहीं बनाता। यह एक आश्चर्य की बात है। आज तक किसी शिशु पर सर्प ने दंश नहीं मारा है। साँप अगर किसी शिशु के सिर पर अपना फन फैला देता है, तो वह राजा अवश्य ही बनता है। यह निश्चय है।

सर्प के भागने की रफ्तार घोड़ा भी नहीं पा सकता है। देखते-देखते वह लापता हो जाता है। साँप की केंचुल को मंत्र सिद्ध कर "गल्ले" में या घर में रखना शुभ माना गया है। साँप की केंचुल से बवासीर, नजर आदि रोग भी दूर होते हैं। साँप की केंचुल तंत्र-मंत्र के भी काम आती है। वास्तव में सर्पों का भारतीय संस्कृति और तंत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। अब मैं सर्प के कुछ प्रयोग लिख रहा हूँ।

▭ साँप की केंचुल कमर में बाँध देने से तीसरे दिन आने वाला ज्वर दूर होता है।

▭ स्त्री के नितम्बों पर सांप की केंचुल बाँध देने से प्रसव सुख पूर्वक होता है।

▭ बवासीर के मस्सों पर साँप की केंचुल बाँध देने से बवासीर के रोग में आराम मिलता है।

- साँप के दाँत ताबीज में डालकर पहिनाने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।
- साँप की केंचुल को कपड़े में भरकर पेड़ू के ऊपर बाँधने से संग्रहणी रोग में लाभ होता है।
- 'ॐ मुनीराज आस्तीक' के जाप से साँप पास नहीं आता है।
- साँप की दाढ़, नेवले के बाल, श्मशान की राख मिलाकर धरती में गाढ़ दें जो भी उस पर से निकलेगा, उसका विद्वेषण हो जायेगा।
- साँप की केंचुल और नेवले के बाल मिलाकर जहाँ भी जलाओगे वहाँ कलह शुरू हो जायेगा।
- साँप की हड्डी का चूर्ण जिस पर भी डाल दोगे वह बीमार हो जायेगा।

इस प्रकार आप साँप का प्रयोग अपनी समस्याओं में कर सकते हैं! अब मैं कुछ यंत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ।

साँप भगाने के लिये

उपरोक्त यन्त्र को किसी भी हरे पत्ते पर केसर से लिखें और उस घर में रखवा दें। वहाँ पर साँप स्वयं ही आना बन्द कर देंगे।

फ़े पता जहाँ से साँप भगाना है।

दूसरा प्रयोग

३१	३८	२	८
७	३	३५	३४
३	३७	३७	३७
४	६	३६	३०

उपरोक्त यन्त्र को भोजपत्र पर कस्तूरी से लिखकर टाँग दें। जहाँ भी यह यन्त्र टंगा होगा। वहाँ पर साँप कभी नहीं आयेंगे और अगर वहाँ होंगे तो धीरे-धीरे भाग जायेंगे। इस यन्त्र को अगर नाग पंचमी के दिन लिखें तो शीघ्रता से अपना प्रभाव दिखलाता है।

साँप भगाने हेतु

निम्न मन्त्र को मिट्टी पर ११ बार पढ़ें और हर बार उस मिट्टी पर फूँक मारते जावें। इसके बाद उस मिट्टी को घर में चारों ओर बिखरा दें।

इस मन्त्र के प्रभाव से उस घर में रहने वाले सारे साँप शनैः शनैः भाग जायेंगे। इस मन्त्र को ग्रहण या होली के अवसर पर सिद्ध अवश्य कर लें।

ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहा अशेष कुल सर्प कुलाय स्वाहा।

सर्प भय नाशक यन्त्र

निम्न यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लिखकर उसका विधिवत

पूजन करें। फिर इस यन्त्र को सर्प भय से ग्रस्त व्यक्ति को पहना देवें। इस यन्त्र के प्रभाव से व्यक्ति सर्प भय से दूर हो जाता है।

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ल	ब	ए	ऐ
औ	औ	अ	अ

बाधा ग्रस्त का नाम लिखें.........

पिता का नाम लिखें...............

तीसरा प्रयोग

३०	२७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	६	१
४	६	६४	६

उपरोक्त यन्त्र को किसी भी शुभ समय में मालकंगनी के रस से भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखें। लिखने के बाद घर में रख दें तो साँप धीरे-धीरे भाग जायेंगे।

———

पशु पक्षी तंत्र

तंत्र एक ऐसा विषय है जिसमें मानव खोपड़ी से लेकर पेड़-पौधों तक और तरंगों से लेकर पशु-पक्षियों तक सबका सफलता के साथ प्रयोग किया गया है। जीव हत्या पाप ही नहीं जघन्य अपराध भी है, तभी तंत्र में ताँत्रिक इस अपराध से दूर रहता हुआ केवल पशु-पक्षी, पेड़ पौधे के कुछ अंश ही प्रयोग में लाता है।

तंत्र में पशु-पक्षियों का उपयोग एक वृहद् विषय है। यहाँ कुछ पंक्तियों में इस विज्ञान को समझा देना कदापि सम्भव नहीं है, फिर भी मैं कुछ पशु-पक्षियों का तंत्र में सफलता पूर्वक उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है—बतलाऊँगा। पशु-पक्षियों के माध्यम से आप भी अपनी अनेक जटिल समस्याएँ सुलझा सकते हैं।

सिंह : इसके दाँत का यंत्र बनाकर बच्चे के गले में डालने से उसके दाँत आसानी से निकलते हैं और जो भी व्यक्ति इसका यंत्र गले में रखेगा उसको दाँत की पीड़ा नहीं होगी।

इसके मस्तक का चर्म जो व्यक्ति पास रखता है उससे सभी भयभीत रहेंगे।

बाघ : इसका मस्तक यदि कबूतरखाने में रखा जाये तो वहाँ बिल्ली नहीं आयेगी।

हाथी : इसके कान का मैल कोई खा ले तो सात दिन तक निद्रा नहीं आयेगी। इसकी लीद ६ माशा लेकर चाँदी के यंत्र में डालकर बालक के गले में डाल दें तो नजर नहीं लगेगी।

इसकी लीद का यंत्र बनाकर जो औरत अपने पास रखे तो उसको गर्भ नहीं रहेगा।

घोड़ा : इसकी पूँछ का बाल कमरे के दरवाजे में लटका दिया जाय तो भीतर मच्छर नहीं होंगे।

जो व्यक्ति रात को दाँत किटकिटाता हो उसके सिरहाने इसका दाँत रख दिया जाए तो उसका दाँत पीसना छूट जायेगा।

अश्विनी नक्षत्र में इसके खुर की धूंनी प्रेत बाधा वाले व्यक्ति को दी जाये तो प्रेत बाधा दूर होती है।

खच्चर : इसके दाँत को जो कोई अपनी जेब में रखे तो उसकी जेब कभी खाली नहीं होगी।

इसके मस्तिष्क का माँस जहाँ पर जलाया जायेगा उस स्थान पर जो भी काम किया जाएगा वह कभी सफल नहीं होगा।

कुत्ता : यदि छोटे बच्चे के गले में इसके दाँत का यंत्र बनाकर डालें तो उसके दाँत आसानी से निकलेंगे।

इसके मूत्र में मिट्टी डालकर गोली बनायें। उसको सुखाकर तिजारी ज्वर वाले के गले में बाँधें तो ज्वर दूर हो जायेगा।

गदहा : इसके खुर को पानी में घोलकर मृगी के रोगी को पिलाया जाय तो पर्याप्त लाभ होता है।

रविवार को जहाँ लेटे उस जगह की धूल, बिना बोले व बिना किसी के टोके ले आए। गुग्गुल की धूनी देकर जिसके मस्तक पर गिराये या घर में गाड़ दे तो उस घर में कलह हो जायेगी।

इसके दाहिने पैर के नाखून की अंगूठी दाहिनी हाथ की अंगुली में पहनने से मिरगी का रोग शाँत होता है।

ऊँट : मूत्र के रोगी की जंघा पर इसके बाल बाँधे तो मूत्र अधिक नहीं आएगा। जो बच्चा रात को बिछौने पर मूत्र कर देता है, उसकी दायीं जंघा पर इसके बाल बाँध देने से रात्रि को मूत्र नहीं करेगा।

ऊँट की चर्बी जिस जगह भी रखेंगे वहाँ सांप कभी नहीं आयेगा।

बकरी : यदि दूध पीने वाला बच्चा रात को रोता है तो उसके सिरहाने इसकी मेंगनी रख दी जाय तो बच्चा रोना बन्द कर आराम से सोयेगा।

पहाड़ी बकरे का सींग सोए हुए व्यक्ति के सिरहाने रखा जाय तो वह अपने मन की समस्त बातें बतला देगा।

बिल्ली : बिल्ली की आँवल (जेर) लेकर यदि कोई अपनी तिजोरी में रख दे तो धन व संतान की अवश्य वृद्धि होगी।

यदि इसके पाखाने का धुंआ भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ति को दिया जाय तो प्रेत बाधा दूर होगी।

यदि किसी स्त्री को ब्लीडिंग हो गई हो तो काली

बिल्ली की तिल्ली का यंत्र बनाकर बांधा जाय तो उसकी ब्लीडिंग बंद हो जाएगी।

यदि इसकी दायीं आँख को अंगूठी में जड़ाकर रखे तो उस पर मंत्र-तंत्र-यंत्र का कोई प्रभाव नहीं होगा।

गीदड़ : इसकी दांयी आँख को यंत्र में डालकर अपने पास रखे तो बल बढ़ता है।

मृग : इसकी बांयी आँख को यंत्र में डालकर जो व्यक्ति अपने पास रखता है उसे औरतें अधिक प्यार करती हैं।

खरगोश : यदि इसके बालों की वत्ती बनाकर स्त्री अपनी योनि में रखे तो उसकी माहवारी बंद हो जाएगी।

लंगूर : इसकी हड्डी कोई अपने पास रखे तो लोग उसे प्यार करेंगे।

बन्दर की हड्डी मंगाकर उसको धूप देकर घर गड़वा दें तो घर की सारी विपत्ति टल जायेगी।

गाय : जिस गाय के सींग मिले हुए हों उनके छिलके, श्वेत-गुंजा के साथ पीसकर मस्तक पर गिराएं वह वश में हो।

मुर्गा : जिस समय दो मुर्गे आपस में लड़ें उस समय उनके जो रक्त निकले उस रक्त को पास में रखें। फिर यदि किसी वस्तु में मिलाकर दो मित्रों को खिला दिया जाय तो उनमें आपस में शत्रुता हो जाएगी।

मोर : इसके मस्तक की कलंगी जो अपने पास रखे लोग उसे प्यार करेंगे।

कौवा : दो मित्रों के बीच में कौवा व उल्लू की आँख का धुंआ दिया जाय तो उनमें आपस में शत्रुता हो जाएगी।

इसके घोंसले को जलाकर भस्म कर लिया जाय। उस भस्म को जिसके मस्तक पर डाला जायेगा, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

चमगादड़ : इसके मस्तिष्क का यंत्र बनाकर कोई पास में रखे तो बल की वृद्धि हो और उसकी सांसारिक इच्छायें बढ़ेंगी।

कबूतर : इसकी दांयी आँख का यंत्र बनाकर या अंगूठी में जड़ा कर अपने पास रखा जाय तो सब लोग उसे प्यार करेंगे।

इसकी विष्ठा में सुहागा समभाग मिला कर शिश्न पर लेप कर सम्भोग करें तो पुत्र हो।

हुदहुद : इसके नाखून में अपने नाखून मिलाकर शुक्ल पक्ष में शुक्रवार में जिस स्त्री को खिलाया जाए वह अत्यन्त प्यार करेगी।

इसके मस्तक को कोई अपने पास रखे तो स्मरण शक्ति बढ़ती है।

बाज : इसकी चोंच लेकर इसके साथ इसके चमड़े पर शत्रु का नाम लिखकर जंगल में गाड़ दें तो शत्रु का नाश हो जायेगा।

मेढक : सोई हुई औरत के सीने पर इसकी जिह्वा रख दी जाय तो वह अपने मन का सारा भेद बतला देगी।

अबाबील : यदि इसके घोंसले की घास को पानी में धोकर उस पानी को प्रसूता स्त्री को दें तो प्रसव पीड़ा दूर हो।

इसका माँस स्त्री को खिला दिया जाय तो उसकी कामेच्छा एकदम दूर हो जाती है। इसकी दायीं आँख को स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर हाथ में डालें तो धन की वृद्धि होती है।

उल्लू : इसका माँस जिसको खिलाया जाय वह परेशान रहेगा। इसकी हड्डी को जलाकर जिसके सिर में वह राख डाल दी जाय वह आवारा फिरता रहेगा। उसका उच्चाटन हो जायेगा।

इसकी जिह्वा को दूध में थोड़ी सी केशर के साथ मिला कर जिस किसी को रविवार को प्रातः पिला दी जाय तो वह व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त करेगा।

इसकी विष्ठा सुपारी के साथ किसी को खिला दी जाय तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगी।

उल्लू का दिल जिस किसी स्त्री के सीने पर रख दोगे वह मन का सारा भेद स्वयं ही बतला देगी।

उल्लू का पंख वशीकरण के काम आता है।

उल्लू की पीठ की हड्डी, केसर, कस्तूरी, कुमकुम, चंदन सबको मिलाकर तिलक करने से सर्वजन वशीकरण संभव है। रविवार के दिन उल्लू का माँस सुखाकर जिसको भी खिलाया जायेगा वह वशीभूत होगा।

उल्लू की विष्ठा सुखाकर जिसको भी रविवार के दिन खिला दोगे वह वशीभूत होगा।

खरगोश : खरगोश के तीखे दाँत को यंत्र में भरकर अपने पास रखे। इसके प्रभाव से स्मरण शक्ति का विकास होगा और बुद्धि बल भी बढ़ेगा।

काली बिल्ली और खरगोश का रक्त समभाग लेकर किसी स्त्री पर डाला जाये तो वशीकरण होता है।

बन्दर : मस्त बन्दर की हड्डी अपने पास रखने से सिर पर आई विपत्ति समाप्त होती है और सुख-शान्ति आती है।

जंगली लंगूर की हड्डी ताबीज में रखने से व्यक्ति विशेष जनप्रिय होता है। हर स्थान पर मान सम्मान पाता है।

मुर्गा : मुर्गे के आमाशय से निकली पथरी यंत्र में भर कर अपने पास रखने से मैथुन शक्ति बढ़ती है। शरीर स्वस्थ भी होता है।

सिंह : शेर के दाँत को बच्चे के गले में डालने से बच्चा चौंकता नहीं है और नजर, टोक आदि का भय भी समाप्त हो जाता है। शेर का दाँत, दंत पीड़ा में भी भरपूर आराम देता है।

हाथी : जंगली हाथी की हड्डी का कोई भी भाग यंत्र में भर कर रखने से मिर्गी और हिस्टीरिया का रोग दूर हो जाता है।

अगर जंगली हाथी के कान का मैल किसी को खिलादे तो वह बेचैन रहता है और अनिद्रा का रोगी बन जाता है।

उल्लू : उल्लू का तंत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। उल्लू तंत्र के अनुसार उल्लू की हर वस्तु तांत्रिक प्रयोगों में सफलता दिलाती है।

वशीकरण के लिए उल्लू की दांयी आँख शुद्ध कस्तूरी में

पीसकर जिस स्त्री पर भी शनिवार के दिन डाल दोगे वह वशीभूत हो जायेगी।

यहाँ मैं स्पष्ट बतला देना चाहता हूं, पशु-पक्षी जहाँ आकाश और धरती की शोभा हैं वहाँ हमें अनेक लाभ परोक्ष रूप में भी देते हैं। इन्हें तनिक से स्वार्थ या अल्प लाभ के लिए मारना, कष्ट देना अक्षम्य पाप है। आप इनसे तांत्रिक लाभ अवश्य उठायें। लेकिन इनकी स्वाभाविक मृत्यु के बाद इससे पहले कदापि नहीं, अन्यथा धरती और नभ की सुन्दरता उजाड़ने की जिम्मेदारी आपकी होगी।

मृत्युभयशमन मृत्युंजय स्तोत्र

ॐ अस्य श्रीसदाशिवस्तोत्रमन्त्रस्य मार्कण्डेयऋषिरनुष्ठप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरीशक्तिः मम समस्त मृत्युशान्त्यर्थं जपे विनियोगः।

ओं रुद्रं पशुपतिं स्थाणुँ नीलकण्ठमुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।१
कालकण्ठ कालमूर्ति कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युःकरिष्यति।२
वामदेवं महादेवं लोकनाथं! जगद्गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किं नोमृत्युः करिष्यति।३

देव देव जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजाम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ।४
गंगाधर महादेव शंकरं शूलपाणिनम् ।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ।५

महामृत्युञ्जय साधना

यह बात उस समय की है जब मैं बहुत छोटा था। हमारे एक परिचित थे उनकी दशा बेहद सोचनीय थी। दवाएँ सारी प्रभावहीन सिद्ध हो रही थीं। सुधार के लक्षण बहुत ही क्षीण थे। हमारे एक परिचित श्री जय भगवान गुप्ता ने दवा के साथ-साथ दुआ का भी परामर्श दिया। उन्होंने हमें महामृत्युञ्जय साधना सम्पन्न कराने का निर्देश दिया। हमने यह साधना सम्पन्न कराई, परिणाम स्वरूप हमारे परिचित स्वस्थ हो गये और उसके बाद वह काफी समय तक जीवित भी रहे। इससे सम्बन्धित एक कथा—जो इसके प्रभाव पर प्रकाश डालती है—

ऋषि मुकुण्ड सन्तान हीन थे। इससे वह बहुत चिंतित थे। मुनि ने भगवान शिव की आराधना की। भगवान रुद्र प्रसन्न हुए और पुत्र प्राप्ति के वरदान देने के साथ यह शर्त भी रख दी कि यदि बुद्धिमान ज्ञानी और चरित्रवान पुत्र चाहते हो तो वह केवल १६ वर्ष की आयु तक ही जीवित रह सकेगा। असुन्दर अज्ञानी और चरित्रहीन पुत्र होने पर पूर्ण आयु को प्राप्त होगा। ऋषि ने सर्वगुण सम्पन्न पुत्र को ही प्राथमिकता दी। शिव ने वरदान दिया और मुनि के यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

पुत्र सर्वगुण सम्पन्न था। उसकी शिक्षा दीक्षा चलती रही अन्ततः वह घड़ी भी आ पहुँची जो भगवान शिव ने बालक की आयु निश्चित की थी। ऋषि व ऋषि पत्नी चिंतित हो गये। पुत्र ने कारण पूछा। मुनि ने उसे पूर्ण विवरण दे दिया पुत्र को अपनी साधना पर अटूट विश्वास था। उसने कहा कि मैं भगवान मृत्युञ्जय आशुतोष को तप से प्रसन्न करूँगा और पूर्ण आयु को प्राप्त करूँगा।

माता-पिता की सहमति से मार्कण्डेय भी विधि पूर्वक साधना करने लगे। शिवलिंग की पूजा के बाद वह श्रद्धा से मृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ करने लगे। शिव प्रसन्न हुए।

वर्ष का अन्तिम दिन आने पर स्वाभाविक रूप से यमदूत उसके प्राणों को लेने के लिए आ गए। मार्कण्डेय ने स्तोत्र को पूर्ण करने का आग्रह किया। काल के गर्व ने ऐसी आज्ञा न दी और वह उसके प्राणों को हरण करने के लिए उद्यत हुए। तब उसको बचाने के लिए स्वयं भगवान रुद्र प्रकट हो गये और काल पर भरपूर प्रहार किया। मार्कण्डेय अपने स्तोत्र का पाठ निरन्तर करते रहे। यमदूत भयभीत होकर चले गये और भगवान शंकर ने स्तोत्र की समाप्ति पर मार्कण्डेय को अमरता का वरदान दिया और तब वे वास्तव में अमर हो गये।

'पद्मपुराण' की इस कथा का वर्णन करते हुए महर्षि वशिष्ठ ने कहा कि मार्कण्डेय रचित इस मृत्युञ्जय स्तोत्र का जो भी व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास से पाठ करता है वह मृत्यु से निर्भय हो जाता है।

अनेकों साधकों के अनुभव से प्रमाणित यह अत्यन्त प्रभावशाली साधना है। रोग निवृत्ति के लिए इसका प्रयोग किया जाता है स्तोत्र इस प्रकार है—

पञ्चपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं
भाललोचनजातपावकदग्धमन्थविग्रहम् ।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्यय
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पङ्कजासनपद्मलोचनपूजिताङ् घ्रिसरोरुहम् ।
देवसिद्धतरंगिकरसिक्तशीतजटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।
कुण्डलीकृतकुडलीश्वरकुण्डल वृषवाहनं
नारदादिमुनीश्वर स्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।
यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंनिवर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।
भक्तवत्सलर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूतपति परात्परमप्रमेयमनूपमम् ।
भूमिवारिनभोहुताशतसोमपालितस्माकृति
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
सहरन्तमथ प्रपन्नमशषलोकनिवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥

रुद्रं पशुपति स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम् ।
नमाभि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

कालकण्ठ कलामूर्ति कालाग्नि कालनाशनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

नीलकण्ठं विरूपाक्ष निर्मलं निरुपद्रवम् ।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगतगुरुम् ।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

देव देवं जगन्नाथं देवशवृषभध्वजाम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधर हरम् ।
नमामि शिरसा देव किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥

त्वगर्गावर्गदातारं सृष्टिस्थत्यन्तकारिणम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥

प्रिय पाठकों ! उपरोक्त स्तोत्र के अतिरिक्त आप निम्न विधि से भी यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं। विधि इस प्रकार है—

संकल्प, विनियोग, करन्यास, हृदयादिन्यास, पदन्यास

ध्यानम् । इस विधि में ध्यान अधिक महत्वपूर्ण है ।

इसके पश्चात महामृत्युञ्जय मंत्र का जाप प्रारम्भ करें । मंत्र निम्न प्रकार है—

ॐ हों ओं जों सा ओं भूर्भुवः स्वाहा । ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् उर्वारूक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात हों ओं जू स औं भूर्भुवः स्वाहा ।

यह तथ्य लगभग स्पष्ट है कि इस विशाल मंत्र में पर्याप्त समय, श्रम और धन लगेगा, अस्तु आप चाहें तो लघु महा-मृत्युञ्जय मंत्र का जप कर यथेष्ठ लाभ प्राप्त कर सकते हैं । मंत्र इस प्रकार है—ॐ **जूँ सः** (नाम जिसके लिये जाप किया जा रहा है) **पालय पालय सः जूं** ॐ ।

उपरोक्त दोनों मंत्रों में से किसी भी एक का अधिक से अधिक कितना भी जाप हो सकता है, लेकिन कम से कम सवा लाख जाप अवश्य करना चाहिये । जप के पश्चात दशांश का हवन अति आवश्यक है, अन्यथा फल प्राप्ति में सन्देह बराबर बना रहता है । जप और हवन के पश्चात अभिमंत्रित जल रोगी को पिला देवें और शेष बचा जल रोगी के कमरे में छिड़क देवें ।

सहृदय पाठकों ! मैंने अपने ज्ञान और अनुसंधान के अनुसार भगवान रुद्र के महामृत्युञ्जय मंत्र का महत्व और प्रभाव उजागर किया है । आज यह तथ्य पूर्णतः प्रमाणित है कि मृत्युतुल्य कष्ट में भगवान रुद्र का जाप ही एक वरदान है ।

जप की समाप्ति के पश्चात अगर समय और सम्भव हो

तो निम्न स्तुति भी एक बार पढ़ें। इसके शुभ प्रभाव से रोगी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करेगा।

महामृत्युञ्जय स्तुति निम्न प्रकार है—

महामृत्युञ्जय स्तुति

नन्दीश्वर उवाच

कलासस्योत्तरे श्रृंगे शुद्धस्फटिकसन्निभे।
तमोगुणविहीने तु जरामृत्युविवर्जिते।१
सर्वार्थसम्पदाधारे सर्वज्ञानकृतालये।
कृताञ्जलिपुटो ब्रह्मा ध्यानासीनं सदाशिवम्।२
प्रपञ्जप्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनि गतिः।
सर्वार्थसम्पदाधारं ब्रह्मलोक पितामहः।३

ब्रह्मोवाच

केनोपायेन देवेश चिरायुर्लोमपोभवेत्।
तक्ष्मे ब्रूहि महेशान लोकानाँ हितकाम्यया।४

श्रीसदाशिव उवाच

शृणु ब्रह्मान् प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनिसत्तमः।
सञ्जातः कर्मणायेन व्याधि मृत्युविवर्जितः।५
यस्मिन्नेकार्णवे घोरे सलिलौघः परिप्लुते।
कृतान्तभयनाशा यस्तुतोमृत्युञ्जयः शिवः।६
तस्य संकीर्तनान्नित्यं मुनिर्मृत्युविवर्जितः।
तमेवकीर्तयन्ब्रह्म मृत्युञ्जेतु न संशयः।७

और अब अन्त में....

इस पुस्तक को आपने आद्योपान्त पढ़ लिया है। अवश्य ही आपकी कुछ राय भी बनी होगी। आप अपनी राय से अवश्य ही अवगत करावें और साथ ही इस बात का भी विशेष ध्यान रखें कि पुस्तक में दिये गये आदेशों, निर्देशों का भली भांति पालन किये बिना आप कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। बिना कठोर परिश्रम, सतत साधना श्रद्धा और विश्वास के कोई भी सिद्धि कभी भी सम्भव नहीं है।

साधना कोई अलौकिक, चमत्कारी शक्ति नहीं है।

सिद्धि कोई ईश्वरीय वरदान नहीं है।

धैर्य, साहस, लगन, समय और निरन्तर साधना तथा कठोर संयम के द्वारा ही यह सब सम्भव है। आदिकाल से यही होता चला आया है। वर्षों की अथक साधना परिश्रम के उपरान्त ही हमारे विद्वान ऋषि मुनि औघड़ अवधूत इसमें सफलता या सिद्धि प्राप्त करते थे। राजर्षि विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि का पद प्राप्त करने के लिये कितनी बार असफल होना पड़ा था ?

तन्त्र वास्तव में एक शुद्ध समय की कसौटी पर परखा गया शुद्ध विज्ञान है। सत्य तो यह है कि यह कोई ईश्वरीय वरदान, अलौकिक शक्ति या रहस्यमयी गोपनीय विद्या नहीं है, वरन् सिद्धान्तों नियमों तथा शुद्ध साधना पर आधारित एक क्रिया

है। हाँ इसके परिणाम अवश्य साधारण व्यक्ति को चमत्कृत करते हैं।

साधना के मध्य यह भी ध्यान रखें कि इस गोपनीय साधना को प्रदर्शन, व्यापार या जीविका का साधन न बनायें। 'बाजही तंत्र' में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि—यश, धन और व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति के लिये जो लोग 'तांत्रिक' बनना चाहते हैं, वह यत्नपूर्वक तांत्रिक तो अवश्य बन सकते हैं, लेकिन उनका अन्त बड़ा ही दुखद और करुण होता है। तंत्र केवल जन हिताय है। इसका उद्देश्य "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" ही है।

योग्य तांत्रिक बनने के लिये आपको हठ, दुराग्रह और कुतर्क छोड़ना पड़ेगा। श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न करना ही होगा। अपने ईष्ट और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव लाना ही होगा, अपनी बात को छोड़कर गुरु की हाँ में हाँ करनी ही होगी। यह सब स्वाभाविक बातें अपने आप में पैदा करें, आप एक दिन सफल तांत्रिक अवश्य बनेंगे यह विश्वास कर, साधना के पथ पर आगे बढ़ें।

आजकल तान्त्रिक अपना रुतबा दिखाने के लिये प्रायः पीड़ित को अपने साधना स्थल पर बुलाते हैं, उनको प्रभावित करने के उद्देश्य से अनेक चमत्कार दिखलाते हैं। इसके पीछे उनका उद्देश्य जनता को प्रभावित करना ही होता है। इस प्रकार वह अपनी महत्ता दिखलाते हैं। आप ऐसा कदापि न करें। आप इस बात का विशेष ध्यान रखें आपके साधना कक्ष में हर व्यक्ति हर समय न आये जाये।

आप यह सूत्र सदैव ध्यान रखें, तन्त्र एक साधना है। एक

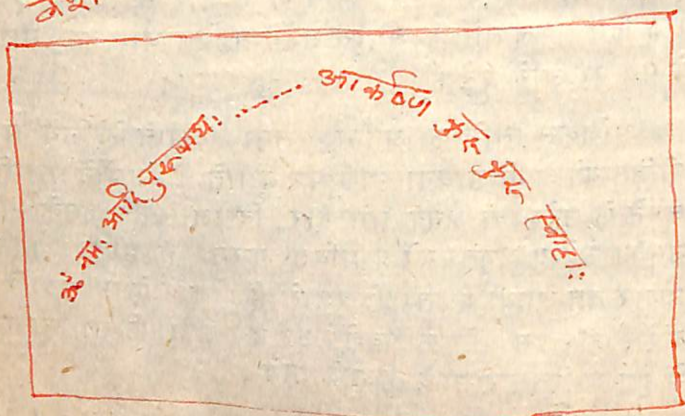
अति गोपनीय विद्या है। जितने गोपनीय ढंग से आप साधना करेंगे उतना ही अच्छा है।

आप पत्र अवश्य ही लिखें। यह विषय बहुत विस्तृत है। साधना भी न केवल जोखिम से भरी है वरन् लम्बी भी है। फिर भी इस छोटे से आकार में मैं अपने प्रयास में कहाँ तक सफल हो सका हूँ। इसका निर्णय तो आप ही करेंगे।

सहृदय पाठकों ! आपके पत्र जहाँ मेरा उत्साह और होंसला बढ़ाते हैं, वहाँ भरपूर मार्ग दर्शन भी करते हैं। आप इस तथ्य को सदैव ध्यान रखें।

तांत्रिक बहल

डी-४ राधापुरी, कृष्णा नगर,
(यमुनापार) देहली-११००५१



श्रीमद् भागवत पुराण

श्रीमद्भागवत ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें भक्ति ज्ञान वैराग्य की पवित्र मंदाकिनी प्रवाहित हो रही है । श्रीमद्-भागवत की कथा जीव का उद्धार करने वाली तथा मोक्ष प्रदान करने वाली है । सम्पूर्ण वेदान्तों के सार रूप श्रीमद्भागवत के रस के अमृत से तृप्त हुए पुरुष की अन्यत्र प्रीति नहीं होती है । श्रीमद्भागवत को जो भक्तजन शुद्ध मन से पढ़ता है वह मनुष्य भवसागर से पार उतरकर परमधाम को प्राप्त होता है ।

हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार

लेखिका—आशा बहन व लाडो बहन

हिन्दू धर्म में व्रत और त्यौहारों का बड़ा महत्त्व है । इसी कारण जितने व्रत और पर्व भारतवर्ष में मनाये जाते हैं शायद ही अन्य किसी और देश में मनाए जाते हों । लेकिन क्या हम इन व्रत और त्यौहारों से भली-भाँति परिचित हैं ? प्रस्तुत पुस्तक में इसी उद्देश्य को पूरा करने के साथ-साथ इसमें परिचय के अतिरिक्त त्यौहारों के विधि-विधान और सम्बन्धित कहानियाँ तथा चित्र भी दिए गए हैं । इसीलिए यह पुस्तक प्रत्येक परिवार के लिए सम्भालकर रखने योग्य भी है ।

अमरनाथ की अमर कहानी

यह अमर कथा माता पार्वती तथा भगवान शंकर का संवाद है । स्वयं भगवान शंकर इस कथा के कहने वाले हैं । इस संवाद का संग्रह भृंगर्षि संहिता, नीलमत पुराण और लावनी ब्रह्मज्ञान से बड़े ही यत्न से किया गया है । यह परम पवित्र कथा लोक व परलोक का सुख देने वाली है । शिवजी द्वारा दिए गए वरदान के अनुसार इस कथा को श्रद्धापूर्वक पढ़ने या सुनने वाला मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करता है ।

अंक ज्योतिष

लेखक—योगीराज यशपाल जी

यह पुस्तक अपने आप में नवीनता संजोए हुए है। अंक ज्योतिष पर अनेकों पुस्तकें देखी होंगी पर अभी तक ऐसी पुस्तक प्रकाशित ही नहीं हुई। इसमें कही गई प्रत्येक बात कड़े परिश्रम तथा अनुभव का निचोड़ है। इसमें भाग्य को अनुकूल बनाने में अनेकों उपाय कहे गए हैं। योगीराज यशपाल जी ने अनेकों पाठकों की आवश्यकताओं को समक्ष रखकर इस पुस्तक का लेखन किया है। इनका कहना है कि इस पुस्तक में की गई सभी बातों के अनुसार विचार और आचरण किया जाए तो भाग्य को अपने आप अनुकूल कर सकते हैं।

श्री दुर्गा स्तुति

(लेखक व गायक—एम. एस. पुण्डीर)

इस पुस्तक में दुर्गा सप्तशती का सम्पूर्ण कविता पाठ, प्रार्थना, स्तुति, कवच, अर्गला स्तोत्र, नवरात्र कथा तथा तारा रानी की कथा और आरतियाँ आदि दी गई हैं।

सचित्र भर्तृहरि शतक

अनुवादक—पं० ज्वाला प्रसाद जी

भारत के इतिहास में महाराजा भर्तृहरि के नाम को कौन नहीं जानता? उन्हीं की यह महान् रचना, जिसमें वैराग्य शतक, नीति शतक व श्रृंगार शतक तीनों को प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक शतक के साथ ८-८ चित्र हैं यानी कुल पुस्तक में दिए गए २४ चित्रों ने इस ग्रन्थ को रोचक भी बना दिया है। प्रत्येक श्लोक के साथ उसका सरल हिन्दी अनुवाद दिया गया है पुस्तक के प्रारम्भ में दी गई भर्तृहरि की जीवनी इसकी एक विशेषता है। बहुत ही सुन्दर छपी और आकर्षक मुखपृष्ठ वाली पुस्तक है।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार



पारिवारिक परम्परा से मन्त्र में रुचि और लगन के कारण इसी विषय की ओर उन्मुख तथा पूर्ण समर्पित श्रीयुत 'तान्त्रिक बहल'। तंत्र सबके लिए उपलब्ध कराने का दृढ़ संकल्प लिए निरन्तर शोधकार्य एवं अध्ययन द्वारा दुर्लभ ग्रन्थों और मन्त्र-तन्त्र विषयक स्वअनुभूत कृतियों का प्रकाशन। विषय को वैज्ञानिक कसौटी पर अनेकों बार परखने के बाद ही उसका समर्थन इनकी विशेषता है। ज्योतिष व मन्त्र-तत्र सम्मेलनों और संस्थाओं द्वारा मानक उपाधियों तथा स्वर्ण पदक से विभूषित 'तांत्रिक बहल' का तंत्र साहित्य के लेखकों में आज प्रमुख स्थान है।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)
श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार-249401